राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

अप्रैल - 2024

मूल्य ₹ 50/-

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

गुड़ी पड़वा महाराष्ट्र का पर्व ...

मराठी लोगों के नव वर्ष की शुरुआत और समृद्धि का प्रतीक है गुड़ी पड़वा

मुख्तार अंसारी दफन...

जुर्म और राजनीति की दुनिया में चलता था मुख्तार अंसारी का सिक्का

चावल चोर पाकिस्तान..

बासमती चावल की अवैध तरीके से खेती और बिक्री कर रहा है पाकिस्तान

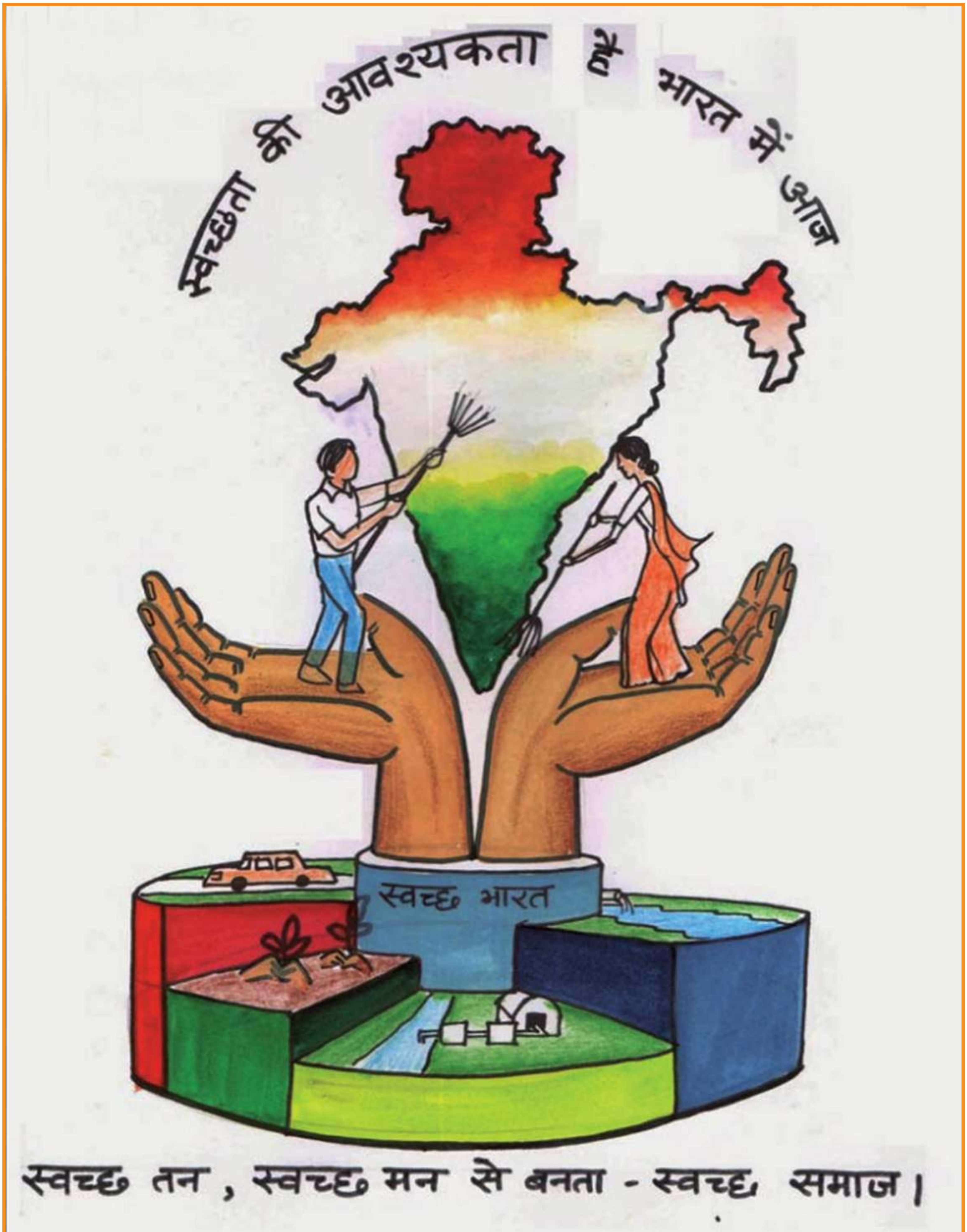
स्वच्छता की आवश्यकता है भारत में आज
स्वच्छ भारत
स्वच्छ तन, स्वच्छ मन से बनता - स्वच्छ समाज।

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

• वर्ष : 9 • अंकः 01 • मुंबई • अप्रैल -2024

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक

नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक

मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक

भाग्यश्री कानडे, तोषिर शुक्ला, संतोष मिश्रा, जेदवी आनंद

ब्यूरो चीफ

ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा

ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट

राजेश अय्यर,शैफाली,

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS., A-102, A-1 Wing , Near Shahad Station , Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in, mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को. ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

भारत का चावल चुराने पर उतर आया पाकिस्तान...	06
जुर्म और राजनीति की दुनिया में चलता था मुख्तार अंसारी का सिक्का...	10
कांग्रेस का तो निकल जाएगा दिवाला!	15
गुड़ी पड़वा महाराष्ट्र का एक महत्वपूर्ण पर्व	16
देश-दुनिया	18
पकवान	20
राशिफल	24
महाराष्ट्र का मिनी गोवाः अलीबाग	26
सिनेमा	28
२०२४ में वे कंधमाल के पुनः सांसद बनकर अपने लोकसेवा के...	30
जरूरत बनते नेब्युलाइजर	34
लड़का भाग्य है , तो कन्या विधाता	37
दोपहर का भोजन	40
होली का मज़ाक	45
ठंडी दीवारें (कथा सागर)	47
सिंघाड़ा की खेती...	56

सुविचारः

संकोच युवाओं के लिए एक आभूषण है, लेकिन बड़ी उम्र के लोगों के लिए धिक्कार.

संपादकीय

कांग्रेस की मंद होती रोशनी ...

देश की सबसे पुरानी एवं मजबूत कांग्रेस पार्टी बिखर चुकी है, पार्टी के कद्दावर, निष्ठाशील एवं मजबूत जमीनी नेता पार्टी छोड़कर अपनी सबसे बड़ी प्रतिद्वंद्वी पार्टी भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो रहे हैं, वह भी तब जब लोकसभा चुनाव सन्निकट है। कांग्रेस नेताओं का यह दलबदल आश्चर्य की बात हैं, पार्टी छोड़ने का जैसा सिलसिला चल रहा है, वह देश के इस सबसे पुराने दल की दयनीय दशा और स्याह भविष्य को ही रेखांकित करता है। हालांकि भाजपा और कुछ अन्य दलों के चंद नेता कांग्रेस की शरण में भी गए हैं, लेकिन इसकी तुलना में उसके नेताओं के पार्टी छोड़ने की संख्या कहीं अधिक है। प्रश्न है एक लोकतांत्रिक संगठन की यह दुर्दशा एवं रसातल में जाने की स्थितियां क्यों बनी? इसके कारणों की समीक्षा एवं आत्म-मंथन जरूरी है। कांग्रेस पार्टी लगातार न केवल हार रही है, बल्कि टूट एवं बिखर रही है, जनाधार कमजोर हो रहा है, इन बड़े कारणों के बावजूद पार्टी के शीर्ष नेतृत्व ने न इसकी समीक्षा की, न विश्लेषण किया। कांग्रेस पर वंशवाद एवं पुत्रमोह का ठप्पा लगा हुआ है। पार्टी में आंतरिक प्रजातंत्र नहीं है। शीर्ष नेतृत्व निर्णय लेने में अक्षम है। बहुसंख्यकों के कल्याण की कोई नीति नहीं है। तुष्टीकरण नीति भी उसके लिए घातक साबित हो रही है। इन बड़े कारणों के बावजूद पार्टी में सन्नाटा पसरे होने के कारण ही अनेक जिम्मेदार एवं कर्णधार नेता ही पार्टी छोड़कर जा रहे हैं या चले गये हैं।

कांग्रेस के नेताओं के कांग्रेस छोड़ने से पार्टी नेतृत्व को हैरान-परेशान होना चाहिए, लेकिन शायद ही ऐसा हो, क्योंकि राहुल गांधी आम तौर पर ऐसे नेताओं को डरपोक या अवसरवादी करार देकर कर्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं। वह और उनके करीबी यह देखने-समझने के लिए तैयार नहीं कि आखिर क्या कारण है कि एक के बाद एक नेता पार्टी छोड़ रहे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री बेअंत सिंह के पोते रवनीत सिंह का भाजपा में जाना इसलिए कांग्रेस के लिए एक बड़ा आघात है, क्योंकि पंजाब उन राज्यों में है, जहां कांग्रेस अपेक्षाकृत मजबूत दिखती है और भाजपा तीसरे-चौथे नंबर के दल के तौर पर देखी जाती है। बात पंजाब ही नहीं, महाराष्ट्र, हिमाचल एवं अन्य प्रांतों की भी ऐसी ही है। इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि कांग्रेस छोड़ने वालों में कई ऐसे नेता भी हैं, जो गांधी परिवार के करीबी माने जाते थे, जैसे अशोक चव्हाण, मिलिंद देवड़ा, सुरेश पचौरी। इसके पहले राहुल गांधी की युवा ब्रिगेड के सदस्य कहे जाने वाले अधिकांश नेता भी कांग्रेस से विदा ले चुके हैं। कांग्रेस छोड़ने वाले नेताओं में एक बड़ी संख्या उनकी है, जो अपना स्वतंत्र राजनीति वर्चस्व एवं पहचान रखते हैं, वे अपने जनाधार के लिए जाने जाते हैं। गांधी परिवार के करीबी एवं चाटुकार नेताओं में बहुत कम ऐसे हैं, जो अपने बलबूते चुनाव जीतने की क्षमता रखते हों।

प्रश्न है कि कांग्रेस की यह दशा क्यों बनी? देश की विविधता, स्वरूप और संस्कृति को बांधे रखकर चलने वाले अतीत के कांग्रेसी नेता, जिनकी मूर्तियों और चित्रों के सामने हम अपना सिर झुकाते हैं, पुष्प अर्पित करते हैं- वे अज्ञानी नहीं थे। उन्होंने अपने खून-पसीने से 'भारत-माँ' के चरण पखारे थे। आज उनकी राष्ट्रीय सोच एवं जनकल्याण की भावना को नकारा जा रहा है, उन्हें 'अदूरदर्शी' कहा जा रहा है। कांग्रेस में धीरे-धीरे जमीनी धरातल पर कार्य करने वाले बड़ी सोच वाले कार्यकर्ता कम हो गए और नेताओं के चापलूस बढ़ गए। ये चापलूस ही आगे बढ़े और कांग्रेस की टूट का कारण बने हैं। वक्त यह सब कुछ देख रहा है और करारा थपड़ भी मार रहा है।

कांग्रेस विश्वसनीय और नैतिक नहीं रही और सत्ता विश्वास एवं नैतिकता के बिना ठहरती नहीं। शेरनी के दूध के लिए सोने का पात्र चाहिए। कांग्रेस अपना राष्ट्रीय दायित्व एवं सांगठनिक जिम्मेदारी राजनीतिक कौशल एवं नैतिकतापूर्ण ढंग से नहीं निभा रही। अंधेरे को कोसने से बेहतर था कि कोई तो पार्टी में एक मोमबत्ती जलाता। रोशनी करने की ताकत निस्तेज होने का ही परिणाम है कि वक्त ने सीख दे दी। इसी का परिणाम है कांग्रेस छोड़ने वाले नेताओं की संख्या तेजी से बढ़ती चली जा रही है, उससे तो यह लगता है कि पार्टी छोड़ो जैसा कोई अभियान चल रहा है। राहुल गांधी भले ही यह दिखाएं कि कांग्रेस नेताओं के जाने से पार्टी की सेहत पर फर्क नहीं पड़ता, लेकिन सच तो यह है अब फर्क पड़ता दिख रहा है। आने वाले लोकसभा चुनाव के परिणाम इस फर्क को और अधिक स्पष्ट कर देंगे। कांग्रेस भले ही यह दिखा रही हो कि वह भाजपा का मुकाबला करने मे समर्थ है, लेकिन यह किसी से छिपा नहीं कि वह अपने नेतृत्व वाले मोर्चे इंडिया महागठबंधन को वैसा आकार नहीं दे सकी, जिसकी आशा की जा रही थी। इसके लिए कांग्रेस अपने अलावा अन्य किसी को दोष नहीं दे सकती।

कांग्रेस पार्टी में शीर्ष नेतृत्व कमजोर हो गया है। वंशवाद, परिवारवाद के कारण कांग्रेस पार्टी दिनोंदिन डूबती जा रही है। पहले कांग्रेस नेताओं के लिए लोककल्याण पहली प्राथमिकता होती थी, लेकिन आज मोदी-विरोध उसकी प्राथमिकता है। मोदी-विरोध के नाम पर वह कभी-कभी राष्ट्र-विरोध करने लगती है, उनकी इस प्राथमिकता में बदलाव आने से भी पार्टी कमजोर हुई हैं। कांग्रेस अपनी तुष्टीकरण की नीति की वजह से भी कमजोर हो रही है। अगर इसमें बदलाव नहीं करती है, तो उसकी हालत बद से बदतर हो जाएगी। इस बात का समझना होगा कि कोई भी दल बहुसंख्यकों को नाराज करके देश पर राज नहीं कर सकता। लोग समझते ही नहीं कि क्या कहा गया है। इसी कारण कई नेता नेपथ्य में चले गये हैं पर आभास यही दिला रहे हैं कि हम मंच पर हैं। कई मंच पर खड़े हैं पर लगता है उन्हें कोई 'प्रोम्प्ट' कर रहा है। बात किसी की है, कह कोई रहा है। इससे तो कठपुतली अच्छी जो अपनी तरफ से कुछ नहीं कहती। जो करवाता है, वही करती है। कठपुतली के अलावा कुछ और होने का वह दावा भी नहीं करती। किसी परिवार में तो यह चल सकता है लेकिन एक राष्ट्रीय दल को ऐसे नहीं चलाया जा सकता। ■

संजय निरुपम कांग्रेस से इस्तीफा देंगे? इस पार्टी में शामिल होने की चल रही बातचीत

मुंबई में उत्तर भारतीय नेताओं का बड़ा चेहरा और कांग्रेस पार्टी के लिए मुखरता से आवाज़ उठाने वाले संजय निरुपम ने आखिरकार बड़ा फैसला लेने का मन बना लिया है. संजय निरुपम गुरुवार ४ अप्रैल को दोपहर १२ बजे मुंबई के अंधेरी इलाके में एक प्रेस कांफ्रेंस को संबोधित कर कांग्रेस पार्टी से इस्तीफ़ा देने की घोषणा करेंगे. कांग्रेस पार्टी से नाता तोड़ने के बाद संजय निरुपम आगे की राजनीतिक भूमिका भी स्पष्ट कर सकते हैं. संजय निरुपम का ये निर्णय लगातार पार्टी द्वारा उनकी बातों और सुझाव को नज़रअंदाज़ करने के बाद आया है.

मुंबई में कांग्रेस प्रदेश कार्यालय तिलक भवन में कांग्रेस कमेटी की बैठक में संजय निरुपम के खिलाफ दो प्रस्ताव पास हुए. महाराष्ट्र कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष नाना पटोले ने कहा, 'स्टार प्रचारक की लिस्ट से संजय निरुपम का नाम हटा दिया गया है. जिस तरह के बयान संजय निरुपम दे रहे हैं, ऐसा लगता है कि उन्होंने सुपारी ली है.' नाना पटोले ने आगे कहा कि पार्टी विरोधी काम करने के लिए संजय निरुपम पर अनुशासन की कार्रवाई हो, इसका निर्णय शाम तक हो जाएगा. निरुपम को कोई नोटिस नहीं दी जाएगी और ऑन दि स्पॉट फैसला होगा. उनको किस पार्टी में जाना है, इसका निर्णय वो लें.

कांग्रेस पार्टी के प्रस्ताव पर सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर जवाब देते हुए संजय निरुपम ने कहा, 'कांग्रेस पार्टी मेरे लिए ज्यादा ऊर्जा और स्टेशनरी नष्ट ना करे. बल्कि अपनी बची कुची ऊर्जा और स्टेशनरी का इस्तेमाल करे, पार्टी को बचाने के लिए करे. वैसे भी पार्टी भीषण आर्थिक संकट के दौर से गुजर रही है. मैंने जो एक हफ्ते की अवधि दी थी, वह आज पूरी हो गई है. कल मैं खुद फैसला ले लूंगा.'

महाराष्ट्र विकास आघाड़ी में जिस तरह शिवसेना उद्धव गुट ने एकतरफा अपने लोकसभा उम्मीदवारों का ऐलान किया, इससे संजय निरुपम नाराज़ हैं. मुंबई साउथ सेंट्रल और मुंबई नॉर्थ वेस्ट सीट पर शिवसेना का उम्मीदवार ज़ाहिर करने से संजय निरुपम ने शिवसेना उद्धव गुट के साथ साथ अपनी पार्टी के नेताओं पर भी निशाना साधा.

मुंबई की उत्तर पश्चिम सीट से संजय निरुपम लोकसभा चुनाव लड़ना चाहते हैं और पिछले ५ साल से संगठन का काम कर रहे हैं. शिवसेना उद्धव गुट ने अमोल कीर्तिकर को उम्मीदवार बनाया है जिन पर कोविड काल में खिचड़ी घोटाले का आरोप है. संजय निरुपम कह चुके हैं कि वो खिचड़ी चोर उम्मीदवार के लिए प्रचार नहीं करेंगे. अब सवाल ये है कि लोकसभा चुनाव प्रचार के बीच संजय निरुपम पार्टी से इस्तीफा देकर कहां जाएंगे?

संजय निरुपम ने इस सवाल पर कहा कि अपनी भूमिका गुरुवार की प्रेस कान्फ्रेंस में बताएंगे. संजय निरुपम ये कह चुके हैं कि मुंबई नॉर्थ वेस्ट सीट से वे चुनाव लड़ेंगे और जीतेंगे. क्योंकि संजय निरुपम

ने कांग्रेस से किनारा कर लिया है और MVA के उम्मीदवार अमोल कीर्तिकर हैं.

ऐसे में संजय निरुपम के सामने बीजेपी और शिवसेना (शिंदे) पार्टी विकल्प हैं. क्योंकि महायुति यानी NDA गठबंधन में ये सीट शिवसेना शिंदे गुट को जा रही है और शिवसेना भी उम्मीदवार की तलाश कर रही है. संजय निरुपम के करीबी बताते हैं कि शिवसेना से सकारात्मक बातचीत जारी है.संजय निरुपम के लिए शिवसेना से जुड़ना घर वापसी जैसा होगा. संजय निरुपम ने अपने राजनीतिक करियर की शुरुआत बाला साहेब ठाकरे के शिष्य के तौर पर शिवसेना से की थी.

महाराष्ट्र की इस सीट को लेकर सत्ताधारी सहयोगियों में तनाव? नारायण राणे ने किया ये बड़ा दावा

केंद्रीय मंत्री नारायण राणे ने मंगलवार को कहा कि बीजेपी को रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग लोकसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ना चाहिए क्योंकि वहां उसका एक महत्वपूर्ण आधार है. राणे ने विश्वास जताया कि अगर पार्टी उन्हें आगामी संसदीय चुनाव में उस सीट से मैदान में उतारती है, तो वह जीत हासिल करेंगे. राणे के बयान के बाद महाराष्ट्र के सत्तारूढ़ सहयोगियों के बीच तनाव बढ़ने की संभावना नजर आ रही है. खासकर एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना जिसकी तरफ से इस सीट पर दावा किया गया है और बीजेपी के बीच. वर्तमान में इस सीट का प्रतिनिधित्व विनायक राउत कर रहे हैं. जो उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिव सेना (यूबीटी) के नेता हैं.

रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग लोकसभा क्षेत्र महाराष्ट्र के दो प्रमुख तटीय जिलों को कवर करता है जो अविभाजित शिवसेना का गढ़ माना जाता रहा है. पार्टी के विभाजन के बाद विनायक राउत ने उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाले गुट का समर्थन किया और उन्हें शिव सेना (यूबीटी) ने इस सीट से टिकट दिया.

वहीं अब शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना ने इस सीट पर अपना दावा पेश किया है. लेकिन बीजेपी ने इस सीट के लिए अब शिवसेना शिंदे पर अपना दबाव बढ़ा दिया है. मीडिया से बातचीत के दौरान नारायण राणे ने कहा कि रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग संसदीय क्षेत्र में बीजेपी का महत्वपूर्ण आधार है और हमें सीट मिलनी चाहिए. अगर बीजेपी मुझे मैदान में उतारती है तो मैं न सिर्फ चुनाव लडूंगा बल्कि सीट भी जरूर जीतूंगा. अब कोई इस खेल को खराब न करे. वहीं राज्य के उद्योग मंत्री उदय सामंत ने विश्वास जताया है कि सत्तारूढ़ शिवसेना रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग निर्वाचन क्षेत्र में २.५ लाख वोटों के अंतर से जीतेगी. शिवसेना इस सीट पर लंबे समय से चुनाव लड़ रही है.

कारोबार

भारत का चावल चुराने पर उतर आया पाकिस्तान...

भारतीय बासमती के बीजों की चोरी कर रहा पाकिस्तान

भारतीय बासमती चावल की करीब ६ किस्मों का नाम बदलकर अवैध तरीके से खेती और बिक्री पाकिस्तान कर रहा है. इन किस्मों को पैदा करने वाले भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई IARI) के वैज्ञानिकों ने पाकिस्तानी फर्मों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है. भारतीय बासमती किस्म पूसा बासमती-११२१ का नाम बदलकर 'पीके ११२१ कायनात' के नाम से पाकिस्तान बेच रहा है. इससे भारतीय चावल निर्यात पर बुरा असर पड़ सकता है. भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई) के वैज्ञानिकों ने अपनी ब्लॉकबस्टर बासमती चावल की कई किस्मों की अवैध तरीके से पाकिस्तान फर्मों के जरिए खेती करने पर नाराजगी जताई है. आईएआरआई के निदेशक एके सिंह ने पाकिस्तान में बेईमान बीज फर्मों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू करने की मांग की है. उन्होंने मांग करते हुए कहा है कि हमारे किसानों और निर्यातकों के हितों की रक्षा की जानी चाहिए.

आईएआरआई के निदेशक के अनुसार IARI की बासमती चावल किस्मों की अवैध बीज बिक्री और खेती पाकिस्तान में पूसा बासमती-११२१ (PB-1121) से शुरू हुई. IARI ने इस किस्म को २००३ में जारी किया था और इसके चावल की लंबाई औसतन ८ मिमी और पकाने पर लगभग २१.५ मिमी तक पहुंच जाती है. भारत की इस किस्म के चावल का पाकिस्तान में नाम बदलकर 'पीके ११२१ एरोमैटिक' के नाम से रजिस्टर किया गया है. जबकि, इसे '११२१ कायनात' बासमती नाम से बेचा जा रहा है. गूगल सर्च में '११२१ कायनात' बासमती उबला चावल कराची स्थित लीला फूड्स और लाहौर और लतीफ राइस मिल्स (प्राइवेट) लिमिटेड के जरिए बिक्री करने के रिजल्ट सामने आए हैं.

भारतीय किस्म पूसा बासमती-११२१ (PB-1121) को नाम बदलकर बेचे जाने का मामला अकेला नहीं है. रिपोर्ट में कहा गया है कि IARI की दूसरी चावल की किस्मों को भी पाकिस्तान उगा रहा है. इनमें २०१० और २०१३ में जारी पूसा बासमती PB-६ (PB-6) और पीबी-१५०९ (PB-१५०९) किस्में शामिल हैं. यह किस्म दूसरी बासमती किस्मों के १३५-१४५ दिनों के मुकाबले ११५-१२० दिनों में तैयार हो जाती है. पाकिस्तान में इस किस्मा का नाम बदलकर 'किसान बासमती' कर दिया गया है और रजिस्टर किया गया है.

कई पाकिस्तान के यूट्यूब वीडियो में नई IARI किस्मों को दिखाया गया है, जिनमें पूसा बासमती-१८४७ (पीबी-१८४७), पीबी-१८८५ और पीबी-१८८६ भी शामिल हैं. वीडियो में हफीजाबाद में अवान राइस मिल्स रिसर्च फार्म, मुल्तान में चादर एग्री फार्म और पंजाब प्रांत के बहावलनगर में नवाब फार्म में उगाया गया है, जो इन तीन किस्मों के मूल ब्रीडर IARI को बताया है.

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक एके सिंह ने कहा कि हमारे द्वारा पैदा की गई सभी किस्मों को भारत के ७ उत्तरी राज्यों को कवर करते हुए बासमती चावल के आधिकारिक रूप से खेती के लिए बीज अधिनियम १९६६ के तहत नोटीफाई किया गया

है. उन्हें पौधों की किस्मों और किसानों के अधिकार संरक्षण अधिनियम २००१ के तहत रजिस्टर किया गया है. यह अधिनियम केवल भारतीय किसानों को संरक्षित, रजिस्टर किस्मों के बीज बोने, बचाने, दोबारा बोने, बेचने की अनुमति देता है. यहां तक कि वे ब्रांडेड पैकेज्ड और लेबल के साथ बीज बेचकर ब्रीडर के अधिकारों का उल्लंघन नहीं कर सकते हैं. उन्होंने कहा कि ऐसे में ये बासमती चावल की 'संरक्षित' किस्में पाकिस्तान में कैसे उगाई जा रही हैं? उत्तर सरल है पाकिस्तानी फर्में अवैध तरीके से यह काम कर रही हैं.

भारत के सबसे बड़े ब्रांडेड बासमती चावल निर्यातक केआरबीएल लिमिटेड के बिजनेस हेड (थोक निर्यात) अक्षय गुप्ता ने के अनुसार पाकिस्तान की मिलों ने हल्का उबालने की सुविधाओं में ज्यादा निवेश नहीं किया है और ज्यादातर सफेद या उबले हुए चावल बनाते हैं. उन्होंने कहा कि उनकी कंपनी पीबी-११२१ का बिजनेस करने वाली और दुनिया के सबसे लंबे चावल के दाने के लिए एक विशेष 'इंडिया गेट क्लासिक' ब्रांड बनाने वाली पहली कंपनी थी. उन्होंने स्वीकार किया कि पाकिस्तान आईएआरआई किस्मों की चोरी कर रहा है जो भविष्य में बड़ा संकट खड़ा कर सकती है. वे हमारे वैज्ञानिकों की रिसर्च और कड़ी मेहनत का शोषण कर रहे हैं. हमें कम से कम दुनिया को बताना चाहिए कि ये हमारी किस्में हैं.

१. वैज्ञानिकों को किस बात की टेंशन?
२. कौन से बासमती की चोरी कर रहा पाकिस्तान?
३. २ साल पहले अधिसूचित बीज भी नहीं छोड़े
४. भारत के लिए क्यों चिंता करने वाली बात?
५. भारत के खजाने पर निगाह
६. भारत कितना एक्सपोर्ट करता है?

दुनिया भर में बदनाम पाकिस्तान अब भारत का चावल चुराने पर उतर आया है. भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा विकसित बासमती की उन्नत किस्म के बीज की चोरी से लेकर अवैध खेती तक कर रहा है. भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान यानी IARI के वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि पाकिस्तान कम से कम भारत द्वारा विकसित बासमती की ६ किस्म की चोरी कर अवैध तरीके से खेती और बिक्री कर रहा है. हाल ही में पाकिस्तान के मुल्तान, बहावलनगर, हाफिजाबाद जैसे इलाकों में काम करने वाली कई बीज कंपनियों ने ऐसे वीडियो जारी किये, जिससे भारत के कृषि वैज्ञानिक टेंशन में हैं.

भारतीय कृषि वैज्ञानिक, IARI (Indian Agricultural Research Institute) द्वारा विकसित बासमती चावल की उन्नत और उच्च उपज वाली किस्मों की पाकिस्तान में कथित बीज चोरी और गैरकानूनी खेती को लेकर टेंशन में हैं. साल २०२३ में करीब २१ लाख हेक्टेयर में सुगंधित बासमती चावल की खेती हुई, जिसमें से ८९% किसानों ने आईएआरआई द्वारा विकसित बासमती की बीज का उपयोग किया. वैरायटी ने पूसा बासमती (पीबी) लेबल से जानी जाने वाली इन किस्मों की देश के ५-५.५ बिलियन डॉलर के वार्षिक बासमती निर्यात में ९०% से अधिक हिस्सेदारी है. पारंपरिक लंबी बासमती की किस्में, जैसे- तारौरी (एचबीसी-१९), देहरादूनी (टाइप-३), सीएसआर-३० और बासमती-३७० - कम उपज देने वाली थीं. प्रति एकड़ मुश्किल से १० क्विंटल धान (भूसी के साथ चावल) का उत्पादन होता था. इनकी नर्सरी, बुआई से कटाई तक १६० दिन का वक्त लग जाता था. जबकि आईएआरआई (IARI) द्वारा विकसित नई किस्में, कम दिनों में अधिक अनाज तो देती ही हैं, इनके पौधों की ऊंचाई भी कम होती है.

IARI (Indian Agricultural Research Institute) ने इस तरह की पहली किस्म - PB-१, १९८९ में व्यावसायिक खेती के लिए जारी की थी. इसकी पैदावार २५-२६ क्विंटल/एकड़ थी और यह १३५-१४० दिनों में पक जाती थी.

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI) इसके बाद लगातार बासमती की नई-नई किस्में डेवलप करता रहा. जैसै २००३ में जारी पीबी-११२१, जो १४०-१४५ दिन में पक जाती है और २०-२१ क्विंटल/एकड़ उपज देती है. इस किस्म के चावल की लंबाई भी लंबाई ८ मिमी तक होती है और पकाने पर २१.५ मिमी तक बढ़ जाती है. इसके बाद पीबी-६ (पीबी-१ और पीबी-११२१ का मिश्रण, २०१० में जारी) और पीबी-१५०९ (२०१३) आए. IARI ने बाद में PB-११२१ (PB-१७१८ और PB-१८८५), PB-१५०९ (PB-१६९२ और PB-१८४७) और PB-6 (PB-१८८६) का और उन्नत संस्कर भी तैयार किया. भारतीय कृषि वैज्ञानिकों के मुताबिक पाकिस्तान लंबे वक्त से भारत का बासमती चुरा रहा है. IARI द्वारा पीबी-११२१ तैयार करने के तीन साल बाद पाकिस्तान ने भी इसे जारी कर दिया और नाम रका PK-११२१ या 'कायनात'. इसी तरह, पीबी-१५०९ को भी किसान बासमती के नाम से पंजीकृत करवा लिया. अब पाकिस्तानी बीज कंपनियों और तथाकथित अनुसंधान फर्मों के जो यूट्यूब वीडियो आए हैं, उनमें नई आईएआरआई किस्मों पर चर्चा की गई है. इसमें पीबी-१८४७, पीबी-१८८५ और पीबी १८८६ शामिल हैं, जिन्हें जनवरी २०२२ में ही भारत के बीज अधिनियम (Seeds Act) के तहत अधिसूचित किया गया था. हाल के सालों में पाकिस्तान के बासमती एक्सपोर्ट में कमी आई है, फिर भी भारतीय बासमती वैरायटी की चोरी चिंता की वजह है. एक्सपर्ट्स कहते हैं कि बासमती चावल मुख्य तौर पर भारत और पाकिस्तान में उगाया जाता हैय पाकिस्तान मुख्य रूप से सुपर बासमती का निर्यात करता है, जो लाहौर के पास काला शाह काकू में चावल अनुसंधान संस्थान द्वारा पैदा की गई एक उच्च उपज वाली किस्म (आईएआरआई के पीबी -१ जैसी) है. १९९६ में जारी इस किस्म ने पाकिस्तान को भूरे (बिना पॉलिश/भूसी) बासमती चावल के लिए यूरोपीय संघ-यूनाइटेड किंगडम बाजार में ६६-७०% हिस्सेदारी हासिल करने में मदद की है. सितंबर २०२३ तक यह हिस्सेदारी बढ़कर ८५% हो गई.

दूसरी तरफ, भारत- सऊदी अरब, ईरान, इराक, संयुक्त अरब अमीरात और अन्य पश्चिम एशियाई देशों में सबसे बड़ा निर्यातक है, क्योंकि भारत ज्यादातर उबला बासमती राइस (PaRoiled Basmati Rice) सप्लाई करता है जो वहां के उपभोक्ता खासा पसंद करते हैं. पहले धान को पानी में भिगोया जाता है और कुटाई से पहले हल्का उबाला जाता है, इस तरह ये तैयार होता है. इसके दाने सख्त होते हैं और नियमित सफेद चावल की तुलना में लंबे समय तक पकाने के बावजूद टूटने की संभावना कम होती है. लेकिन पाकिस्तान की मिलें तेजी से परबॉइलिंग तकनीक को अपना रही हैं और इसके किसान बेहतर आईएआरआई बासमती किस्मों को लगा रहे हैं, जो आगे चलकर भारत के लिए बड़ी चुनौती बन सकता है और राइस मार्केट को चुनौती दे सकता है.

इस पूरे विवाद को समझने से पहले जरा भारत के चावल निर्यात के हालिया आंकड़ों पर नजर डाल लेते हैं. अप्रैल-जनवरी २०२२-२३ में जहां भारत ने ३७१.१ बिलियन डॉलर का चावल निर्यात किया तो वहीं अप्रैल-जनवरी २०२३-२४ में ३५३.६ बिलियन डालर का. यानी भारत का कुल व्यापारिक निर्यात ५% कम हो गया. लेकिन इसी अवधि में बासमती चावल के निर्यात में अच्छा-खास उछाल देखा गया. अप्रैल-जनवरी २०२२-२३ के मुकाबले, अप्रैल-जनवरी २०२३-२४ में करीब १२.३% अधिक बासमती चावल निर्यात किया गया.

भारत में किस क्षेत्र में होती है सबसे ज्यादा बासमती की बुआई...

बासमती चावल के ज्योग्राफिकल इंडिकेशन (Protected GI) टैग के मुद्दे पर भारत और पाकिस्तान में खींचतान चल रही है. गौरतलब है कि भारत ने यूरोपियन यूनियन (European Union) में बासमती चावल के ज्योग्राफिकल इंडिकेशन (Geographical Indication) के लिए आवेदन किया है. वहीं पाकिस्तान को भारत का यह कदम नागवार है और वह यूरोपीय कमीशन में भारत के इस आवेदन का विरोध कर रहा है. भारत और पाकिस्तान के बीच चल रहे खींचतान के बीच जानने की कोशिश करते हैं कि भारत में बासमती की कौन-कौन सी वैरायटी है और किस वैरायटी का एक्सपोर्ट किया जाता है. बता दें कि भारत में पंजाब और हरियाणा में बासमती धान की सबसे ज्यादा बुआई होती है और उसमें भी पंजाब में पूरे देश में सबसे ज्यादा बासमती चावल का उत्पादन होता है.

पूसा बासमती-११२१

पूसा बासमती की ११२१ किस्म को २००५ में रिलीज किया गया था. इस चावल की सबसे बड़ी खासियत इसका लंबा होना है. जानकारी के मुताबिक ११२१ चावल का साइज १२ एमएम से भी ज्यादा है. जानकारी के मुताबिक चावल एक्सपोर्ट (Rice Export) में ११२१ चावल की हिस्सेदारी सबसे ज्यादा है. ११२१ धान की औसत पैदावार ४५ क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि ६० क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक अधिकतम पैदावार हो सकती है. जानकारी के मुताबिक ११२१ धान में सुधार करके नई किस्म पूसा बासमती १७१८ आई है. नई किस्म में बीएलबी (बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट) नामक बीमारी नहीं लगती है. हालांकि बाकी सभी खासियत एक जैसी ही है.

पूसा बासमती १५०९

पूसा बासमती १५०९ किस्म सात से आठ साल पुरानी है. १५०९ धान को बहुत कम समय में पैदा किया जा सकता है. इसके पैदावार में बुआई से लेकर कटाई तक ११०-११५ दिन का समय लगता है. १५०९ का औसत उत्पादन ५० क्विंटल प्रति हेक्टेयर है. हालांकि अधिकत ६५ क्विंटल तक उत्पादन किया जा सकता है. कम अवधि में पैदा होने की वजह से यह धान किसानों के लिए काफी फायदेमंद है. पंजाब, हरियाणा, यूपी, हिमाचल और उत्तराखंड में बुआई के लिए १५०९ एक अच्छी किस्म मानी जाती है.

पूसा बासमती-१६३७

पूसा बासमती-१६३७ करीब २ साल पुरानी किस्म है. इस किस्म को यूरोप और अमेरिका में काफी पसंद किया जाता है. दरअसल, इस किस्म में कम बीमारी लगती है इसलिए कीटनाशक का इस्तेमाल भी बहुत कम होता है. पूसा बासमती-१६३७ की बुआई से लेकर कटाई तक १४० दिन का समय लगता है. इस धान की औसत पैदावार ४५ से ५० क्विंटल प्रति हेक्टेयर है. इसके अलावा पूसा बासमती ६ (पूसा १४०१), पूसा १४६०, सुगंधा बासमती और पूसा बासमती १ बासमती की बेहतरीन किस्में हैं.

पाकिस्तान में जल्दबाजी में जीआई रजिस्ट्री बनाई

जानकारों का कहना है कि भारत के बासमती चावल को जीआई टैग मिलने पर पाकिस्तान को यूरोपीय देशों में पाकिस्तानी बासमती चावल के लिए दरवाजे बंद होने का खतरा लग रहा है. यही वजह है कि वह भारत के जीआई टैग के दावे का विरोध कर रहा है. मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इस समस्या के समाधान के लिए पाकिस्तान ने अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपनी स्थिति मजबूत करने के इरादे से जल्दबाजी में एक जीआई रजिस्ट्री भी बनाई और जनवरी २०२१ में ज्योग्राफिकल इंडिकेशन एक्ट, २०२० के तहत पाकिस्तान में जीआई टैग हासिल कर लिया. मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक पाकिस्तान ने यह कदम अपने यहां पैदा होने वाली बासमती चावल का जीआई रजिस्ट्रेशन यूरोपीय यूनियन में करवाने के लिए उठाया था.

२०१५ में भारत ने अपने देश में करा लिया था जीआई रजिस्ट्रेशन

जानकारों का कहना है कि किसी भी देश को दूसरे देश में जीआई के रूप में रजिस्टर्ड कराने के लिए उसे सबसे पहले अपने देश में जीआई रजिस्ट्रेशन लेना होगा. बता दें कि २०१५ में भारत ने अपने देश में बासमती चावल का जीआई रजिस्ट्रेशन करा लिया था. वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान ने ऐसा कोई भी कदम नहीं उठाया और वह बगैर जीआई टैग के ही बासमती चावल की बिक्री करता रहा, जिसकी वजह से दूसरे देशों में भारतीय बासमती चावल के मुकाबले पाकिस्तान के बासमती को कारोबार के मोर्चे पर काफी नुकसान उठाना पड़ा. जानकार कहते हैं कि इन सब वजहों से मध्यपूर्व के ज्यादातर मुस्लिम देश भी भारत की बासमती चावल को ही पसंद करते हैं.

जुर्म और राजनीति की दुनिया में चलता था मुख्तार अंसारी का सिक्का...

मुख्तार अंसारी दफन, पत्नी अफशां फरार; करतूत ऐसी कि आखिरी बार भी नहीं कर पाई पति का दीदार

गैंगस्टर से नेता बने मुख्तार अंसारी को उत्तर प्रदेश के गाज़ीपुर जिले में स्थित मोहम्मदाबाद में उनके पैतृक काली बाग कब्रिस्तान में दफनाया गया। उत्तर प्रदेश के माफिया डॉन मुख्तार अंसारी की गुरुवार को हार्ट अटैक से मौत हो गई थी। बांदा मेडिकल कॉलेज में मुख्तार अंसारी का पोस्टमार्टम पूरा होने के बाद शनिवार ३० मार्च को गाज़ीपुर में उसे सुपुर्द-ए-खाक किया। पोस्टमार्टम के बाद मुख्तार अंसारी के बेटे उमर अंसारी को सौंपा गया था। अंतिम नमाज में शामिल होने के लिए मुख्तार का बेटा ओसामा भी पहुंचा है। वही मौत के बाद ना सिर्फ गाजीपुर और बांदा बल्कि पूरे राज्य में हाई अलर्ट है। पुलिस के अलावा २५ डिप्टी एसपी, १५ एडिशनल एसपी, ३०० सब-इंस्पेक्टर, १५० इंस्पेक्टर और १० आईपीएस रैंक के अधिकारी भी सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने में जुटे हुए है। सुरक्षा के लिए २५ एसडीएम, एडीजी जोन, आईजी, डीआईजी, डीएम, सीडीओ भी तैनात है। उत्तर प्रदेश पुलिस के ५००० हजार जवान और ५००० होम गार्ड भी सुरक्षा के लिहाज से तैनात किए गए है।

मुख्तार अंसारी के जनाजे के द्वारा कब्रिस्तान में सिर्फ परिवार के लोग ही मौजूद रहेंगे। पुलिस प्रशासन ने परिवार के अलावा किसी अन्य के कब्रिस्तान में जाने पर रोक लगाई है। बता दे की पुलिस प्रशासन ने यह निर्देश जारी किया है कि परिवार के अलावा कब्रिस्तान में कोई और व्यक्ति मौजूद नहीं रहेगा। मौके पर पुलिस ने भारी फोर्स लगाई है। कब्रिस्तान जाने के सभी रास्तों को ब्लॉक कर दिया गया है। बता दें कि मुख्तार अंसारी के घर के बाहर भी लोगों की भारी भीड़ मौजूद रही। भारी संख्या में लोगों का जमावड़ा यहां लगा रहा। मुख्तार अंसारी के घर के बाहर कई लोग मुख्तार अंसारी जिंदाबाद के नारे लगाते थे। इतिहास के दौर पर पुलिस बल तैनात है और सुरक्षा की भी करें इंतजाम किए गए हैं। मुख्तार अंसारी का गुरुवार को दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। उनके अंतिम संस्कार में भाग लेने के लिए हज़ारों लोग इकट्ठा हुए और ग़ाज़ीपुर में उनकी अंतिम यात्रा में शामिल हुए। भीड़भाड़ से बचने और शांति बनाए रखने के लिए पुलिस द्वारा नियमित घोषणा के बावजूद, वहां एकत्र लोग तितर-बितर नहीं हुए और कब्रिस्तान की ओर चलते रहे।

उनके अंतिम संस्कार के मद्देनजर, उनके घर से

दबंग छवि को लेकर पूर्वांचल की राजनीति का बादशाह बने मुख्तार अंसारी विहिप अंतरराष्ट्रीय कोषाध्यक्ष नंदकिशोर रूंगटा अपहरण और हत्याकांड के बाद जयराम की दुनिया का सिरमौर बना था। मुख्तार अंसारी अपने छात्र जीवन से ही काफी दबंग युवा माना जाता रहा। ३० जून १९६३ को गाजीपुर जिले के मोहम्मदाबाद में सुबहानउल्लाह अंसारी और बेगम राबिया के घर जन्में मुख्तार अंसारी तीन भाईयों में सबसे छोटा था। मुख्तार अंसारी दबंगई करते हुए कब अपराधिक जीवन में पहुंचा, इसकी खबर दुनिया को तब लगी जब वह अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा पूरी करने के लिए चुनाव लड़ने का निर्णय लिया। तब उसे पैसे की दरकार हुई जिसकी पूर्ति करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से जनवरी १९९७ में मुख्तार अंसारी ने नंदकिशोर रुंगटा जो उस समय विश्व हिंदू परिषद के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष थे, का अपहरण उनके आवास से कर लिया। उनको छोड़ने की आवाज में तीन करोड रुपए फिरौती के रूप में मांगी गई जो उसे समय की काफी बड़ी रकम हुआ करती थी।

मोहम्मदबाद कब्रिस्तान तक जाने वाले मार्ग पर कई पुलिस कर्मियों को तैनात किया गया था, जहां उनका अंतिम संस्कार किया गया था। कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए कब्रिस्तान के बाहर पुलिस तैनात की गई थी, क्योंकि लोग अंसारी को श्रद्धांजलि देने के लिए साइट पर एकत्र हुए थे। जिलाधिकारी गाज़ीपुर आर्यका अखौरी ने कहा, 'तैयारियाँ पूरी हो चुकी हैं। उनके घर से कब्रिस्तान तक जाने वाले ६०० मीटर के रास्ते पर पुलिस तैनात कर दी गई है। लोगों की गतिविधियों पर नज़र रखी जा रही है। अंतिम संस्कार शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न होगा।'

डीआईजी वाराणसी ओपी सिंह से जब अंसारी के अंतिम संस्कार की तैयारियों के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा, 'हर कोने पर पर्याप्त बल तैनात किया गया है। हम उनके (मुख्तार अंसारी के) परिवार के सदस्यों के साथ भी समन्वय कर रहे हैं।' उनके अंतिम संस्कार में परिवार, करीबी रिश्तेदार और अन्य लोग शामिल हुए जिन्होंने अंतिम संस्कार में भाग लिया। इसके अतिरिक्त मिट्टी फेंकने वाले लोग भी उपस्थित लोगों की सूची में थे। मिट्टी फेंकना अपने प्रियजनों को सम्मान देने और अंतिम विदाई देने का एक तरीका माना जाता है। बांदा के रानी दुर्गावती मेडिकल कॉलेज में पोस्टमॉर्टम किए जाने के बाद, ६३ वर्षीय गैंगस्टर के शव को कड़ी सुरक्षा और भारी पुलिस तैनाती के बीच शुक्रवार रात गाजीपुर में उनके आवास पर ले जाया गया।

पोस्टमॉर्टम से पुष्टि हुई कि दिल का दौरा पड़ने से हुई थी मुख्तार की मौत : सूत्र

गैंगस्टर-राजनेता मुख्तार अंसारी के पोस्टमॉर्टम से इस बात की पुष्टि हुई है कि उसकी मौत दिल का दौरा पड़ने से हुई। अस्पताल के सूत्रों ने यह जानकारी दी। ६० से अधिक मामलों में आरोपी मुख्तार अंसारी बांदा जेल में बंद था, बृहस्पतिवार रात तबियत खराब होने के कारण उसे जेल से रानी दुर्गावती मेडिकल कॉलेज ले जाया गया था, जहां देर रात दिल का दौरा पड़ने से उसकी मौत हो गई थी।

मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य सुनील कौशल ने 'पीटीआई-भाषा' से फोन पर कहा था, मेडिकल कॉलेज में दिल का दौरा पड़ने से अंसारी की मौत हो गई।'' अस्पताल के एक वरिष्ठ सूत्र, जो शुक्रवार को पोस्टमॉर्टम के दौरान मौजूद थे ने नाम न छापने की शर्त पर 'पीटीआई-भाषा' को बताया, मुख्तार अंसारी की मौत का कारण दिल का दौरा (मायोकार्डिअल इन्फार्क्शन) पाया गया। उन्होंने पोस्टमार्टम के आधार पर परिवार के सदस्यों द्वारा मुख्तार अंसारी को धीमा जहर देने के आरोपों का खंडन किया। रानी दुर्गावती मेडिकल कॉलेज में पांच डॉक्टरों के एक पैनल द्वारा शव का पोस्टमार्टम किया गया, जब पोस्टमार्टम किया गया तो मुख्तार अंसारी का छोटा बेटा उमर अंसारी पोस्टमार्टम हाउस के अंदर मौजूद था। पोस्टमार्टम के बाद शुक्रवार शाम भारी सुरक्षा के बीच मुख्तार अंसारी का शव गाजीपुर के लिए रवाना हुआ। परिजनों के मुताबिक अंतिम संस्कार शनिवार सुबह गाजीपुर के मोहम्मदाबाद में किया जाएगा। गाजीपुर के मोहम्मदाबाद विधानसभा सीट से समाजवादी पार्टी के विधायक मोहम्मद सुहैब अंसारी ने बताया कि उनके चचा मुख्तार अंसारी को शनिवार सुबह १० बजे यूसूफपुर मोहम्मदाबाद (गाज़ीपुर) के काली बाग कब्रिस्तान में दफनाया जायेगा।

मुख्तार ने अपराध की दुनिया के रास्ते बनाई अकूत दौलत

माफिया मुख्तार अंसारी की मौत के बाद कई तरह की चर्चाओं का बाजार गर्म है. इसमें मुख्तार की संपत्ति को लेकर भी कई तरह बातें कही जा रही है. असल बात यह है कि मुख्तार ने अपराध की दुनिया के रास्ते अकूत दौलत बनाई थी. हकीकत यह है कि मुख्तार अंसारी ने गाजीपुर, मऊ से लेकर लखनऊ, दिल्ली तक बेशुमार संपत्तियां बनाईं, लेकिन हैरान करने वाली बात यह है कि जो मुख्तार लाखों करोड़ों का मालिक था. उसके पास सिर्फ एक बैंक खाता था, जबकि उसकी पत्नी के तीन तीन बैंकों में खाते थे.

मुख्तार अंसारी ने अपना आखिरी विधानसभा चुनाव वर्ष २०१७ में लड़ा था. उस समय दिए गए हलफनामे में मुख्तार असांरी ने बताया था कि उसका सिर्फ एक बैंक अकाउंट है, जबकि उसकी पत्नी के खाते तीन बैंकों में हैं. मुख्तार ने अपना खाता एसबीआई में खोल रखा था, जबकि पत्नी के खाते एसबीआई के साथ साथ स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक और एचडीएफसी बैंक में भी थे. इसी तरह अपने हलफनामे में उसने बताया था कि उसके बच्चों के खाते आईसीआईसीआई बैंक और ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स में हैं.

चुनावी हलफनामे के मुताबिक मुख्तार और उसकी पत्नी के पास संयुक्त रूप से ३.२३ करोड़ रुपये की कृषि भूमि थी, तो ४.९० करोड़ रुपये की गैर कृषि भूमि थी. इसके अलावा २०१७ में दिए गए ब्यौरे के अनुसार गाजीपुर से लखनऊ तक उसकी कई कॉमर्शियल बिल्डिंग्स होने की बात कही गई थी, जिनकी कीमत उस समय १२.४५ करोड़ रुपये बताई गई थी. इसके अलावा दूसरी कई अन्य प्रॉपर्टीज के बारे में भी बताया गया था, जिनकी कीमत १.७० करोड़ रुपये थी. मुख्तार ने तब अपने हलफनामे में बताया था कि उसके परिवार के पास कुल ७२ लाख रुपये का सोना है.

अभी सिर्फ सरकारी एजेंसियों के आंकड़े ही मानें तो २०२० तक मुख्तार की ६०८ करोड़ रुपये से अधिक की संपत्तियों को या तो जब्त किया जा चुका था या ध्वस्त किया गया, जबकि चुनावी हलफनामे में उसने सिर्फ २१.८८ करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति का दावा किया था. बता दें कि मुख्तार ने अपना आखिरी चुनाव जेल से ही लड़ा और जीत भी दर्ज की. इस तरह वह कुल ५ बार विधायक भी रहा, उसके पास २७ लाख से अधिक कीमत के रिवॉल्वर बंदूक और हथियार भी थे. मुख्तार पर हत्या से लेकर कई मामले दर्ज थे. उस पर कुल ६५ आपराधिक मुकदमे अलग अलग धाराओं में दर्ज थे.

तीन दशक से अधिक समय तक जरायम की दुनिया में हुकूमत करने माफिया सरगना मुख्तार अंसारी की तूती पूर्वांचल की राजनीति में भी सिर चढ़ कर बोलती थी। मऊ जिले में सदर विधानसभा के पूर्व विधायक रहे मुख्तार की गुरुवार को बांदा के सरकारी अस्पताल में हृदयाघात से मृत्यु हो गयी थी। गाजीपुर के यूसूफपुर मोहम्मदाबाद निवासी माफिया पिछले करीब तीन साल से बांदा जेल में निरुद्ध था।अंसारी की मौत के बाद उसके राजनीतिक क्षेत्र मऊ और गृह जिले गाजीपुर में ऐहतियात के तौर पर अलर्ट घोषित कर दिया गया है। मुख्तार का अंतिम संस्कार आज यूसुफपुर मोहम्मदाबाद स्थित उसके पैतृक शमशान कब्रिस्तान में किया जायेगा।

किसी जमाने में महात्मा गांधी के करीबी रहे मुख्तार अंसारी के दादा मुख्तार अहमद अंसारी कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रहे, वहीं मुख्तार के नाना ब्रिगेडियर उस्मान महावीर चक्र वजिता रहे। मुख्तार अंसारी के पिता भी अपने समय के बड़े वामपंथी नेताओं में शुमार रहे। दबंग छवि को लेकर पूर्वांचल की राजनीति का बादशाह बने मुख्तार अंसारी विहिप अंतरराष्ट्रीय कोषाध्यक्ष नंदकिशोर रूंगटा अपहरण और हत्याकांड के बाद जयराम की दुनिया का सिरमौर बना था। मुख्तार अंसारी अपने छात्र जीवन से ही काफी दबंग युवा माना जाता रहा। ३० जून १९६३ को गाजीपुर जिले के मोहम्मदाबाद में सुबहानउल्लाह अंसारी और बेगम राबिया के घर जन्में मुख्तार अंसारी तीन भाईयों में सबसे छोटा था। मुख्तार अंसारी दबंगई करते हुए कब अपराधिक जीवन में पहुंचा, इसकी खबर दुनिया को तब लगी जब वह अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा पूरी करने के लिए चुनाव लड़ने का निर्णय लिया। तब उसे पैसे की दरकार हुई जिसकी पूर्ति करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से जनवरी १९९७ में मुख्तार अंसारी ने नंदकिशोर रुंगटा जो उस समय विश्व हिंदू परिषद के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष थे, का अपहरण उनके आवास से कर लिया। उनको छोड़ने की आवाज में तीन करोड रुपए फिरौती के रूप में मांगी गई जो उसे समय की काफी बड़ी रकम हुआ करती थी।

बताते हैं की रकम प्राप्त होने के बाद भी नंदकिशोर रुंगटा को मारकर शव गायब कर दिया गया जो आज तक प्राप्त नहीं हो सका। इस घटना के बाद मुख्तार अंसारी अपराध जगत का एक नया स्तंभ बनकर उभरा। उसके बाद मुख्तार अंसारी मऊ से चुनाव ल ड़कर विधायक बना जो लगातार विधायक का चुनाव जीतता रहा। इस दौरान मुख्तार अंसारी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के कद्दावर नेता मोहन मुरली मनोहर जोशी के खिलाफ वाराणसी संसदीय क्षेत्र से

लोकसभा का चुनाव भी लड़ा जो काफी कम मतों से पराजित हुआ। इस दौरान मुख्तार अंसारी पूरे पूर्वांचल में माफिया जगत का बादशाह बन गया था। कोयला व्यवसाय से लेकर सरकारी ठेकों में मुख्तार अंसारी की इजाजत के बिना कोई कार्य संभव नहीं हो पता था। यहां तक की मऊ जनपद में पीडब्ल्यूडी व अन्य सरकारी ठेकों के वितरण का काम मुख्तार अंसारी ही देखता रहा। अपराध जगत में साम्राज्य बढ़ता गया और लगातार अपराधिक घटनाएं भी बढ़ती गई। दर्जन भर से अधिक हत्याएं हुई जिसमें सीधे-सीधे परोक्ष से अपरोक्ष रूप से मुख्तार अंसारी का ही नाम आया।

२००५ में मऊ में हुए दंगों में खुली जिप्सी के ऊपर मुख्तार का लहराता वीडियो उसके द्वारा की जा रही अपील एक अलग ही हवा खड़ा करता नजर आया। २००५ में ही गाजीपुर के मोहम्मदाबाद विधानसभा क्षेत्र से तत्कालीन विधायक कृष्णानंद राय की उनके सात साथियों समेत गोली मारकर हत्या की गयी। इस हत्याकांड में ४०० से अधिक राउंड गोली चले थे। इस तरह से देखें तो एक दबंग छवि का युवक मुख्तार अपराधिक जगत का बादशाह बन गया था। इतना ही नहीं वह अपनी व्यवस्थाओं के चलते पूर्वांचल की आधा दर्जन विधानसभा सीटों का मालिक भी बन बैठा था। जहां वह कभी बसपा व सपा के बैनर तले विधायक बना। कई बार निर्दल भी चुनाव जीत गया।

इस दौरान मुख्तार अंसारी ने हिंदू मुस्लिम एकता दल, कौमी एकता दल जैसी छोटी-छोटी पार्टियों का भी गठन किया। उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल के लगभग ७-८ लोकसभा और लगभग ३५-४० विधानसभा सीटों पर माफिया मुख्तार अंसारी का सीधा या आंशिक प्रभाव माना जाता रहा है। कभी पूर्वांचल के वाराणसी, गाजीपुर, बलिया, जौनपुर और मऊ में मुख्तार अंसारी की तूती बोलती थी।

इन जिलों में मुख्तार अंसारी और इसके कुनबे का दबदबा माना जाता रहा है। यही वजह थी कि कभी सपा संस्थापक मुलायम सिंह यादव तो कभी बसपा मुखिया मायावती ने मुख्तार को अपनाया । मायावती ने तो मुख्तार अंसारी को गरीबों का मसीहा तक कह डाला था। नब्बे के दशक में गाजीपुर मऊ, बलिया ,वाराणसी और जौनपुर में सरकारी ठेकों को लेकर गैंगवार शुरू हो गए थे। इस दौर में इन जिलों में सबसे चर्चित नाम मुख्तार अंसारी का रहा था। मुख्तार अंसारी १९९६ में पहली बार बसपा से मऊ सदर से विधायक बना और फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। मुख्तार ने मऊ को अपना गढ़ बनाया और यहां से लगातार पांच बार २०२२ तक विधायक रहा। मुख्तार अंसारी ने २००२ में बसपा से टिकट न मिलने पर निर्दल मऊ सदर से चुनाव लड़ने का फैसला किया और जीत हासिल की उसके बाद उसने अपनी खुद की पार्टी का गठन किया और कौमी एकता दल के नाम से चुनाव मैदान में उतरा और लगातार दो बार जीत हासिल की।

२०१७ के विधानसभा चुनाव में मुख्तार ने एक बार फिर बसपा का दामन थामा और अपने पार्टी कौमी एकता दल का बसपा में विलय कर लिया और जीत हासिल की। २०२२ में विधान सभा चुनाव में किन्ही कारणों से उसने चुनाव लड़ने से मना कर दिया और इस सीट पर अपने बेटे अब्बास अंसारी को मैदान में उतारा और मुख्तार की विरासत मऊ सदर पर अब्बास ने जीत हासिल कर ली।

कभी जिसके नाम की तूती पूर्वांचल के दर्जनों जिले मे बोलती थी आज उसका नाम अपने नाम के साथ जोड़ने को लोग कतरा रहे हैं। लोग कहते हैं कि अस्सी और नब्बे के दशक में जिस माफिया मुख्तार अंसारी के नाम से सरकारी ठेके खुला करते थे, अवैध वसूली हुआ करती थी। कभी जिसका करीबी होना लोग शान समझते थे आज उस माफिया मुख्तार अंसारी के नाम को अपने नाम के साथ जोड़ने से लोग कतरा रहे हैं। ९० के दशक से शुरू हुआ मुख्तार का रसूख २०१७ तक आते-आते ध्वस्त होना शुरू हुआ।

आलम यह रहा की योगी सरकार के अपराध के खिलाफ चलाए जा रहे हैं मुहिम में २०२४ तक माफिया मुख्तार की लगभग ५०० करोड़ की संपत्ति या तो जब्त की जा चुकी है या उस पर बुलडोजर चलाया जा चुका है।

माफिया से नेता बने मुख्तार अंसारी की हुई मौत के बाद हर जगह ये सवाल उठाए जा रहे हैं कि उनकी पत्नी अफशां अंसारी कहां गायब है? सोशल मीडिया पर कहा जा रहा है कि पति को आखिरी बार भी देखने अफशां अंसारी सामने नहीं आई। अंसारी को ३० मार्च की सुबह सुपुर्द-ए-खाक कर दिया गया है। माफिया डॉन मुख्तार अंसारी की पत्नी अफशां अंसारी लंबे समय से फरार चल रही है। अफशां अंसारी के खिलाफ दर्जनों मामलें दर्ज हैं। उत्तर प्रदेश की पुलिस ने अफशां अंसारी के खिलाफ लुक आउट नोटिस भी जारी किया हुआ है।

अफशां अंसारी पर पुलिस ने इनाम घोषित कर रखा है। लोकसभा चुनाव २०२४ संसदीय क्षेत्र। प्रत्याशी चुनाव तिथियां गैंगस्टर एक्ट से जमीन हड़पने तकः अफशां अंसारी के खिलाफ कई केस दर्ज यूपी पुलिस को अफशां अंसारी की लंबे समय से तलाश है। अफशां अंसारी पर गैंगस्टर एक्ट के तहत भी कार्रवाई की जा चुकी है। रिपोर्ट के मुताबिक अफशां अंसारी पर गाजीपुर, मऊ और लखनऊ पुलिस ने दर्जन भर मुकदमे दर्ज किए हैं। इसमें डरा-धमका कर फर्जी तरीके से जमीन हड़पने, रसूख के दम पर सरकारी जमीन पर कब्जा करना, वसूली और आर्थिक लाभ लेने जैसे केस शामिल हैं।

मुख्तार अंसारी के २००५ में जेल जाने के बाद से अंसारी गैंग की कमान अफशां अंसारी ही संभाल रही थी। मुख्तार अंसारी से शादी के पहले अफशां अंसारी का कोई क्राइम रिकॉर्ड नहीं था और नाही कोई अपराधिक मामला दर्ज था। अफशां अंसारी पर गाजीपुर पुलिस ने ५० हजार का इनाम और मऊ पुलिस ने २५ हजार रुपये का इनाम घोषित किया हुआ है। पुलिस कहीं अफशां अंसारी को गिरफ्तार ना कर ले..., इसी वजह से वह सालों से सार्वजनिक तौर पर दिखाई नहीं देती हैं। रिपोर्ट के मुताबिक अफशां अंसारी अपने पति मुख्तार अंसारी को भी आखिरी बार देखने नहीं आएंगी।

कहा जा रहा है कि उन्हें पुलिस का खतरा है, इसलिए वह सामने नहीं आएगी। फिलहाल अफशां अंसारी कहां है? यूपी में है भी या नहीं? इस बारे में कोई पुख्ता जानकारी सामने नहीं आई है। अब तक मुख्तार अंसारी के छोटे बेटे उमर अंसारी और मुख्तार अंसारी के छोटे भाई अफजाल अंसारी ही मीडिया के सामने आए हैं। मुख्तार अंसारी के बड़े बेटे अब्बास अंसारी फिलहाल जेल में बंद हैं।

कांग्रेस का तो निकल जाएगा दिवाला!

IT डिपार्टमेंट ने थमाया १७४५ करोड़ रुपए का नया टैक्स नोटिस, अब कुल टैक्स देनदारी 3567 करोड़ हुई

इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने कांग्रेस को १७४५ करोड़ रुपए का नया टैक्स नोटिस थमा दिया है। पार्टी को साल २०१४ से २०१७ के बीच के टैक्स रकम के तौर पर यह राशि जमा कराने के लिए इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने कांग्रेस को १७४५ करोड़ रुपए का नया टैक्स नोटिस थमा दिया है। पार्टी को साल २०१४ से २०१७ के बीच के टैक्स रकम के तौर पर यह राशि जमा कराने के लिए कहा गया है। इससे दो दिन पहले भी विभाग की ओर से पार्टी को १८२३ करोड़ रुपए का टैक्स नोटिस जारी किया गया था। इसके साथ ही कांग्रेस पर टैक्स की कुल देनदारी ३५६७ करोड़ रुपए हो गई है। लोकसभा चुनाव से पहले आयकर की इस कार्रवाई को कांग्रेस 'टैक्स टेरेरिज्म' करार दे चुकी है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कांग्रेस को साल २०१४-१५ के लिए ६६३ करोड़ रुपए, साल २०१५-१६ के लिए ६६४ करोड़ रुपए और साल २०१६-१७ के लिए ४१७ करोड़ रुपए के टैक्स का भुगतान करने के लिए कहा गया है।

हालांकि, पार्टी ने कहा है कि विभाग की ओर से टैक्स सही ढंग से कैलकुलेट नहीं किया गया है। कांग्रेस की ओर से दावा किया गया है कि छ्ढ विभाग ने राजनीतिक पार्टियों को मिलने वाला टैक्स रिबेट नहीं लगाया है और पूरे कलेक्शन पर टैक्स भरने का नोटिस जारी किया है। साथ ही विभाग ने कांग्रेस नेताओं से जब्त डायरियों की थर्ड पार्टी एंट्री के आधार पर भी टैक्स लगा दिया है। दो दिन पहले इनकम टैक्स विभाग ने कांग्रेस को २०१७-१८ से लेकर २०२०-२१ के टैक्स रिकवरी के लिए नोटिस भेजा गया था। लगभग १,७०० करोड़ रुपये के रिकवरी नोटिस में टैक्स के साथ जुर्माना और ब्याज भी जोड़ा गया था। कांग्रेस ने आयकर विभाग के इस कदम को अलोकतांत्रिक बताया था।

कांग्रेस को अस्तित्व के संकट का सामना करना पड़ सकता है, क्योंकि आयकर विभाग पार्टी से उसकी कुल संपत्ति (लगभग १,४३० करोड़ रुपये) की तुलना में लगभग दोगुनी धनराशि बतौर कर बकाए के तौर पर भुगतान करने को कह सकता है. कांग्रेस ने शुक्रवार को बताया कि उसे ५ वित्त वर्ष (असेसमेंट ईयर या मूल्यांकन वर्ष) के लिए १,८२३ करोड़ रुपये के आयकर मांग का नोटिस दिया गया है. पार्टी को अभी तीन और मूल्यांकन वर्षों के लिए नोटिस भेजा जाना है.सूत्रों ने News18 को बताया कि ३१ मार्च से पहले शेष मांग नोटिस की तामील के बाद कांग्रेस से वसूली जाने वाली कुल राशि २,५०० करोड़ रुपये को पार कर सकती है. यह कांग्रेस के लिए अब तक की सबसे बड़ी चुनौती हो सकती है, क्योंकि पार्टी की कुल संपत्ति लगभग १,४३० करोड़ रुपये है, जबकि बकाए टैक्स की देनदारी २५०० करोड़ रुपये है. आकलन वर्ष २०२३-२४ के लिए अपने नवीनतम आईटी रिटर्न में कांग्रेस ने कहा था कि उसके पास लगभग ६५७ करोड़ रुपये का कोष, ३४० करोड़ रुपये की शुद्ध संपत्ति और ३८८ करोड़ रुपये की नकदी और नकद समकक्ष है- कुल मिलाकर लगभग १,४३० करोड़ रुपये.

संक्षेप में कहें तो कांग्रेस दिवालिया होने के बाद भी २,५०० करोड़ रुपये की इतनी रकम नहीं चुका पाएगी, क्योंकि यह रकम उसकी नेटवर्थ से कहीं ज्यादा है. आईटी विभाग वसूली पर रोक लगाने के लिए मांगी गई राशि का २० प्रतिशत भुगतान करने का विकल्प देता है. बता दें कि कांग्रेस पार्टी को ७ साल के रिटर्न के पुनर्मूल्यांकन के संबंध में दिल्ली उच्च न्यायालय से कोई राहत नहीं मिली है. इस सप्ताह की शुरुआत में उनकी याचिकाएं खारिज कर दी गईं. एक सरकारी सूत्र ने बताया कि यही कारण है कि कांग्रेस ने पिछले हफ्ते सोनिया गांधी की अध्यक्षता में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की क्योंकि उन्हें इन सात वर्षों के लिए भारी मांग नोटिस की आशंका थी.

आईटी विभाग के कदमों को रोकने के लिए कांग्रेस अब सुप्रीम कोर्ट जाएगी. अब तक कांग्रेस को वित्तीय वर्ष १९९३-१९९४, २०१६-१७, २०१७-१८, २०१८-१९ और २०१९-२०२० के लिए आईटी डिमांड नोटिस प्राप्त हुए हैं. सबसे भारी मांग २०१८-१९ के लिए ९१८ करोड़ रुपये की है. यह देश में २०१९ चुनावी साल भी था. आईटी विभाग आने वाले दिनों में मूल्यांकन वर्ष २०१४-१५, २०१५-१६ और २०२०-२१ के लिए कांग्रेस को तीन और नोटिस जारी करने की तैयारी में है. यह पूरी कार्रवाई आईटी विभाग द्वारा कांग्रेस को ५२० करोड़ रुपये के नकद भुगतान के बारे में २०१९ में दो कॉरपोरेट्स पर छापे के दौरान मिले तथ्य के आधार पर की जा रही है.

आईटी विभाग ने मामला बनाया है कि इसलिए कांग्रेस आयकर अधिनियम की धारा १३ (ए) के तहत अपनी आय पर आयकर का भुगतान करने से छूट का दावा नहीं कर सकती, क्योंकि प्रावधानों का उल्लंघन हुआ है. आईटी विभाग ने आकलन वर्ष २०१८-१९ के लिए आईटी रिटर्न में उल्लंघन के लिए कांग्रेस के बैंक खातों से १३५ करोड़ रुपये पहले ही वसूल कर लिए हैं.

त्योहार

गुड़ी पड़वा महाराष्ट्र का एक महत्वपूर्ण पर्व

गुड़ी पड़वा महाराष्ट्र का एक महत्वपूर्ण पर्व है। हिंदू पंचांग के अनुसार, यह चैत्र महीने के पहले दिन मनाया जाता है। यह मराठी लोगों के नव वर्ष की शुरुआत का भी प्रतीक है। इस दिन मराठी समुदाय के लोग अपने घरों के बाहर समृद्धि के प्रतीक गुड़ी को लगाते हैं और पूजा करके गुड़ी पड़वा मनाते हैं। ऐसा माना जाता है कि यह परंपरा पूरे साल खुशियां, सफलता और समृद्धि लाती है।

गुड़ी पड़वा को महाराष्ट्र में बहुत ही उत्साह के साथ मनाया जाता है. गुड़ी का अर्थ होता है विजय पताका और पड़वा का मतलब होता है चंद्रमा का पहला दिन. इस साल यह ९ अप्रैल दिन मंगलवार को मनाया जाएगा। यह दिन मराठी लोगों के नव वर्ष की शुरुआत का प्रतीक है। इस पर्व को युगादी चेती चंड और नव संवत्सर उगादी जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता है। इस शुभ अवसर पर महिलाएं अपने घरों को सुंदर गुड़ी से सजाती हैं जो शुभ शुरुआत को दर्शाता है।

क्या है गुड़ी पड़वा

चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से हर साल नया हिंदू वर्ष शुरू हो जाता है जिसे विक्रम संवत कहा जाता है . इस तिथि के बाद से नया विक्रम संवत २०८० शुरू हो जाएगा जबकि अंग्रेजी कैलेंडर का साल २०२३ अभी चल रहा है. गुड़ी पड़वा का त्योहार महाराष्ट्र में मराठी समुदाय के लोग बड़े ही धूमधाम के साथ मनाते हैं. वहीं देश के अलग-अलग हिस्सों में हिंदू नववर्ष को अलग-अलग नामों से जाना जाता है. इस चैत्र प्रतिपदा, गुड़ी पड़वा, नव संवत्सर उगादी, चेती चंड और युगादी के नाम से जाना जाता है. गुड़ी पड़वा के पर्व पर घरों को विशेष रूप से सजाया जाता है. घर के मुख्य द्वार पर इस दिन स्वास्तिक और रंगोली से सजाया जाता है.

गुड़ी पड़वा का महत्व

महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा के त्योहार को हिंदू नववर्ष के शुभारंभ और विजय के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है. महाराष्ट्र के लोग चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि पर अपने घरों में गुड़ी लगाते हैं. इस कारण से इसे गुड़ी पड़वा कहते हैं. इसमें मराठी समुदाय के लोग इस दिन बांस की लकड़ी को लेकर उसके ऊपर चांदी, तांबे या पीतल के कलश का उल्टा रखते हैं. इसमें केसरिया रंग का पताका लगाकर उसे नीम की पत्तियां , आम की पत्तियां और फूलों से सजाया जाता है फिर घर के सबसे ऊंचे स्थान पर लगाया जाता है.

गुड़ी पड़वा को देश अलग- अलग हिस्सों में कई नामों से जाना जाता है. गोवा और केरल में कोंकणी समुदाय इसे संवत्सर पड़वो नाम से मनाता है. कर्नाटक में इस पर्व को युगाड़ी नाम से जाना जाता है. जबकि आन्ध्र प्रदेश और तेलंगाना में गुड़ी पड़वा को उगाड़ी नाम से मनाते हैं. वहीं कश्मीर में रहने वाले हिंदू समुदाय के लोग इस दिन को नवरेह के तौर पर मनाते हैं. मणिपुर में इस पर्व को सजिबू नोंगमा पानबा या मेइतेइ चेइरोबा से मनाते हैं. वहीं उत्तर और मध्य भारत में इस दिन से चैत्र नवरात्रि आरंभ हो जाती है.

गुड़ी पड़वा की मान्यताएं

१. ऐसी मान्यता है इस दिन पर ही ब्रह्मा जी ने इस दिन ब्रह्माण्ड की रचना की थी. इसीलिए गुड़ी को ब्रह्मध्वज भी माना जाता है.

२. मराठी समुदाय के लोग इस दिन को महान राजा छत्रपति शिवाजी की विजय को याद करने के लिए भी गुड़ी लगाते हैं.

३. इसी तिथि पर ही महान ज्योतिषाचार्य और गणितज्ञ भास्कराचार्य ने सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, महीने और वर्ष की गणना करते हुए पंचांग की रचना की थी. इस तिथि पर चंद्रमा के चरण का पहला दिन होता है.

४. ऐसी मान्यता है कि इस तिथि पर भगवान प्रभु राम ने लंका पर विजय प्राप्त करने के बाद वापस अयोध्या आए थे जिसकी खुशी में विजय पर्व के रूप में मनाया जाता है.

५. मान्यता है इस दिन गुड़ी लगाने से घर में सुख और समृद्धि आती है.

गुड़ी का मतलब है ध्वज यानी झंडा और प्रतिपदा तिथि को पड़वा कहा जाता है। यह रबी फसलों की कटाई का प्रतीक है। ऐसा कहा जाता यही वह दिन है, जब भगवान ब्रह्मा ने ब्रह्मांड के निर्माण की शुरुआत की थी। यह दिन महाराष्ट्र में बड़ी भव्यता और दिव्यता के साथ मनाया जाता है।महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा का पर्व मराठा शासक छत्रपति शिवाजी महाराज की जीत के रूप में मनाया जाता है। इसे लोग विजय ध्वज के समान अपने घरों के बाहर फहराते हैं। यह पर्व हिंदू विजय और समृद्धि का प्रतीक है।महिलाएं स्नान के बाद अपने घरों को सुंदर गुड़ी से सजाती हैं, जो शुभ शुरुआत को दर्शाता है। गुड़ी को पारंपरिक रूप से एक बांस की छड़ी का उपयोग करके तैयार किया जाता है, जिसके ऊपर एक उल्टा चांदी, तांबा या पीतल का बर्तन रखा जाता है। इसके बाद केसरिया रंग के कपड़े, नीम या आम के पत्तों और फूलों से सजाकर इसे घर के सबसे ऊंचे स्थान पर लगाया जाता है।इसके अलावा लोग अपने प्रवेश द्वारों को रंगीन रंगोलियों से सजाते हैं, और प्रसाद के रूप में पूरन पोली और श्रीखंड जैसे विशेष व्यंजन तैयार करते हैं।

भूकंप से दहला ताइवान
गगनचुंबी इमारतें झुकी

ताइवान में बड़ा भूकंप आया है। राजधानी ताइपे में बुधवार तीन अप्रैल को भूकंप के बड़े तेज झटके महसूस हुए है। रिक्टर स्केल पर इन भूकंप की तीव्रता ७.२ मापी गई है। ये भूकंप इतना जबरदस्त था कि इसके झटकों के बाद कई इमारतें क्षतिग्रस्त हो गईं। भूकंप के बाद सुनामी भी आ गई है। बता दें कि भूकंप का झटका इतना तेज था कि हुलिएन के एक इलाके में स्थित पांच मंजिला इमारत बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई है। भूकंप के कारण इसकी पहली मंजिल रह गई है। इमारत की बाकी मंजिलें झुक गई है। वहीं ताइपे में आए इस भूकंप के कारण पुरानी इमारतें और कुछ नए ऑफिस कैंपस में भी टाइल्स गिरने की जानकारी मिली है। जोरदार भूकंप से बचने के लिए इतिहास के तौर पर छात्रों को स्कूल की प्लेग्राउंड में लेकर आया गया। छात्रों को हेलमेट भी पहनाए गए ताकि वह सुरक्षित रह सके।

जानकारी के मुताबिक पूरे द्वीप में ट्रेन सेवा को निलंबित कर दिया गया है। लोगों की सुरक्षा के लिए ताइपे में 'सबवे' सेवा अस्थायी रूप से बंद किया गया है। गौरतलब है कि २.३ करोड़ की आबादी वाले देश में इस भूकंप से राष्ट्रीय संसद भवन की दीवारों और छत को नुकसान पहुंचा है। देश का संसद भवन द्वितीय विश्व युद्ध से पहले बनाए गए स्कूल में है।

भूकंप के तेज़ झटके आने के बावजूद लोगों में थोड़ी-बहुत ही दहशत रही, क्योंकि इस देश में अक्सर भूकंप के झटके आते रहे हैं। स्कूल ऐसी स्थितियों से निपटने के लिए अभ्यास आयोजित करते रहते हैं और लोगों को मीडिया तथा मोबाइल के जरिए नोटिस जारी किए जाते हैं। स्कूल और सरकारी कार्यालयों को छुट्टी का विकल्प दिया गया है। हुलिएन में हताहतों की संख्या के बारे में जानकारी नहीं मिल सकी है, जहां २०१८ में भूकंप में एक ऐतिहासिक होटल और अन्य इमारतें गिर गई थीं। वहीं, जापान की मौसम विज्ञान एजेंसी ने कहा कि भूकंप के झटके के १५ मिनट बाद योनगुनी द्वीप पर ३० सेंटीमीटर (करीब एक फुट) ऊंची सुनामी की लहर देखी गई है। इशिगाकी और मियाको द्वीपों पर भी हल्की फुल्की लहरें देखी गईं।

जापानी एजेंसी ने पहले कहा था कि सुनामी की वजह से समुद्र में तीन मीटर (९.८ फुट) तक ऊंची ल हरें उठ सकती हैं, लेकिन बाद में उसने इस चेतावनी को घटाकर करीब एक फुट तक कर दिया। जापान के आत्मरक्षा बलों ने ओकिनावा क्षेत्र के आसपास सुनामी के प्रभाव को लेकर जानकारी जुटाने के लिए विमान भेजे और जरूरत पड़ने पर लोगों को निकालने और उन्हें आश्रय देने की तैयारी शुरू कर दी। ताइवान की भूकंप निगरानी एजेंसी ने बताया कि भूकंप की तीव्रता ७.२ थी जबकि अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के मुताबिक, भूकंप की तीव्रता ७.४ मापी गई है। यहस्थानीय समयनुसार सुबह सात बजकर ५८ मिनट पर आया और इसका केंद्र हुलिएन से दक्षिण दक्षिण पश्चिम में जमीन से करीब ३५ किलोमीटर नीचे था। ताइवान के भूकंप निगरानी ब्यूरो के प्रमुख वू चिएन-फू के अनुसार, भूकंप के झटके चीन के अपतटीय क्षेत्र में स्थित ताइवानी-नियंत्रित द्वीप किनमेन तक महसूस किए गए। शुरुआती भूकंप आने के एक घंटे के दौरान ताइपे में भूकंप बाद के कई झटके महसूस किए गए।

अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के मुताबिक, भूकंप बाद के एक झटके की तीव्रता ६.५ थी और इसका केंद्र ११.८ किलोमीटर की गहराई में था। जापान के मुख्य कैबिनेट सचिव योशिमासा हयाशी ने कहा कि जापान में जान-माल के नुकसान की कोई सूचना नहीं है। चीन ने अपनी मुख्य भूमि के लिए सुनामी की कोई चेतावनी जारी नहीं की। प्रशांत सुनामी चेतावनी केंद्र ने कहा कि हवाई या अमेरिकी प्रशांत क्षेत्र गुआम में सुनामी का कोई खतरा नहीं है। ताइवान में हाल के वर्षों में २१ सितंबर १९९९ को सबसे भीषण भूकंप आया था जिसकी तीव्रता ७.७ थी। इसमें २४०० लोगों की मौत हो गई थी तथा करीब एक लाख लोग जख्मी हो गए थे और हजारों इमारतें नष्ट हो गई थी।

अक्षय तृतीया तक नया रिकॉर्ड बना देगा सोना! धनतेरस तक छू लेगा आसमान...

सोने और गहनों से प्रेम करने वाले हमारे देश में वैसे तो सालभर इसकी खरीद-फरोख्त होती है. लेकिन, हर साल दो बार ऐसे मौके आते हैं जब सोने की चीजें खरीदना एक तरह से जरूरी जैसा हो जाता है. अक्षय तृतीया और धनतेरस, इन दोनों मौकों पर बाजारों में सोना-चांदी खरीदने की ऐसी भीड़ उमड़ती है, मानों फ्री में बंट रहा हो. इस बार भी अनुमान है कि अक्षय तृतीया और धनतेरस पर सोने और गोल्ड के गहनों की जमकर खरीद होगी.केडिया एडवाइजरी के डायरेक्टर अजय केडिया का कहना है कि सल २०२४ में दुनिया की इकनॉमिक कंडीशन, भू-राजनैतिक तनाव और कल्चरल डिमांड की वजह से सोने और इसके आभूषणों की कीमत में बड़ा उछाल आ सकता है. गोल्ड की मांग वैसे भी तेजी से बढ़ती जा रही है. आगे अगर मार्केट में करेक्शन आता है तो गोल्ड की मांग बढ़ेगी और साल के आखिर तक बड़ा उछाल देखा जा सकता है.

केडिया के अनुसार, अक्षय तृतीया तक सोने की कीमत हाजिर बाजार में ६८,५०० रुपये प्रति १० ग्राम रहने का अनुमान है. इस साल १० मई, २०२४ को अक्षय तृतीया का त्योहार पड़ रहा है. इस दिन सोना या सोने के आभूषण खरीदना शुभ माना जाता है. अगर सोने का मौजूदा भाव देखें तो गुरुवार २८ मार्च, २०२४ को २४ कैरेट सोने का हाजिर भाव दिल्ली में ६९,०४० रुपये प्रति १० ग्राम रहा. इस लिहाज से अक्षय तृतीया तक सोने की कीमत में करीब ५०० रुपये की गिरावट दिख रही है. अजय केडिया का कहना है कि हाल के दिनों में भले ही सोने की कीमतों में कुछ गिरावट आ रही हो, लेकिन लंबी अवधि में सोने के भाव में तेज उछाल देखा जा रहा है. इस साल २९ अक्टूबर को धनतेरस का त्योहार पड़ेगा और तब तक गोल्ड का रेट ७२ हजार रुपये प्रति १० ग्राम के भाव को पार कर सकता है. इसकी बड़ी वजह खुदरा खरीद के साथ-साथ रिजर्व बैंक की ओर से भी सोने की खरीद पर जोर दिया जाना है.

Russia Terrorist Attack:

मॉस्को के कॉन्सर्ट हॉल अटैक में गई १३३ लोगों की जान

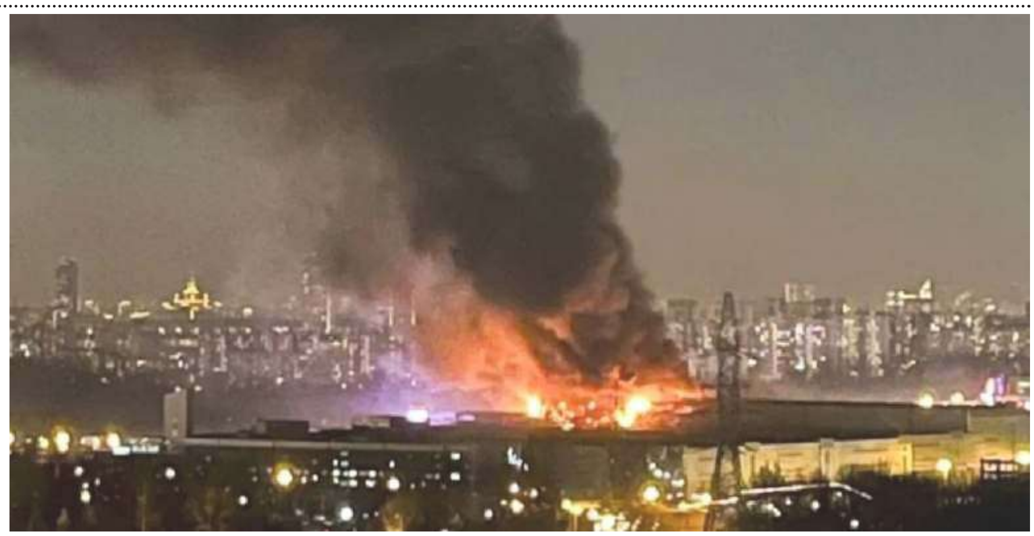

रूस की राजधानी मॉस्को के उत्तर-पश्चिम में क्रोकस सिटी हॉल और कॉन्सर्ट कॉम्प्लेक्स में शुक्रवार (२२ मार्च) की शाम हुए हमले के कारण अब तक १३३ लोगों की मौत हो गई है और १४० से ज्यादा लोग घायल हुए हैं. जान गंवाने वालों में बच्चे भी शामिल हैं. मौत का आंकड़ा बढ़ने की आशंका है क्योंकि कई लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं. रूस ने इसे आतंकी हमला बताया है. आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट ने इस हमले की जिम्मेदारी ली है. क्रेमलिन ने शनिवार (२३ मार्च) को कहा कि मामले में चार संदिग्ध बंदूकधारियों समेत ११ लोगों को गिरफ्तार किया गया है.

मॉस्को में हुए इस हमले की भारत समेत दुनिया के कई देशों ने निंदा की है और पीड़ितों को लेकर संवेदना जाहिर की है. रूस की सुरक्षा सेवा का कहना है कि हिरासत में लिए गए संदिग्ध यूक्रेन से लगी सीमा को पार करने की फिराक में थे. हालांकि, कीव ने इस दावे को बेतुका बताया है. अमेरिका का कहना है कि इस हमले के पीछे इस्लामिक स्टेट समूह हो सकता है. अमेरिका के बयान पर रूस ने कोई टिप्पणी नहीं की है. रूस के राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन ने शनिवार (२३ मार्च) को कहा कि सभी अपराधियों की पहचान की जाएगी और किसी को बख्शा नहीं जाएगा. उन्होंने उम्मीद जताई कि अन्य देश भी आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में उनका साथ देंगे. राष्ट्रपति पुतिन ने २४ मार्च को देश में एक दिन के शोक की घोषणा भी की.

इस हमले के कारण रूस में प्रमुख कार्यक्रम रद्द कर दिए गए, जिनमें रूस और परागवे के बीच सोमवार को मॉस्को में होने वाला मैत्रीपूर्ण फुटबॉल मैच भी शामिल था.

रशिया टुडे की रिपोर्ट के मुताबिक, मॉस्को के पश्चिमी बाहरी इलाके क्रास्नोगोर्स्क टाउन में क्रोकस सिटी हॉल पर शुक्रवार रात बंदूकधारियों ने हमला किया. हमला रूसी रॉक बैंड 'पिकनिक' का कॉन्सर्ट शुरू होने से पहले हुआ. जिस वक्त हमला हुआ उस समय कार्यक्रम स्थल लगभग पूरा भरा हुआ था. कार्यक्रम स्थल की अनुमानित क्षमता ७,५०० है. हमलावरों ने भीड़ पर अंधाधुंध गोलीबारी की और फिर इमारत में आग लगा दी. वे एक सफेद रेनॉल्ट सिंबल/क्लियो कार में घटनास्थल से भागने में सफल रहे, जिसके बाद बड़े पैमाने पर तलाशी अभियान चलाया गया.

आम की बर्फी

सामग्री :

३५० ग्राम मावा, १ कप आम का गूदा, १ टीस्पून घी, १०० ग्राम चीनी, थोड़ा-सा पीला रंग, आधा टीस्पून पिसी छोटी इलायची, कटा हुआ बादाम, पिस्ता, चाँदी का वर्क।

विधि : खोवा गुलाबी होने तक भून लें। एक अलग बर्तन में घी डाल कर आम का गूदा गाढ़ा होने तक पकायें। इसे भूने हुए खोये में मिलाकर खूब हिलायें। चीनी तथा रंग साथ ही डाल दें। जब सारा मिश्रण मिल जाए तो इलायची पाउडर भी डाल दें। एक थाली में थोड़ा-सा घी चुपड़ कर मिश्रण को थाली में फैला दें। बादाम-पिस्ता से सजा दें व चाँदी का वर्क लगा दें और ठंडी होने पर पीस काट दें। आम की बर्फी तैयार है।०

आम की खीर

सामग्रीः

पके हुए आम - १
दूध - १ लीटर
चावल - चौथाई कप
चीनी - आधा कप
इलाइची पाउडर - आधा चम्मच
पिस्ता- ५-६ (बारीक कटे हुए)
बादाम - ४-५ (बारीक कटे हुए)
किशमिश -९-१०
केसर- ३-४ धागे (गार्निश करने के लिये)

विधिः आम की खीर बनाने के लिए सबसे पहले पके हुए आम के छिल के छीलकर छोटे छोटे पीस काट लें। अब आम के छोटे छोटे पीस को हाथों से अच्छी तरह से मैश करके बारीक पेस्ट बना लें, इसके बाद चावल को बीनकर साफ करके पानी से धो कर करीब २०-२५ मिनट के लिए पानी में भिंगो दें। अब दूध को छानकर किसी भारी तली वाले बड़े बर्तन में गरम करने के लिए गैस पर रखें। जब दूध में उबाल आ जाये तब भींगे हुए चावलों को दूध में डाल दें और दूध को चमचे से लगातार चलाते रहें जब तक कि खीर में उबाल ना आ जाये, जब खीर में उबाल आ जाये तब गैस को धीमा कर दें और थोड़ी थोड़ी देर में खीर को चमचे से चलाते रहे क्योकि खीर बर्तन कि तली में बहुत जल्दी लग जाती है। अब आप खीर में से एक चम्मच से थोड़े से चावल लेकर चेक कर लें अगर चावल गल जाये तब खीर में चीनी डालकर मिला दें और खीर को धीमी आँच पर करीब ५-६ मिनट तक पकने दें। अब इसमें कटे हुए बादाम, पिस्ते, किशमिश डालकर मिला दें और गैस बंद कर दें। जब खीर हलकी सी ठंडी हो जाये तब इसमें आप का मैश किया हुआ पल्प और इलाइची पाउडर डालकर चम्मच से अच्छी तरह से मिक्स कर लें। स्वादिष्ट आम की खीर बनकर तैयार हो गयी है, अब आप स्वादिष्ट आम की खीर को सर्विंग बाउल में निकाल कर गरमा गर्म या फ्रिज में रखकर ठंडा करके केसर के धागे और थोड़े

गोभी-चावल का पुलाव

सामग्रीः

आधा चम्मच हींग
१ बड़ा चम्मच लाल मिर्च पाउडर
स्वादानुसार नमक
आधा बड़ा चम्मच बारीक कटी हरी मिर्च
आधा चम्मच काली सरसों के बीज
आधा चम्मच काली मिर्च साबूत
२०० ग्राम कसी हुआ फूलगोभी
भारतीय मसालों का मिश्रण
२५० ग्राम चावल भिगोये हुए
२ बड़े चम्मच बारीक कटा हरा धनिया
२ बड़े चम्मच तेल

विधिः इसे पकाने के लिए पैन में तेल गरम करें। इसमें काली मिर्च, हरी मिर्च, आधा चम्मच सरसों के बीज, भारतीय मसाले, आधा चम□मच हींग, कसी हुई गोभी व एक चम्मच लाल मिर्च पाउडर डालें। इसमें दो कप पानी डालें। उबलने तक उसे धीमी आंच में पकायें। अब इसमें भिगोए हुए चावल व स□वादानुसार नमक मिलाएं। लगभग १० मिनट तक धीमी आंच पर पका लें। लीजिए तैयार है आपका पुलाव।

मटर पनीर के समोसे

सामग्री :

मैदा-डेढ़ कप
अजवाईन - चौथाई चम्मच
नमक- स्वादानुसार
तेल -२ चम्मच (मोयन के लिए)
भरावन के लिए
पनीर- आधा कप (कद्दूकस कर लें)
मटर- आधा कप (दरदरा पीस लें)
हरी मिर्च -१-२ (बारीक कटी हुई)
लाल मिर्च पाउडर- १ चम्मच
जीरा- आधा चम्मच
धनियाँ पाउडर - १ चम्मच
अदरक-१ टुकड़ा (बारीक कटा हुआ)
गरम मसाला पाउडर - चौथाई चम्मच
अमचूर पाउडर -आधा चम्मच
हरा धनियाँ - २ चम्मच (बारीक कटा हुआ)
नमक- स्वादानुसार
तेल – समोसों को तलने के लिए

विधिः मटर पनीर के समोसे बनाने के लिए सबसे पहले हम समोसों के लिए आटा लगायेंगें, आटा लगाने के लिए मैदा को एक बड़े बर्तन में छानकर निकाल लें, अब छनी हुई मैदा में अजवाईन, मोयन के लिए तेल और स्वादानुसार नमक को डालकर मिक्स कर लें और थोड़े पानी की सहायता से कड़ा आटा लगाकर तैयार कर लें। अब समोसे के आटे को करीब १५ मिनट तक ढककर रख दें। जब तक समोसे का आटा सेट होगा तब तक हम समोसे के लिए भरावन तैयार करेंगें।

भरावन बनायेंगे :-

भरावन बनाने के लिए सबसे पहले एक बड़ी बाउल में कद्दूकस किया हुआ पनीर, पिसी हुई मटर, कटी हुई हरी मिर्च, अदरक, लाल मिर्च पाउडर, धनियाँ पाउडर, गरम मसाला पाउडर, अमचूर पाउडर, कटा हुआ हरा धनियाँ, जीरा और नमक को डालकर अच्छी तरह से मिक्स कर लें, समोसे के लिए भरावन बनकर तैयार हो गयी है।

समोसे बनाने के लिए गूंथे हुए आटे से छोटी छोटी लोइयाँ बना लें, अब एक लोई को लेकर परोथन की सहायता से पूरी के आकार में थोड़ी मोटी पूरी बेल लें। अब बेली हुई पूरी को चाकू की सहायता से बीच में से दो भागों में काट लें, अब पूरी के एक भाग को कोन की तरह से तिकोना करते हुये मोड़ लें और

तिकोना करते समय कोन के दोनों किनारों को थोड़ा पानी लगाकर चिपका लें। अब इस कोन में तिकोन में लगभग २ चम्मच भरावन भरकर पीछे के किनारे में एक चुन्नट डाल दें और ऊपर के दोनों किनारों में थोड़ा पानी लगाकर किनारों को चिपका कर समोसे की शेप दे दें। इसी प्रकार से सभी लोई को बेलकर और भरावन भरकर सभी समोसों को बनाकर तैयार कर लें। अब सभी समोसे बनकर तैयार हो गये है, इसलिए अब हम समोसों को तलेंगें। समोसों को तलने के लिए एक कढ़ाही में तेल डालकर गरम करने के लिए गैस पर रखें, जब तेल अच्छी तरह से गरम हो जाये तब गरम तेल में २-३ समोसे डालकर मीडियम आँच पर कलछी से पलट पलट कर ब्राउन होने तक तल कर किचन पेपर पर निकाल लें, इसी तरह से बाकी बचे हुये सभी समोसों को भी तलकर तैयार कर लें। स्वादिष्ट और क्रिस्पी मटर पनीर के समोसे बनकर तैयार हो गये है, गरमा गरम समोसों को खट्टी मीठी चटनी और गरमा गर्म चाय या कॉफ़ी के साथ सर्व करें।

मसाला पापड़

सामग्री-

मूंगदाल के पापड़ - ४
प्याज - २ (बारीक कटी हुई)
टमाटर- २ (बारीक कटे हुए)
हरी मिर्च -३ - ४ (बारीक कटी हुई)
लाल मिर्च पाउडर -१ चम्मच
चाट मसाला पाउडर - २ चम्मच
बेसन के बारीक सेव - ५ -६ बड़ी चम्मच
नींबू का रस- २ चम्मच
नमक - स्वादानुसार
तेल - पापड़ को तलने के लिए
हरा धनियाँ - ३ चम्मच(बारीक कटा हुआ)

विधिः मसाला पापड़ बनाने के लिए सबसे पहले एक कढ़ाही में तेल डाल कर गरम करने के लिए रखें। जब तेल गर्म हो जाए तब एक एक पापड़ को तेल में डालकर डीप फ्राई कर लें। पापड़ को फ्राई करते समय इस बात का ख़ास ध्यान रखें कि पापड़ मुड़ना या टूटना नहीं चाहिए। पूरा साबुत पापड़ ही निकलना चाहिए। अब पापड़ को सेंक कर टिश्यू पेपर पर निकाल लें। अब हम पापड़ के लिए टॉपिंग का मसाला तैयार करेंगें। मसाला बनाने के लिए एक बड़ी बाउल में कटी हुई प्याज , कटे टमाटर , हरी मिर्च , नीबू का रस , नमक और धनियाँ पत्ती डालकर अच्छे से मिक्स कर लें। अब हम तलें हुए एक पापड़ को सर्विंग प्लेट में निकाल कर रखें। अब इस पापड़ के ऊपर थोड़ा लाल मिर्च पाउडर और चाट मसाला पाउडर छिड़क दें और अब पापड़ पर तैयार किया हुआ टॉपिंग का मसाला डालकर फैला दें और ऊपर से दुबारा थोडा और चाट मसाला पाउडर छिड़क दें। और अब बाद में ऊपर से बेसन के बारीक सेव डालकर गार्निश करके

Wholesale Furniture Market
Ulhasnagar,Mumbai

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार
फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर
एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

ब्रह्मा जी की छाया से किन्नरों की उत्पत्ति

किन्नरो से जुड़ी कुछ ऐसी बातें, जो आप हमेशा से जानना चाहते थे, लेकिन न तो आप किसी से पूछ पाते हैं और न ही कोई आपको बता पाता है।

हमारे देश में इस समय 5 लाख किन्नर है। किन्नर समुदाय ख़ुद को मंगलमुखी मानते हैं, इसलिए ही ये लोग बस विवाह, जन्म समारोह जैसे मांगलिक कामों में ही भाग लेते हैं. मरने के बाद भी ये लोग मातम नहीं मनाते, बल्कि ये खुश होते हैं कि इस जन्म से पीछा छूट गया।

2. ऐसा माना जाता है कि ब्रह्मा जी की छाया से किन्नरों की उत्पत्ति हुई है ज्योतिष के अनुसार ऐसा माना जाता है कि 'वीर्य' की अधिकता से बेटा होता है और रज यानि रक्त की अधिकता से बेटी।अगर रक्त और वीर्य दोनों बराबर रहें, तो किन्नर का जन्म होता है।

3. महाभारत में अज्ञातवास के दौरान, अर्जुन ने विहन्ला नाम के एक हिजड़े का रूप धारण किया था। उन्होंने उत्तरा को नृत्य और गायन की शिक्षा भी दी थी।

4. किन्नर की दुआएं किसी भी व्यक्ति के बुरे समय को दूर कर सकती हैं माना जाता है कि इन्हें भगवान श्रीराम से वनवास के बाद वरदान प्राप्त हैं कहा जाता है कि इनसे एक सिक्का लेकर पर्स में रखने से धन की कमी भी दूर हो जाती हैं।

5. किन्नर अपने आराध्य देव अरावन से साल में एक बार विवाह करते है, ये विवाह लेकिन मात्र एक दिन के लिए ही होता है. शादी के अगले ही दिन अरावन देवता की मौत हो जाती है और इनका वैवाहिक जीवन खत्म हो जाता है।

6. 2014 से पहले इन्हें समाज में नही गिना जाता था. अभी भी इनके साथ हुए बलत्कार को बलत्कार नही माना जाता।

7. अगर किसी के घर बच्चा पैदा होता है और उस बच्चे के जननांग में कोई कमजोरी पायी जाती है, तो उसे किन्नरों के हवाले कर दिया जाता है।

8. यह समाज ऐसे लड़कों की तलाश में रहता है जो खूबसूरत हो, जिसकी चाल-ढाल थोड़ी कोमल हो और जो ऊंचा उठने के ख्वाब देखता हो। यह समुदाय उससे नजदीकी बढ़ाता है और फिर समय आते ही उसे बधिया कर दिया जाता है। बधिया, यानी उसके शरीर के हिस्से के उस अंग को काट देना, जिसके बाद वह कभी लड़का नहीं रहता।

9. किन्नरों की बद्दुआ इसलिए नही लेनी चाहिए क्योकिं ये बचपन से लेकर बड़े होने तक दुखी ही रहते हैं ऐसे में दुखी दिल की दुआ और बद्दुआ लगना स्वाभाविक हैं।

10. किसी की मौत होने के बाद पूरा हिजड़ा समुदाय एक हफ्ते तक भूखा रहता है।

11. किन्नरों के बारे में अगर सबसे गुप्त कुछ रखा गया है, तो वो है इनका अंतिम संस्कार। जब इनकी मौत होती है, तो उसे कोई आम आदमी नहीं देख सकता। इसके पीछे की मान्यता ये है कि ऐसा करने से मरने वाला फिर अगले जन्म में किन्नर ही बन जाता है। इनकी शव यात्राएं रात में निकाली जाती है। शव यात्रा निकालने से पहले शव को जूते और चप्पलों से पीटा जाता है। इनकेशवों को जलाया नहीं जाता, बल्कि दफनाया जाता है। ■

मेष :

मेष राशि के जातकों के लिए अप्रैल माह की शुरुआत थोड़ी उतार-चढ़ाव लिए रह सकती है। इस दौरान आपको घर-परिवार से मध्यम सुख की प्राप्ति होगी। खराब सेहत भी आपकी चिंता का बड़ा विषय बन सकती है। रिश्तों को बेहतर बनाए रखने के लिए अपनी राय किसी पर न थोपें। इस दौरान किसी वरिष्ठ व्यक्ति की सलाह से आप अपनी तमाम परेशानियों का हल खोजने में कामयाब हो जाएंगे। यह समय राजनीतिज्ञों के लिए विशेष रूप शुभ साबित होगा। अप्रैल महीने का उत्तरार्ध आपके परिवारिक जीवन और लव लाइफ के लिए बहुत ज्यादा शुभ रहेगा। आपसी प्रेम और विश्वास बढ़ेगा। किसी महत्वपूर्ण कार्य के बन जाने से खुशी प्राप्त होगी।

वृषभः

वृष राशि के जातकों के लिए माह के दूसरे सप्ताह में किसी बड़ी चिंता के कारण मन परेशान रहेगा। समय पर सोचे हुए काम नहीं पूरे होने और दिनचर्या अव्यस्थित रहने के कारण शारीरिक एवं मानसिक थकान रहेगी। इस दौरान अचानक से कुछ बड़े खर्च आ जाने के कारण बजट गड़बड़ा सकता है। नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में सीनियर अथवा जूनियर से उलझने से बचना चाहिए। आपको किसी भी बड़ी योजना अथवा भूमि-भवन में बहुत सोच-समझकर ही धन निवेश करना चाहिए। प्रेम संबंध के लिए उत्तरार्ध का समय गुडलक लिए हुए है। इस दौरान सिंगल लोगों की जिंदगी में मनचाहे पार्टनर का प्रवेश हो सकता है।

मिथुनः

मिथुन राशि के जातकों के लिए साल का महीना करियर-कारोबार की दृष्टि से अनुकूल लेकिन सेहत और संबंध की दृष्टि से थोड़ा प्रतिकूल कहा जाएगा। ऐसे में आपको पूरे महीने अपने रिश्ते-नातों को बेहतर बनाए रखने के साथ अपनी सेहत और खानपान पर पूरा ध्यान देना चाहिए। इस माह भूलकर भी कोई ऐसी बात मुंह से न निकालें जिसके कारण आपके वर्षों से बने-बनाए रिश्ते टूट जाएं। नौकरीपेशा लोगों के लिए दिसंबर महीने के मध्य का समय बेहद शुभ रहने वाला है। इस दौरान आपका प्रमोशन हो सकता है। यदि आप नौकरी में बदलाव के लिए प्रयासरत थे तो आपको किसी अच्छी जगह से ऑफर मिल सकता है। व्यवसाय से जुड़े लोगों को भी कारोबार में खासा मुनाफा और प्रगति होगी। इस दौरान आपको अभिमान और आलस्य से बचने की आवश्यकता रहेगी। सुखी दांपत्य जीवन के लिए भी अपने बिजी शेड्यूल से अपने लाइफपार्टनर के लिए समय जरूर निकालें।

कर्कः

कर्क राशि के जातक अप्रैल के महीने में बेवजह के वाद-विवाद में न उलझें। पैतृक संपत्ति की प्राप्ति में अड़चनें आ सकती हैं। कार्यक्षेत्र में आपके विरोधी षडयंत्र रच कर आपकी छवि को धूमिल करने का प्रयास कर सकते हैं। व्यवसाय से जुड़े लोगों को माह की शुरुआत में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन माह के मध्य में एक बाद फिर आपका कारोबार पटरी पर लौट आएगा। यह समय विदेश से जुड़े कारोबार तथा काम करने वाले नौकरीपेशा लोगों के लिए बेहद शुभ रहने वाला है। किसी प्रिय व्यक्ति से सरप्राइज गिफ्ट मिल सकत है। घर में धार्मिक-मांगलिक कार्यों में शामिल होने के अवसर प्राप्त होंगे।

सिंह :

सिंह राशि के जातकों के लिए अप्रैल का महीना शुभता और सौभाग्य को लिए हुए है। इस माह नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में विशेष सफलता और प्रगति के योग बनेंगे। उनकी अतिरिक्त आय के साधन बनेंगे। संचित धन में वृद्धि होगी। कार्य विशेष को पूरा करने अथवा बिगड़ा काम बनाने में कोई मित्र या प्रभावी व्यक्ति काफी मददगार साबित होगा। माह के उत्तरार्ध में सिंह राशि के जातकों का मन धर्म-अध्यात्म में खूब रमेगा। इस दौरान किसी धार्मिक स्थान पर जाने या फिर किसी धार्मिक कार्यक्रम में सहभागिता का अवसर प्राप्त होगा। परीक्षा-प्रतियोगिता की तैयारी में जुटे छात्रों को शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। इस दौरान भूमि-भवन, वाहन आदि की प्राप्ति के योग बनेंगे। प्रेम संबंध की दृष्टि से यह सप्ताह अनुकूल है। लव पार्टनर के साथ प्रेम और विश्वास बढ़ेगा। परिवार के संग हंसी-खुशी समय बिताने के अवसर प्राप्त होंगे। दांपत्य जीवन सुखमय बना रहेगा।

कन्याः

कन्या राशि के जातकों के लिए माह की शुरुआत में नौकरीपेशा व्यक्ति को कामकाज से जुड़ी कुछेक मुश्किलें आ सकती हैं। काम में आने वाली अड़चन के साथ सेहत भी आपकी परेशानी का बड़ा सबब बन सकती है। व्यवसाय से जुड़े लोगों को बाजार में अपनी साख को बनाए रखने के लिए अपने कंपटीटर से कड़ा मुकाबल ा करना पड़ सकता है। कन्या राशि के जातकों को इस पूरे माह किसी भी प्रकार के जोखिम भरे निवेश से बचना चाहिए। यदि आप पार्टनरशिप में व्यवसाय करते हैं तो भूलकर भी दूसरों के भरोसे

अपना कारोबार न छोड़ें अन्यथा आपको खासा आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है। माह के मध्य का समय आपके लिए राहत भरा सकता है। इस दौरान आपके शुभचिंतक, मित्र और परिजन आपके लिए काफी मददगार साबित हो सकते हैं। प्रेम संबंध में सावधानी के साथ कदम आगे बढ़ाएं और अपने साथी के प्रति ईमानदार रहें अन्यथा न सिर्फ बने बनाए संबंध टूट सकते हैं बल्कि आपको बदनामी भी झेलनी पड़ सकती है।

तुला :

तुला राशि के जातकों के लिए अप्रैल का महीना मिलाजुला रहने वाला है। इस दौरान आपके विरोधी आपके मान-सम्मान को ठेस पहुंचाने का काम कर सकते हैं। किसी बात को लेकर अपनों की नाराजगी भी झेलनी पड़ सकती है। इस महीने आप किसी से कोई ऐसा वादा न करें जिसे पूरा करने के लिए आपको बाद में बड़ी परेशानी का सामना करना पड़े। पारिवारिक मसले आपसी सहमति से सुलझेंगे। प्रोफेशनल काम करने वालों के लिए यह समय विशेष रूप से शुभ रहने वाला है। विभिन्न स्रोतों से धन की प्राप्ति होगी लेकिन साथ ही साथ खर्च भी खूब होगा। वैवाहिक जीवन सुखमय बना रहेगा।

वृश्चिकः

अप्रैल महीने की शुरुआत में घर-परिवार से जुड़े मसले आपकी परेशानी का सबब बनेंगे। इस दौरान आपको अपने कागज संबंधी काम सही रखना होंगे अन्यथा बेवजह की परेशानियां झेलनी पड़ सकती हैं। यदि आप किसी नई योजना पर काम करने की सोच रहे हैं तो आपको उसे जल्दबाजी में शुरु करने की बजाय सही समय आने का इंतजार करना उचित रहेगा। अप्रैल महीने के मध्य का समय आपके लिए थोड़ा राहत भरा रह सकता है। करियर-कारोबार में अनुकूलता बनी रहेगी। नौकरीपेशा लोगों की आमदनी के साधनों में वृद्धि होगी। अचानक धन प्राप्ति योग प्रबल है। किसी योजना या फिर बाजार में फंसा पैसा अप्रत्याशित रूप से निकल आएगा। प्रेम-प्रसंग के मामले में अनुकूलता बनी रहेगी। एकल जीवन जी रहे लोगों का माह के मध्य में विपरीत लिंगी व्यक्ति के प्रति आकर्षण बढ़ेगा।

धनुः

माह के दूसरे सप्ताह में धन लाभ के योग बनेंगे। इस दौरान नौकरीपेशा लोगों की अतिरिक्त आय के स्रोत बनेंगे और उनके संचित धन में वृद्धि होगी। उत्सव आदि में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। समाजसेवा से जुड़े लोगों के मान-सम्मान में वृद्धि होगी। माह के मध्य में आपके सोचे हुए कार्य समय पर पूरे होंगे। नौकरीपेशा लोगों के अधिकारी उनके कामकाज को लेकर संतुष्ट रहेंगे। युवाओं का अधिकांश समय मौज-मस्ती करते हुए बीतेगा। माह के उत्तरार्ध में आपको अपनी वाणी और व्यवहार पर बहुत ज्यादा नियंत्रण रखने की जरूरत होगी क्योंकि उसी के जरिए आपके काम बनेंगे भी और बिगड़ेंगे भी। प्रेम संबंध के लिए यह माह मिलाजुला रहने वाला है। शादीशुदा लोगों को अपने जीवनसाथी की भावनाओं को इग्नोर नहीं करना चाहिए।

मकरः

यदि आप नौकरीपेशा व्यक्ति हैं तो आपके सिर पर इस माह कामकाज का अतिरिक्त बोझ आ सकता है, जिसे पूरा करने के लिए अधिक परिश्रम और प्रयास करना होगा। कार्यक्षेत्र में परिश्रम के अनुपात में कम फल की प्राप्ति होगी। शारीरिक थकान या फिर पेट संबंधी परेशानियां झेलनी पड़ सकती हैं। माह के मध्य में खुद की सेहत के साथ घर के किसी बुजुर्ग की सेहत भी आपकी चिंता का विषय बनेगी। यदि आप भूमि-भवन या वाहन खरीदने का प्लान कर रहे हैं तो इसके लिए अप्रैल महीने के उत्तरार्ध का समय ज्यादा शुभ रहेगा। इस दौरान यदि आप परिजन को विश्वास में लेकर उनके सहयोग और समर्थन से कोई बड़ा फैसला लेते हैं तो उसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। प्रेम-प्रसंग के लिए यह समय आपके लिए ज्यादा अनुकूल रहने वाला है। पति-पत्नी के बीच संबंध मधुर बने रहेंगे।

कुंभः

कुंभ राशि के जातकों के लिए अप्रैल महीने की शुरुआत थोड़ी चुनौती भरी रह सकती है। इस नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में सीनियर और जूनियर का सहयोग कम मिल पाएगा तो वहीं विरोधी षडयंत्र रचते हुए नजर आएंगे। उच्च शिक्षा या फिर विदेश में जाकर पढ़ाई करने की कामना में विलंब हो सकता है। इस दौरान आपके सामने कुछेक बड़े खर्च सामने आ सकते हैं, जिसके कारण आपका बना-बनाया बजट गड़बड़ा सकता है। इस दौरान अपने कारोबार पर विशेष ध्यान दें और किसी के बहकावे में आकर पास के फायदे में दूर का नुकसान करने की गलती न करें। रिश्ते-नाते की दृष्टि से माह का पूर्वार्ध थोड़ा चिंताजनक रह सकता है। इस दौरान संतान या परिवार के किसी अन्य सदस्य के साथ मतभेद हो सकता है। यदि आप अपने प्रेम संबंध को विवाह में तब्दील करना चाह रहे थे तो माह के उत्तरार्ध में परिजन इसके लिए स्वीकृति दे सकते हैं। इस दौरान आपको अपनी किसी भी मनोकामना को पूरा करने के लिए पिता या किसी वरिष्ठ व्यक्ति का पूरा समर्थन और सहयोग मिलेगा। आपका जीवनसाथी कठिन समय में आपका संबल बनेगा।

मीनः

महीने की शुरुआत में आपको अपनी सेहत और संबंध आदि को लेकर बहुत ज्यादा सतर्क रहने की आवश्यकता रहेगी। इस दौरान किसी बात को लेकर स्वजनों के साथ मतभेद या बहस हो सकती है। जिससे बचने के लिए आपको अपनी वाणी और व्यवहार पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता रहेगी। नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में अपने विरोधियों से खूब सतर्क रहना होगा क्योंकि वे आपके काम में बाधा डालने और आपकी छवि को धूमिल करने के लिए साजिश रच सकते हैं। हालांकि कठिन समय में आपके सीनियर और आपके शुभचिंतक सहयोगी आपके साथ खड़े रहेंगे। दिसंबर महीने के दूसरे सप्ताह में घर की किसी महिला सदस्य की सेहत को लेकर आपका मन चिंतित रहेगा। माह के मध्य में नौकरीपेशा लोगों को बड़ा शुभ समाचार मिल सकता है। मनचाहे पद या तबादले की कामना पूरी हो सकती है। बेरोजगार लोगों को रोजगार की प्राप्ति हो सकती है। यदि आप अभी तक सिंगल हैं तो आपके जीवन में मनचाहे व्यक्ति की इंट्री हो सकती है। प्रेम संबंध के लिए यह माह आपके लिए अनुकूल रहने वाला है। लव पार्टनर के साथ आपकी अच्छी ट्यूनिंग बनी रहेगी और उसके साथ आपके रिश्ते प्रगाढ़ होंगे। इस दौरान घर में विशेष धार्मिक अनुष्ठान अथवा तीर्थ यात्रा के योग बनेंगे। माह के उत्तरार्ध में आपके सोचे हुए कार्य समय पर पूर होंगे, जिसके कारण आपके भीतर अलग ही उत्साह और उर्जा बनी रहेगी, लेकिन इस दौरान आपको जोश में आकर होश खोने तथा किसी से गलत व्यवाहार करने से बचना होगा।

अलीबाग समुद्र के तट पर बसा एक बहुत सुंदर और छोटा-सा शहर है। यह महाराष्ट्र में सपनों की नगरी मुंबई के पास स्थित है। क्षेत्र के लिहाज से देखें तो रायगढ़ जिले के कोंकण क्षेत्र में आता है अलीबाग। भीड़भाड़ वाले शहरों के शोर से दूर, अपने रिश्ते में नई ताजगी भरने के लिए कपल अलीबाग आते हैं। यहां देखने के लिए बहुत कुछ है, जहां आप साथ में यादगार समय बिता सकते हैं।

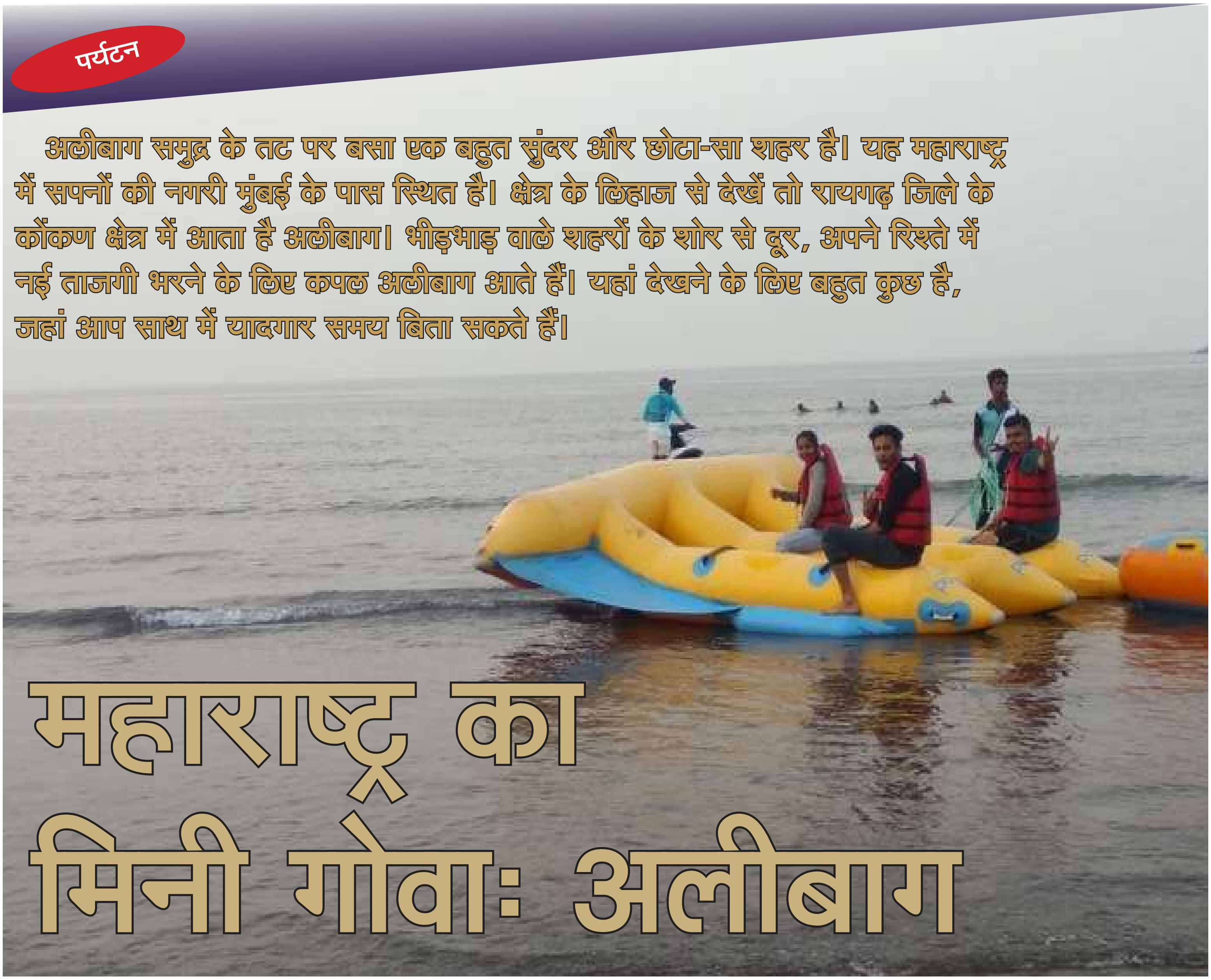

महाराष्ट्र का मिनी गोवाः अलीबाग

'मिनी-गोवा' के नाम से फेमस 'अलीबाग' महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र में बसा एक छोटा सा तटीय (Coastal) शहर है, जो पर्यटकों के बीच वीकेंड के लिए काफी फेमस है। औपनिवेशिक इतिहास में डूबा शहर अलीबाग मुंबई से लगभग ११० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जो अपने रेतीले समुद्र तटों, साफ हवा, कई मंदिरों और किलों के लिए प्रसिद्ध है। अलीबाग एक छोटा शहर होने के बाद भी अपने पर्यटकों को कभी निराश नहीं करता। अलिबाग़ के प्रमुख पर्यटक स्थल में से एक अलीबाग बीच एक ऐसी जगह है जहाँ आप अपने फ्रेंड्स, फैमली या कपल के साथ बीच के किनारे टाइम स्पेंड करने के साथ साथ बिभिन्न वाटर स्पोर्ट्स एक्टिविटीज जैसे कयाकिंग, जेट स्की, स्कूबा डाइविंग भी एन्जॉय कर सकते है। बता दे अलिबाग़ बीच को भारत के सबसे प्रसिद्ध समुद्र तटो में से माना जाता है, जिससे इस बीच की पॉपुलैरिटी का अंदाजा लगाया जा सकता है यही कारण की यह बीच अलीबाग में घूमने के सबसे अच्छी जगहें में बेस्ट जगह मानी जाती है और हर साल लाखो टूरिस्ट्स को अपनी तरफ अट्रेक्ट करने में कामयाब होती है।

अरब सागर के पानी से घिरा हुआ 'कोलाबा किला या अलीबाग फोर्ट' अलीबाग के प्रसिद्ध पर्यटक स्थल में से एक है। कोलाबा फोर्ट एक ३०० साल पुराना किला है, जो कभी शिवाजी महाराज के शासन के दौरान मुख्य नौसेना स्टेशन था। इस वजह से किले को राष्ट्रीय संरक्षित स्मारक के रूप में भी घोषित किया गया है। किले के अंदर की दीवारें, जानवरों और पक्षियों की नक्काशी जैसे ऐतिहासिक कलाकृतियों और अवशेषों से युक्त है, किले के अन्दर प्राचीन मंदिर भी मौजूद है, जिन्हें आप कोलाबा फोर्ट की यात्रा में देख सकेगें। इनके साथ साथ किले के उपर से अरब सागर के सुंदर दृश्यों को देखा जा सकता है, जो टूरिस्ट को काफी अट्रेक्ट करते है।

अलीबाग बस डिपो से लगभग ३ किमी की दूरी पर स्थित 'वर्सोली बीच' घूमने के लिए सबसे अलीबाग के आकर्षक स्थल में से एक है। अलीबाग में सबसे साफ समुद्र तट माना जाने वाला वर्सोली बीच सफेद रेतीले तट के साथ, प्राकृतिक सुन्दरता से सुसज्जित है, जो प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग के समान माना जाता है।

यह बीच अपनी मनमोहनीय सुन्दरता के साथ साथ बीच के किनारे स्थित रिसॉर्ट्स, कॉटेज और होटल के लिए प्रसिद्ध भी है, जो पर्यटकों को एक आरामदायक और शाही यात्रा प्रदान करते है। इनके अलावा टूरिस्ट यहाँ बिभिन्न प्रकार के वाटर स्पोर्ट्स एक्टिविटीज को भी एन्जॉय कर सकते है, यही वजह है की वर्सोली बीच

अलीबाग में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहें में से एक बना हुआ है।

'मुरुद-जंजीरा किला' अलीबाग से ५५ किमी की दूरी पर मुरुद गाँव के तटीय क्षेत्र में एक छोटे से द्वीप पर स्थित है। किले के उपर से धूप का आनंद लेने लायक है, जो कपल्स को काफी अट्रेक्ट भी करता है। यह किला मूल रूप से एक लकड़ी का ढांचा था, जिसे बाद में १७ वीं शताब्दी में सिदी सिरुल खान द्वारा पुनर्निर्मित किया गया था। जिसमे लगभग ३०-४० फीट ऊंचे २३ गढ़ हैं, जो आज भी मौजूद हैं। रेतीले तट से दूर मुरुद-जंजीरा किला एक छोटी नाव की सवारी करते हुए पहुंचा जा सकता है, यह शानदार किला न केवल अतीत की झलक देती है, बल्कि अरब सागर के चारों ओर का शानदार दृश्य भी पेश करता है, यक़ीन माने यह नज़ारे आपको बेहद आकर्षित करेगें। यदि आप अपनी अलीबाग ट्रिप में वाटर स्पोर्ट्स एन्जॉय करने के लिए अलीबाग की बेस्ट जगहें सर्च कर रहे है, तो हम आपको बता दे वाटर स्पोर्ट्स एक्टिविटीज एन्जॉय करने के लिए नैगांव बीच बेस्ट ऑप्सन है। नैगांव बीच लगभग ३ किलोमीटर लंबा समुद्र तट है, जहाँ टूरिस्ट स्नॉर्कलिंग और स्कूबा डाइविंग जैसी कुछ रोमांचक एक्टिविटीज में शामिल हो सकते हैं।

यहाँ आप नीले नीले पानी में स्कूबा डाइविंग से रंग बिरंगी को मछलीयों को देख सकते है जो यकीनन आपकी लाइफ के सबसे यादगार लम्हों में से एक हो सकता है। नैगांव बीच की यात्रा में आप बिभिन्न वाटर स्पोर्ट्स एन्जॉय करने के साथ साथ सुनहरी रेत पर टहल सकते है और शाम के समय नारंगी रंग के साथ सनसेट के अद्भुद नजारों को देख सकते है।

रेवास जेट्टी अलीबाग की यात्रा में घूमने के लिए एक और पसंदीदा जगह है, यह जगह जेट्टी नाव और बोटिंग एक्टिविटीज के लिए प्रसिद्ध है, जो पर्यटकों की बड़ी संख्या को अट्रेक्ट करने में कामयाब होती है।

बता दे रेवास जेट्टी से उरण को भी देखा जा सकता है जो नवी मुंबई का एक हिस्सा है। जेट्टी के पास अलीबाग के कई भव्य बंगले और विला भी हैं, जहाँ आप अपनी यात्रा में ठहर सकते है और यहाँ के सुंदर दृश्यों और एक्टिविटीज को एन्जॉय कर सकते है। यह जगह टूरिस्ट्स के साथ साथ कपल्स को भी काफी आकर्षित करती है, जहाँ सुंदर नज़ारे और बोट राइड को एन्जॉय करते हुए देखे जाते है। रेवास जेट्टी में घूमने के लिए कोई एंट्री फीस नही है, लेकिन यदि आप बोटिंग या जेट्टी की सवारी करना चाहते है तो उसके लिए आपको एक निश्चित अमाउंट पे करना होगा।

अलीबाग समुद्र तट से एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित रायगढ़ बाजार अलीबाग पर्यटन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। रायगढ़ मार्किट एक ऐसा प्लेस है, जो अपने विभिन्न हस्तशिल्प, कपड़े और अन्य सामानों के कारण भारी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करता है। अपनी ट्रिप को मेमोरिबल बनाने के लिए रायगढ़ मार्किट में शोपिंग के लिए अवश्य जाएँ, क्योंकि यहाँ शोपिंग किये बिना अलीबाग की यात्रा को अधूरा माना जाता है। हरे भरे पेड़ पौधों, प्राकृतिक सुन्दरता और कुछ वन्य जीव प्रजातियों से परिपूर्ण 'कनकेश्वर वन' अलीबाग के प्रमुख पर्यटक आकर्षण में से एक है। जब भी आप कनकेश्वर वन घूमने जायेंगे तो आप यहाँ सांप, पैंथर, तेंदुए, जंगली सूअर जैसे कुछ वन्य जीवो को घूमते हुए देख सकते है। इनके अलावा पर्यटक इस विशाल सदाबहार जंगल में शिविर और ट्रेकिंग जैसी विभिन्न साहसिक एक्टिविटीज को एन्जॉय भी कर सकते है। इन्ही आकर्षणों के कारण यह खुबसूरत जगह बड़ी संख्या में पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करती है जो निसंदेह अलीबाग में घूमने के लिए खूबसूरत जगह में से एक है।

मर्डर

मॉडल दिव्या पाहुजा मर्डर केसः

हत्या के ८८ दिन बाद पुलिस ने अदालत में चार्जशीट पेश की

मॉडल दिव्या पाहुजा की गोली मारकर हत्या के ८८ दिन बाद सीआईए सेक्टर १७ की पुलिस ने गिरफ्तार आरोपियों के खिलाफ चीफ ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट अनिल शर्मा की अदालत में चार्जशीट पेश कर दी है। इसमें मॉडल दिव्या पाहुजा की नशे में हुई नोक-झोंक के दौरान होटल मालिक अभिजीत की ओर से गोली मार कर हत्या करने की बात कही गई है। बस स्टैंड के पास तीन जनवरी की रात सिटी प्वाइंट होटल में गोली मारकर मॉडल दिव्या पाहुजा की हत्या कर दी गई थी। उसके बाद उसके शव को होटल मालिक के दोस्त बलराज ने पंजाब से निकल ने वाली भाखड़ा नहर में फेंक दिया था। उसके बाद सेक्टर १४ थाना पुलिस ने हत्या के मुख्य आरोपी होटल मालिक अभिजीत को मौके पर गिरफ्तार किया था। पुलिस ने छानबीन के दौरान इस मामले में सात लोगों को गिरफ्तार किया था।

गिरफ्तार होने वालों में होटल मालिक का पीएसओ परवेश, उसकी गर्लफ्रेंड मेघा, होटल कर्मचारी हेमराज व ओम प्रकाश शामिल थे। हत्या के सबूत नष्ट करने के मामले में होटल मालिक के दोस्त बलराज व उसके एक अन्य साथी की भूमिका अहम बताई गई है। मॉडल दिव्या पाहुजा के शव को ठिकाने लगाने के बाद उसके दोस्त वहां पर बीएमडब्ल्यू छोड़कर फरार हो गए थे। २० दिन की फरारी के बाद पुलिस टीम ने उसे कोलकाता के एयरपोर्ट से गिरफ्तार किया था। जिसके बाद उसकी निशानदेही पर दिव्या पाहुजा का शव टोहना नहर से बरामद किया गया है।

मॉडल दिव्या पाहुजा की बहन ने सेक्टर १४ थाने में दर्ज कराई एफआईआर में गैंगस्टर संदीप गाड़ौली के भाई ब्रह्म और बहन पर हत्या की साजिश रचने का आरोप लगाया था। पुलिस ने हत्या की जांच पूरी कर ली है। सात लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है। इसमें अब तक गैंगस्टर परिवार की भूमिका सामने नहीं आई है। पुलिस टीम अपनी जांच पूरी करने के लिए दोनों को नोटिस देकर जांच में शामिल करेगी। उनकी ओर से बयान दर्ज कर अदालत में पेश किया जाएगा।

पुलिस की जांच के दौरान होटल संचालक अनूप को भी नोटिस जारी किया गया है। उसकी ओर से मौके पर पहुंची पुलिस टीम को गुमराह करने का आरोप है। पुलिस उसका भी बयान दर्ज करेगी। उस पर आरोप है कि अगर उसने जांच में पहले पुलिस टीम की मदद की होती तो दिव्या पाहुजा का शव शहर से बाहर न गया होता।

सिटी प्वाइंट होटल के मालिक अभिजीत को अवैध हथियार रखने का शौक था। उसका पीएसओ रोहतक का रहने वाला परवेश था। जिस पर रोहतक में एक दर्जन से अधिक आपराधिक मामले दर्ज हैं। पुलिस को छानबीन के दौरान पता चला कि उसे अवैध हथियार की आपूर्ति नदीम करता था। हत्याकांड में सात लोगों की गिरफ्तारी के बाद केवल एक गिरफ्तारी बच रही है। पुलिस टीम नदीम की तलाश में छापेमारी कर रही है। -साभारः अमर उजाला

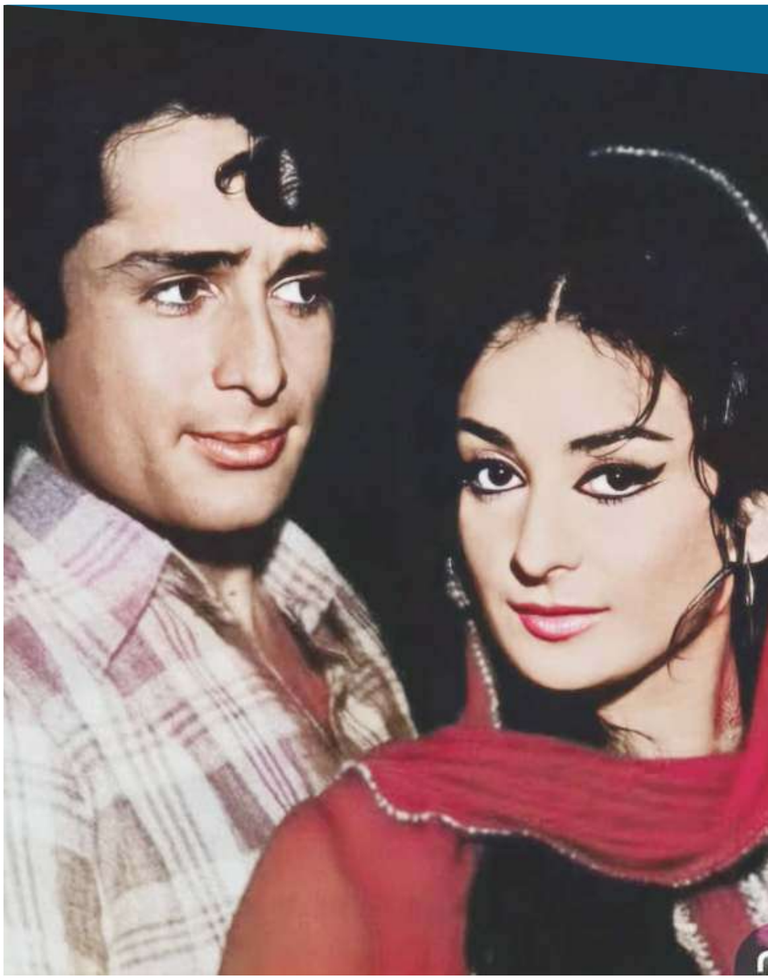

शशि कपूर संग डेब्यू करना चाहती थीं सायरा बानो

दिग्गज अदाकार सायरा बानो ने एक किस्सा फैंस के साथ शेयर किया. उन्होंने शशि कपूर के साथ की हुई फिल्मों से कुछ चुनिंदा तस्वीरें शेयर की. सायरा ने खुलासा किया कि शुरुआत में, वह यश चोपड़ा की १९६१ की फिल्म 'धर्मपुत्र' में शशि कपूर के साथ डेब्यू करने वाली थीं. लेकिन इसमें माला सिन्हा को कास्ट कर लिया गया. सायरा बानो और शशि कपूर ने पहली बार साल १९६७ में आई फिल्म 'शागिर्द' में काम करने वाले थे, लेकिन लीड हीरो का रोल जॉय मुखर्जी को मिल गया. उनसे बार-बार मौका छिनता गया फिर..., सायरा बानो ने आगे लिखा कि उनके फिल्में हिट और फ्लॉप होने के बीच वह शशि कपूर से मिलते रहीं. उनकी शूटिंग अक्सर एक ही स्टूडियो में होती थी, जहां शशि और वो अक्सर मिल जाते थे. कई बार दोनों मेकअप रूम में लंच करते थे.

जब 25,000 लोगों की भीड़ से घिरे सलमान...

सलमान खान से जुड़े इस किस्से का जिक्र हाल ही में डायरेक्टर कबीर खान ने किया. एक इंटरव्यू के दौरान उन्होंने साल २०१५ का वो किस्सा याद किया, जब वह फिल्म 'बजरंगी भाईजान' की शूटिंग कर रहे थे.कबीर ने कहा,' वो दिल्ली में हमारा पहला दिन था. जामा मस्जिद के बाहर सलमान के साथ शूटिंग की. अगले दिन, जब वे चांदनी चौक में शूटिंग कर रहे थे, तो २५,००० लोगों की भीड़ जमा हो गई थी.' हमें नहीं पता था कि बाहर क्या हो रहा है. पुलिस आई, सहायक पुलिस आयुक्त, और उन्होंने कहा 'आप नहीं जानते कि बाहर क्या हो रहा है, लेकिन आप २५,००० लोगों से घिरे हुए हैं. इसलिए तुम यह जगह छोड़ नहीं पाओगे. क्योंकि हर कोई जानता है कि यहां सलमान खान काम कर रहे हैं. इसके बाद उन्होंने खुलासा किया कि कैसे फिल्म सलमान खान को बाहर निकाला गया. उन्होंने बताया कि फिर कुछ 'डिकॉय कारें' लानी पड़ीं और सलमान को इलाके से बाहर निकालने के लिए उन्हें उनमें से एक कार में छिपाना पड़ा. इसके साथ कुछ नकली कारें, कुछ इनोवा लानी पड़ीं, हमें सलमान को कार में छिपाना पड़ा, सलमान को उस जगह से निकालने का दूसरा रास्ता ढूंढना पड़ा, तब जाकर चांदनी चौक की उस गली को हम छोड़ सके. कबीर ने कहा कि हमारे आसपास २५,००० लोग थे. हम बाहर आसानी से जा ही नहीं सकते थे. ये २५००० लोगों की भीड़ भाईजान के लिए थी और ये उनका स्टारडम है.

व्यक्तित्व

2024 में वे कंधमाल के पुनः सांसद बनकर अपने लोकसेवा के बचे सभी कार्यों को अवश्य पूरा करेंगे

अच्युत सामंत ने मुख्यमंत्री नवीन पटनायक तथा ५ टी संग नवीन ओडिशा के चेयरमैन कार्तिक पाण्डियन के प्रति जताया आभार

ओड़शा की राजधानी भुवनेश्वर स्थित कीट-कीस के संस्थापक तथा २०१९ से आदिवासी बाहुल्य कंधमाल के सांसद प्रो.अच्युत सामंत को ओड़िशा बीजू जनता दल ने उनकी निःस्वार्थ लोकसेवा का आकलनकर तथा उनपर विश्वासकर उन्हें २०२४ लोकसभा चुनाव के लिए अपने दल से पुनः उम्मीदवार बनाया है। यह जानकारी मिलते ही अच्युत सामंत ने ओड़िशा के माननीय मुख्यमंत्री तथा बीजू जनता दल सुप्रीमो नवीन पटनायक तथा ५टी संग नवीन ओड़शा के चेयरमैन कार्तिक पाण्डियन के प्रति अपना हार्दिक आभार जताया है। गौरतलब है कि पिछले लगभग पांच सालों में कंधमाल संसदीय क्षेत्र का सर्वांगीण विकास कृषि, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सेल्फहेल्प आदि क्षेत्रों में खूब हुआ है। सांसद अच्युत सामंत ने वहां के लगभग एक लाख युवाओं रोजगार दिया है। ओड़िशा में सबसे अच्छी किस्म की हल्दी उत्पादन करनेवाले कंधमाल में एमडीएच कंपनी के सौजन्य से हल्दी का प्लांट लगाया है। भुवनेश्वर स्थित अपने विश्व विख्यात कीस की नई शाखा खोली है। महिला सशक्तिकरण

पिछले लगभग पांच सालों में कंधमाल संसदीय क्षेत्र का सर्वांगीण विकास कृषि, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सेल्फहेल्प आदि क्षेत्रों में खूब हुआ है। सांसद अच्युत सामंत ने वहां के लगभग एक लाख युवाओं रोजगार दिया है। ओड़िशा में सबसे अच्छी किस्म की हल्दी उत्पादन करनेवाले कंधमाल में एमडीएच कंपनी के सौजन्य से हल्दी का प्लांट लगाया है। भुवनेश्वर स्थित अपने विश्व विख्यात कीस की नई शाखा खोली है। महिला सशक्तिकरण किया है। कंधमाल को चहुंमुखी विकास के साथ जोड़ दिया है। पर्यटन को विकसित किया है। कंधमाल की जनता के लिए पानी, बिजली, आवास आदि जैसी समस्त सुविधाएं ओड़िशा के माननीय मुख्यमंत्री नवीन पटनायक एवं ५ टी संग नवीन ओड़िशा के चेयरमैन कार्तिक पाण्डियन के अभूतपूर्व सहयोग से पूरा किया है। अच्युत सामंत ने बताया कि उनको अपने संसदीय क्षेत्र कंधमाल के लिए और भी बहुत कुछ करना है जिसके लिए पार्टी सुप्रीमो मुख्यमंत्री नवीन पटनायक तथा ५ टी संग नवीन ओड़िशा के चेयरमैन कार्तिक पाण्डियन ने उसपर विश्वासकर उन्हें लगातार दूसरी बार सांसद के नामांकित किया है उससे वे बहुत खुश हैं।

किया है। कंधमाल को चहुंमुखी विकास के साथ जोड़ दिया है। पर्यटन को विकसित किया है। कंधमाल की जनता के लिए पानी, बिजली, आवास आदि जैसी समस्त सुविधाएं ओड़िशा के माननीय मुख्यमंत्री नवीन पटनायक एवं ५ टी संग नवीन ओड़िशा के चेयरमैन कार्तिक पाण्डियन के अभूतपूर्व सहयोग से पूरा किया है। अच्युत सामंत ने बताया कि उनको अपने संसदीय क्षेत्र कंधमाल के लिए और भी बहुत कुछ करना है जिसके लिए पार्टी सुप्रीमो मुख्यमंत्री नवीन पटनायक तथा ५ टी संग नवीन ओड़िशा के चेयरमैन कार्तिक पाण्डियन ने उसपर विश्वासकर उन्हें लगातार दूसरी बार सांसद के नामांकित किया है उससे वे बहुत खुश हैं।

यहां पर सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि भुवनेश्वर में प्रो.अच्युत सामंत ने १९९२-९३ में मात्र कुल पांच हजार की जमा पूंजी से कीट-कीस की स्थापना की थी आज वही कीट-कीस विश्वविख्यात दो डीम्ड विश्वविद्यालय बन चुके हैं। दोनों विश्वविद्यालयों में लगभग एक लाख युवा उत्कृष्ट शिक्षा पा रहे हैं। प्रो.अच्युत सामंत का कीट अगर एक कार्पोरेट है तो कीस उसका सामाजिक दायित्व है क्योंकि कीस विश्वविद्यालय विश्व का प्रथम आदिवासी आवासीय संस्थान जहां पर प्रतिवर्ष लगभग ४०,००० आदिवासी बच्चे समस्त आवासीय सुविधाओं बिल्कुल फ्री उपभोगकर केजी कक्षा से लेकर पीजी कक्षा तक पढ़ते हैं तथा अपने व्यक्तित्व का सम्यक विकास करते हैं। चार चार ओलंपियन तैयार करनेवाली भारत की एकमात्र शैक्षिक संस्थान कीट-कीस ही है जिनके संस्थापक प्रो.अच्युत सामंत हैं। वे आदिवासी समुदाय के जीवित मसीहा हैं। वे संतों के भी संत हैं क्योंकि उनका विदेह जीवन पूरी तरह से आध्यात्मिक जीवन है।

-अशोक पाण्डेय

कीस डीम्ड विश्वविद्यालय को मिला एन ए ए सी का 'ए' ग्रेड का दर्जा

भुवनेश्वर, २२ मार्चः कीस डीम्ड-टू-बी-यूनिवर्सिटी को राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा मान्यता के पहले चक्र में 'ए' ग्रेड के रूप में मान्यता दिया गया है। एन ए ए सी द्वारा मान्यता प्राप्त करने के अपने पहले ही प्रयास में यह उपलब्धि हासिल करने वाला कीस विश्वविद्यालय देश का पहला संस्थान है। एन ए ए सी द्वारा 'ए' ग्रेड मान्यता KISS विश्वविद्यालय में शिक्षा की गुणवत्ता और शैक्षणिक उत्कृष्टता के प्रति समर्पण का प्रमाण है। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने २०१७ में कीस को विश्वविद्यालय का दर्जा दिया था।

कीस और कीट के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत ने कहा, यह आदिवासी बच्चों के लिए हमारे पूरी तरह से निःशुल्क, आवासीय विद्यालय के लिए एक शैक्षणिक शिखर का प्रतीक है। यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि कीस को २०१७ में डीम्ड यूनिवर्सिटी स्टेटस की मान्यता के बाद अपने पहले चक्र में एन ए ए सी 'A' ग्रेड मिला है। उसने कहा, कीस दुनिया का एकमात्र विश्वविद्यालय है जो आदिवासी छात्रों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करता है। अकादमिक समुदाय ने इस उपलब्धि को हासिल करने पर खुशी और गर्व व्यक्त किया है, इस मान्यता का श्रेय डॉ. सामंत, उनके समर्पण और दृढ़ता को दिया है।

यह मान्यता गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। समय पर आवेदन और एन ए ए सी द्वारा 'ए' ग्रेड संस्थान के रूप में सफल मान्यता को कीस विश्वविद्यालय के लिए एक बड़ी उपलब्धि माना जाता है। डॉ. सामंत ने कीस विश्वविद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों, छात्रों और समर्थकों को उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया, जिन्होंने इस सम्मान को प्राप्त करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस सफलता से विश्वविद्यालय से जुड़े छात्रों, शिक्षकों, कर्मचारियों और आदिवासी समुदायों में खुशी की लहर दौड़ गई है।

A Grade

by National Assessment and Accreditation Council (NAAC)

KISS

KALINGA INSTITUTE OF SOCIAL SCIENCES

कीट-कीस के संस्थापक प्रो.अच्युत सामंत ने मनाई अपने स्व.पिता अनादिचरण समांत की पुण्यतिथि

राजधानी भुवनेश्वर स्थित कीट-कीस दो डीम्ड विश्वविद्यालयों के संस्थापक तथा कंधमाल लोकसभा सांसद प्रो. अच्युत सामंत ने १९मार्च को अपने भुवनेश्वर के नयापली के आईआरसी विलेज के किराये के मकान में दिन में अपने स्व.पिता अनादिचरण सामंत की पुण्यतिथिब्राह्मणभोजआदि आयोजित कर मनाई। उन्होंने स्वयं अपने हाथों से अपने पिता के लिए साग-भात पकाया और अपने घर के उत्र दिशा में सनातनी विधि-विधान से कौओं को खिलाया। आत्मागौरतलब है कि १९६९ में जब प्रो. अच्युत सामंत मात्र चार के नवजात शिशु थे तभी एक रेल दुर्घटना में उनके पिताजी का असामयिक निधन हो गया।उनकी विधवा मां स्व. नीलिमारानी सामंत ने गन्ने से गूड़ निकालकर तथा दूसरों के घरों में चौका-बरतनकर प्रो सामंत सहित अपने अन्य चार संतानों की परवरिश की और उन्हें पढ़ाया-लिखारकर उन्हें नेक इंसान बनाया। सच कहा जाय तो प्रो सामंत का शैशवकाल घोर आर्थिक संकटों में गुजरा। उन्होंने ब्राह्मण भोज के उपरांत उन्हें यह बताया कि उनके पिताजी आजीवन सच के रास्ते पर चल कर जीवन जीने की बात उन्हें बताये हैं और वे उसका अक्षरशः पालन करते हैं। कीट-कीस जगन्नाथ मंदिर समेत कुल लगभग १०० ब्राह्मणों ने आज ब्राह्मण भोज किया तथा प्रो. सामंत को निःस्वार्थ समाजसेवी तथा तेजस्वी होने का आशीर्वाद दिया।

आयोजित किया ब्राह्मणभोज

वृंदावन के मशहूर माधवा रॉक बैण्ड के संग मारवाड़ी सोसायटी,भुवनेश्वर ने मनाया अपना राजस्थानी परम्परागत होली बंधुमिलन

२८ मार्च को होली की शाम स्थानीय यूनिट-३ प्रदर्शनी मैदान में मारवाड़ी सोसायटी,भुवनेश्वर ने वृंदावन के मशहूर माधवा रॉक बैण्ड के संग अध्यक्ष संजय ल ाठ के कुशल नेतृत्व में अपना राजस्थानी परम्परागत होली बंधुमिलन मनाया। बंधुमिलन में लगभग सात हजार मारवाड़ी भाई-बहनों ने अल्पाहार के साथ -साथ रात्रिभोज किया। कटक, जटनी और भुवनेश्वर के आमंत्रित मारवाड़ी बंधुओं ने भी पधारकर आयोजन को पूरी तरह से सफल बना दिया। सभी आमंत्रित मेहमानों का स्वागत राजस्थानी पगड़ी पहनाकर किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ गणेशवंदना के साथ परम्परागत दीपप्रज्ज्वल के साथ हुआ।

होली आयोजन कमेटी के चेयरमैन चेतन कुमार टेकरीवाल ने अपने स्वागतभाषण में मारवाड़ी सोसायटी,भुवनेश्वर के उद्भव और विकास की विस्तृत जानकारी देते हुए साठ के दशक से मारवाड़ी समाज को हरप्रकार से आगे बढ़ानेवाले बड़े-बुजुर्गों के प्रति आभार जताया। साथ ही साथ उन्होंने आयोजन को सफल बनाने में आर्थिक सहयोग करनेवाले दाताओं को भी शुक्रिया कहा। सोसायटी के अध्यक्ष संजय लाठ ने अपने भाषण में सबसे पहले तो सेवाभाव से समर्पित अपनी पूरी टीम के अथक प्रयासों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सोसायटी के महासचिव जितेंद्र मोहन गुप्ता, कोषाध्यक्ष सीए सुरेन्द्र अग्रवाल,उपाध्यक्ष शिवकुमार अग्रवाल,संरक्षक सुभाष अग्रवाल,संरक्षक सुरेश अग्रवाल,रामावतार खेमका, आशीष रुंगटा,अजय केजरीवाल, कैलाश अग्रवाल, विकास बथावल, शिवकुमार शर्मा, सुशील अग्रवाल, बिमल भूत, साकेत अग्रवाल,नीलम अग्रवाल,मनोज मोर,बछराज बेताला, आनंद पुरोहित,राधेश्याम शर्मा,पारस सुराणा के साथ-साथ उन सभी के प्रति आभार जताया जिनके अथक सहयोग से यह कार्यक्रम पूरी तरह से सफल रहा।

संजय लाठ ने अपने संदेश में यह बताया कि मारवाड़ी समाज भारतीय अर्थव्यवस्था का मेरुदण्ड है जिसमें मारवाड़ी सोसायटी, भुवनेश्वर तो निःस्वार्थसेवाभाव का पूरे भारत के लिए एक उदाहरण है। उन्होंने अपनी अपील में यह कहा कि हम मारवाड़ी समुदाय को आज यह संकल्प लेना होगा कि हम अगले तीन सालों में सबसे पहले अपना विकास करेंगे, अपने कारोबार का विकास करेंगे,मारवाड़ी समाज का विकास करेंगे तथा ओड़िशा प्रदेश सरकार को प्राकृतिक आपदाओं के समय तथा समय-समय पर जरुरत पड़ने पर सहयोग देंगे।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में काव्य संध्या आयोजित

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवसः २०२३ को ध्यान में रखकर भुवनेश्वर उत्कल अनुज हिंदी पुस्तकालय में ३ मार्च को सायंकाल काव्य संध्या कार्यक्रम आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता नीलम अग्रवाल, अध्यक्ष, मामस, भुवनेश्वर ने की। आयोजन की आरंभिक जानकारी देते हुए अशोक पाण्डेय ने बताया कि अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पहली बार १९११ में ८ मार्च को आयोजित किया गया था। अशोक पाण्डेय ने यह भी बताया कि आज का युग युवाओं और महिलाओं का युग है। आज भारत विश्व का एकमात्र ऐसा देश है जहां पर युवाओं और महिलाओं की संख्या सबसे अधिक है। एक समय था जब महिलाओं को पर्दे के अंदर रहना पड़ता था और वे घर की चार दीवारी में बंद रहकर खाना पकाने और खाना परोसने तक की जिंदगी जी रही थीं लेकिन आज २१वीं सदी इस बात की प्रत्यक्ष गवाह है कि भारत में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों के बराबर हो चुकी है। जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहां पर महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी नहीं हैं।

हिन्दी कवि विक्रमादित्य सिंह के नव्यतम प्रकाशित कविता संग्रह का लोकार्पण किया सुभाष चंद्र भुरा ने

१३ मार्च को सायंकाल स्थानीय गीतगोविंद सदन में राष्ट्रीय कवि संगम, खोर्द्धा इकाई की ओर से पुस्तक लोकार्पण तथा हिन्दी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया था जिसमें बतौर मुख्य अतिथि के रूप में ओड़िशा गृह निर्माण जगत के सिरमौर सुभाष चंद्र भुरा ने योगदान दिया।उन्होंने अपने संबोधन में कवि विक्रमादित्य सिंह के प्रकाशित नव्यतम कविता संग्रहः आधे-अधूरे हम-तुम को समसामयिक धरोहर बताया और कवि विक्रमादित्य सिंह को एक सफल हिन्दी कवि बताया जिन्होंने तुम और हम को आधा अधूरा बताया है और यह सच भी है।पुस्तक समीक्षा किशन खण्डेल वाल ने की।स्वागतभाषण दिया राष्ट्रीय कवि संगम के प्रांतीय अध्यक्ष नथमल चेनानी ने।

आयोजित हिन्दी कवितापाठ सम्मेलन में राष्ट्रीय कवि संगम के अनेक कवियों के साथ-साथ उत्कल अनुज हिन्दी पुस्तकालय के अनेक कवियों ने अपनी अपनी कविताओं का पाठ किया। विक्रमादित्य सिंह ने आमंत्रित और आगत सभी के प्रति आभार जताया । मंचसंचालन किया श्रीमती प्रतिभा कानु ने। कार्यक्रम के अंत में सभी ने मिलकर रात्रिभोज किया। आयोजन यादगार रहा।

हेल्थ फंडा

जरूरत बनते नेब्युलाइजर

बच्चों में सांस संबंधी समस्याएं ज्यादा दिखने लगी हैं। वे एलर्जी, एटोपी व अस्थमा जैसी समस्याओं से पहले की तुलना में ज्यादा जूझ रहे हैं। कुछ साल पहले तक बहुत कम सुनने में आने वाले इन्हेलर व नेब्युलाइजर घर-घर की जरूरत बनते जा रहे हैं। कम उम्र से ही इन पर बढ़ती निर्भरता और उससे जुड़ी कई शंकाओं के बारे में आइए जानते हैं...

अंरराष्ट्रीय अखबार द न्यूयॉर्क टाइम्स के तत्कालीन दक्षिण एशिया संवाददाता गार्डनर हैरिस भारत को किसी आम विदेशी पत्रकार की नजर से ही देखते, अगर वह उस अनुभव से नहीं गुजरते। एक रात अचानक उनके आठ साल के बेटे ब्रैम को सांस की तकलीफ होने लगी। वह दौरा बहुत तेज था और हर बीतते पल के साथ उसकी सांस तेज हो रही थी। आनन-फानन में उसे अस्पताल ले जाया गया।

जांच में पता चला कि उसका फेफड़ा ५० फीसदी तक कमजोर हो गया है। ब्रैम को दवाओं के साथ ही इन्हेलर और नेब्युलाइजर की जरूरत थी। अपने बेटे की गिरती दशा देखकर आखिरकार हैरिस ने भारत छोड़ने का फैसला ले लिया। मगर अमेरिका वापस लौटने से पहले उन्होंने अपना अनुभव बताते हुए एक लेख लिखा कि किस तरह दिल्ली की दूषित आबोहवा से उनके बच्चे की जान पर बन आई थी।

प्रदूषण से जूझते बच्चे और नेब्युलाइजर या इन्हेलर जैसे उपायों पर बढ़ती उनकी निर्भरता का ब्रैम एकमात्र उदाहरण नहीं है। आज देश के कई नौनिहाल (और वयस्क भी) यह जंग लड़ रहे हैं। 'ग़्लोबल बर्डेन ऑफ डिजीज स्टडी' का आकलन है कि क्रॉनिक ऑब्स्ट्रक्टिव पल्मोनेरी डिजीज (सीओपीडी) यानी खराब फेफड़े (२०,८८४ मौतें) और न्यूमोनिया या ब्रोंकाइटिस जैसे श्वसन रोग (२०,४७८ मौतें) आज भी भारतीयों की मृत्यु की बड़ी वजह बने हुए हैं। तो क्या प्रदूषण ही बच्चों की सांस संबंधी बीमारियों की अकेली वजह है? नहीं, पर बड़ी वजह जरूर है।

डॉक्टरों की मानें, तो अब बच्चों में सांस संबंधी समस्याएं ज्यादा दिखने लगी हैं। वे एलर्जी, एटोपी (एलर्जी उत्पन्न होने की आनुवांशिक स्थिति) या अस्थमा जैसी समस्याओं से पहले की तुलना में ज्यादा जूझ रहे हैं। जहरीली आबोहवा के कारण बच्चा एलर्जिक राइनाटिस, एलर्जिक ब्रोंकियोलाइटिस या चाइल्डहुड अस्थमा की चपेट में आ जाता है।

नेब्युलाइजर के इस्तेमाल में ध्यान रखें कुछ बातें

'एक समय में एक ही व्यक्ति को मास्क, माउथपीस, पाइप या किट का इस्तेमाल करना चाहिए। घर में एक से अधिक व्यक्तियों को जरूरत होने पर मशीन एक ही रखें, पर किट अलग-अलग रखें। यह अधिक महंगी नहीं होती।

'नेब्युलाइजर को धूल, सूरज की सीधी किरणों से बचाकर रखें।

'नेब्युलाइजर लेने के बाद कुल्ला करना चाहिये। इसके मास्क या माउथपीस को पानी से साफ करके रखें। गर्म पानी से न धोएं। तेज नल चलाकर धोना पर्याप्त है।

'एक बार में दवा की पूरी डोज लें। किट में डाली गयी दवाई को छह घंटे के बाद न लें, क्योंकि किट एयरटाइट नहीं होती। इसलिए उसमें धूल आदि कण जा सकते हैं और दवा संक्रमित हो सकती है और खराब भी।

'अगर नेब्युलाइजेशन के समय असहजता हो रही है तो थोड़ी देर के लिए उसे छोड़ दें। सांस सामान्य होने पर उसे फिर से लेना शुरू कर दें।

ब्रोंकियोलाइटिस आरएसवी (रेस्पिरेट्री वायरस) की वजह से भी होती है। जब इसका हमला होता है, तो श्वसन तंत्र की वायु नलिकाएं सिकुड़ जाती हैं, जिससे सांस की तकलीफ बढ़ने लगती है।

नवजात शिशु बहुत ही संवेदनशील होता है। सांस संबंधी समस्याएं ज्यादातर प्री-टर्म बेबी यानी कि ३६ हफ़्ते तक गर्भ में न रहने वाले बच्चो में देखी जाती हैं। डॉक्टरों का मानना है कि प्री-टर्म बेबी का शरीर पूरी तरह विकसित नहीं होता। इस स्थिति में उसका फेफड़ा भी अच्छी तरह काम करने के लिए तैयार नहीं होता।

रेस्पिरेट्री डिस्ट्रेस सिंड्रोम (आरडीएस) कुछ इसी तरह की तकलीफ है। यह समस्या तब होती है, जब फेफड़ा पर्याप्त मात्रा में सरफैक्टेंट पैदा नहीं करते। सरफैक्टेंट ऐसा पदार्थ है, जो फेफड़ों में हवा की थैलियों को खोले रखता है। लिहाजा आरडीएस की वजह से जन्म के महज चार-पांच घंटे में ही नवजात की सांस की तकलीफ बढ़ने लगती है।

इसी तरह दूसरी समस्या मिकोनीयम से पैदा होती है। मिकोनीयम नवजात बच्चे के शुरुआती मल को कहते हैं। प्रसव के दौरान यदि सांस के माध्यम से यह फेफड़ों तक पहुंच जाए, तो नवजात में सांस संबंधी परेशानियां हो सकती हैं। इस स्थिति में नवजात को कभी-कभी वेंटीलेटर पर भी रखना पड़ता है।

बढ़ता प्रदूषण बच्चों का दुश्मन

बड़ों की तुलना में बच्चों की सांस लेने व छोड़ने की दर अधिक होती है। बड़ों की तुलना में वे अपने वजन के अनुपात से अधिक हवा अंदर लेते हैं। जहां स्वस्थ वयस्क आराम की स्थिति में एक मिनट में १२ से १६ सांसें लेता है, एक साल से कम उम्र के बच्चे एक मिनट में २४ से ३० बार व पांच साल से कम के बच्चे २० से ३०, व ६ से १२ साल के बच्चे १२ से २० बार सांस लेते हैं।

चूंकि बच्चे बड़ों की तुलना में घर या स्कूल में अधिक सक्रिय रहते हैं, ऐसे में सांस दर और तेज हो जाती है। जिससे उनके प्रतिकिलो वजन की तुलना में अधिक प्रदूषक तत्व शरीर में जाते हैं। चूंकि शरीर में ८० % वायु कोष (जहां से ऑक्सीजन रक्त में मिलती है) जन्म के बाद विकसित होते हैं, इसीलिए बच्चों के फेफड़े संवेदनशील होते हैं।ऐसे में टॉक्सिन्स के संपर्क में आना संक्रमण की आशंका बढ़ा देता है।

इन्हेलर या नेब्युलाइजर

बच्चों में सांस की समस्या बढ़ने पर न सिर्फ ओरल मेडिसिन दी जाती है, बल्कि सुधार न होने की स्थिति में इन्हेलर और नेब्युलाइजर का भी इस्तेमाल किया जाता है। माना यह भी जाता है कि अगर खान-पान दुरुस्त हो और बच्चे में रोग से लड़ने की क्षमता बढ़ाई जाए, तो उम्र बढ़ने के साथ सांस संबंधी समस्याओं पर काबू पाया जा सकता है।

इन्हेलर और नेब्युलाइजर का प्रयोग तब किया जाता है, जब रोग अपेक्षाकृत जटिल हो। इन्हेलर व नेब्युलाइजर का सही प्रयोग अस्थमा के दौरे को जल्दी शांत करता है। इसमें मास्क या फिर नेब्युलाइजर के ही साथ आने वाले एक किट के सहारे दवा को नाक और मुंह के रास्ते अंदर खींचा जाता है।

इससे दवाएं सीधे फेफड़े तक पहुंचाने की कोशिश होती है। नेब्युलाइजर कमोबेश इन्हेलर की तरह ही काम करता है, पर इन्हेलर का इस्तेमाल, रख-रखाव आसान है। यह सामान्य तौर पर मीटर्ड डोज इन्हेलर और ड्राइ पाउडर इन्हेलर के रूप में बाजार में दिखता है। मगर नेब्युलाइजर बिजली या बैटरी से चलने वाला उपकरण है। यह तरल दवा को सीधे फेफड़े तक पहुंचाता है। इसलिए सबसे प्रभावी माना गया है।

दवा और उसकी मात्रा डॉक्टर के कहे अनुसार ही लें

ज्यादा नहीं यही कोई सात-आठ साल पहले तक दिल्ली जैसे महानगर में बहुत कम मेडिकल स्टोर्स को ही नेब्युलाइजर के बारे में जानकारी होती थी। इसके साथ इस्तेमाल में लाई जाने वाली दवा (ड्योलिन-बुडेकोर्ट, सालसोल रेप्स्यूल्स आदि) तो मिलती ही बहुत कम जगहों पर थी। बीते पांच-छह सालों में बड़े शहरों की हालत तेजी से बिगड़ी है। खासतौर से प्रदूषण के मद्देनजर।

नेब्युलाइजर्स न केवल घर-घर में दिखाई देने लगे हैं, बल्कि मेडिकल स्टोर्स पर ये आज आसानी से किराए (सिक्योरिटी या उसके बिना २५ से ४० रु. रोज) पर उपलब्ध हैं। डॉक्टर मानते हैं कि नेब्युलाइजर बच्चों को (मौसमी बीमारियों या संक्रमण) ठीक करने में सहायक है। वे इससे आसानी से दवा इनहेल कर लेते हैं। हलांकि इसके साइड इफेक्ट्स और दवाओं को लेकर अभिभावकों में कई शंकाएं भी देखने को मिलती हैं।

कितने सुरक्षित हैं नेब्युलाइजर?

डॉ. संगीता मेहंदीरत्ता (सलाहकार-पल्मोनोलॉजिस्ट, सरोज सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल, रोहिणी) बताती हैं, 'अगर किसी को एलर्जी है या संक्रमण हुआ है तो उसे ठीक करने के लिए ट्रीटमेंट तो देना ही

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका
स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-८२

सभी के लिए सुनहरा अवसर!

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 1,000/- का नकद इनाम!

१. ऑस्ट्रेलिया की खोज किसने की ?

२. (U.N.O.) का विस्तृत रूप क्या है ?

३. सयुक्त राष्ट्र संघ यूनाइटेड नेशन्स ओर्गानिज़शन सयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना कब हुई ?

४. सयुक्त राष्ट्र संघ के प्रथम महासचिव (सेक्रेत्ररी जनरल) कोन थे ?

५. सयुक्त राष्ट्र संघ के प्रथम एशियाई महासचिव कोन थे ?

६. प्रेशर कुकर में खाना जल्दी क्यों पकता है ?

७. गमिन्यो में सफ़ेद कपडे पहनना अधिक आरामदायक क्यों रहता है ?

८. विश्व में कोनसा तत्व सर्वाधिक पाया जाता है ?

९. मूत्रालयों के पास नाक को चुभने वाली गंध का क्या कारण होता है ?

१०. पहला कम्प्यूटर किसने बनाया ?

११. दूध में मिठास का क्या कारण होता है ?

१२. सार्क का सचिवालय कहा स्थित है ?

१३. कावारत्ती कहा की राजधानी है ?

१४. सबसे बड़ा जीवित पक्षी कोनसा है ?

१५. वायुमंडल में सबसे अधिक मात्रा में विधमान अक्रिय गैस कोनसी है ?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

**Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com**

नामः...

पूरा पताः ....

....

....

....

फोन नं.: ....

लड़का भाग्य है, तो कन्या विधाता

लड़का भाग्य है तो लड़की विधाता और लड़का अंश है तो लड़की वंश है। जैसे गाड़ी चलाने के लिए दोनों पहियों की समान जरूरत होती है, उसी प्रकार वंश चलाने के लिए नर-नारी का होना बराबर ही जरूरी है। नारी को कानूनी संरक्षण देकर उनकी दशा सुधारने में प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

किसी भी समाज की स्थिति का अनुभव वहां की स्त्रियों की दशा को देखकर लगाया जा सकता है। आजादी के ६९ वर्षों के बाद भी नारी उत्पीड़न, उसके यौन शोषण, कन्या भ्रूण हत्याओं में बढ़ोतरी, दहेज कुप्रथा जैसे जघन्य अपराध के समाचार आए दिन समाचार-पत्रों में पढ़ने को मिलते हैं। भारत का इतिहास साक्षी है कि नारियों को हर युग में पग-पग कठिन परीक्षाओं और चुनौतियों से भरा जीवन जीना पड़ा है। महाभारत काल में द्रोपदी जैसी नारी को वस्तु समझकर दांव पर लगाया गया। सती प्रथा काल में नारी को अपने पति की मृत्यु पर साथ में जिंदा जला दिया जाता था। राजा-महाराजाओं ने नारी को अपनी दासी बनाया और उनका खूब शोषण किया। यद्यपि भारतीय संस्कृति को विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति होने का दर्जा मिला है, लेकिन आज के इस भौतिकवादी व आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नारियों के मानसिक व शारीरिक उत्पीड़न की घिनौनी हकरतों से कई प्रश्न पैदा हुए हैं। हिमाचल भी नारी के समाज के विपरीत बहने वाली इन धाराओं से अछूता नहीं रह सका है। समाज में कुछ संकीर्ण विचारधारा वाले लोगों की मानसिकता में जंग लग चुका है, जो महिलाओं के साथ शर्मनाक अनहोनी घटनाओं को अंजाम देते हैं। ऐसे में लोगों को अपने मानसिक पटल पर याद रखना होगा कि विधाता ने इस सृष्टि में वंश को चलाने की कुंजी सिर्फ नारी के पास दी है, जो हमारी मां, बेटी और बहन भी हो सकती है।

आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी विचारधारा में परिवर्तन लाकर नारियों के प्रति मान-सम्मान की भावना पैदा करें। उन्हें शिक्षा ग्रहण करने का बराबर हक दें। यदि महिलाएं शिक्षित होंगी, तो समाज व परिवार स्वयं शिक्षित होगा। एक लोकप्रिय कहावत इस हकीकत को बयां करती है- नारी पढ़ी तो सब घर पढ़ा, पुरुष पढ़ा तो एक, नारी शिक्षा जानिए, जन शिक्षा की टेक। अर्थात एक नारी पूरे परिवार को शिक्षित करती है। मां, पत्नी, बहु, भाभी का फर्ज अदा करती है और अपनी खुशियां त्यागकर परिवार के सभी सदस्यों के प्रति अपना दायित्वों को निभाते हुए उन्हें प्रसन्न रखने की कोशिश करती है, जिससे परिवार खुशहाल बनता है। संस्कारहीन मनुष्य सदैव राक्षस प्रवृत्ति जैसी सोच रख सकता है। परिवार में अच्छे संस्कार, देने के साथ-साथ लड़कियों को संपूर्ण शिक्षित करना आज की परम आवश्यकता है। इन्हीं गुणों से हम अपने परिवार, समाज, प्रदेश और देश के उज्ज्वल भविष्य के विकास की कामना कर सकते हैं। लड़कियों के होने का महत्त्व हम विशेष रूप से नवरात्र में पहचानते हैं। नवरात्र के अष्टमी व नवमी के दिन कंजकों अर्थात कन्याओं को लाल चुनरी, श्रृंगार सामग्री से अंलकृत करने के साथ चरणों को पखारने सहित कन्याओं के समक्ष शीश नवाया जाता है। ऐसे समय में कन्या चाहे किसी भी धर्म जाति से हो, उसे देवी के रूप में पूजते हैं, फिर उन्हीं कन्याओं को लोग सृष्टि में लाने की चेष्टा क्यों नहीं रखते? हमीरपुर जैसे शिक्षित जिला के लिंगानुपात में अंतर हमारे सामने है। कन्याओं की लगातार घट रही संख्या का नतीजा यह होगा कि कुंवारों की फौज के लिए रिश्ते ढूंढने मुश्किल हो जाएंगे। मां, बहू और बेटी जैसे शब्द सिमटकर रह जाएंगे।

मां के गर्भ से निकला बच्चा यदि लड़का है तो पूरे परिवार में खुशी का माहौल होता है और यदि लड़की हो तो पूरा परिवार मातम में शरीक हो जाता है। यदि लड़का भाग्य है तो लड़की विधाता और यदि लड़का अंश है तो लड़की वंश है। जिस प्रकार गाड़ी को चलाने के लिए दोनों पहियों की साथ-साथ जरूरत होती है, उसी प्रकार वंश को चलाने के लिए दोनों पहिए अर्थात नर-नारी का होना बराबर ही जरूरी है। महिलाओं के उत्थान उनके शोषणवस्था से लेकर नारी होने तक सरकार ने कई अच्छी योजनाओं बनाकर उन्हें समाज में आगे आने के लिए प्रेरित भी किया है। उन्हें कानूनी संरक्षण देकर नारियों की दशा सुधारने में प्रोत्साहित किया जा रहा है। महिलाएं न केवल राजनीति, नौकरशाही व अन्य क्षेत्रों में आगे निकल रही हैं, बल्कि अब राज्य में करीब २१ फीसदी से अधिक परिवारों का नेतृत्व भी कर रही हैं। अगर बात हम सोशल मीडिया की करें तो आज का पढ़ा-लिखा नौजवान व्हाट्सऐप व फेसबुक का गलत इस्तेमाल कर नारी जाति को मानसिक रूप से प्रताड़ित करने वाले व्यंग्य या चुटकुले फैला रहे हैं, जबकि कुछ महिलाएं भी ऐसी गतिविधियों को अंजाम देकर अपना मनोरंजन करती हैं। इन सब बातों का समाज पर क्या असर पड़ रहा है, सब अनभिज्ञ हैं। ऐसी विचारधाराओं से कम से कम समाज में पढ़े-लिखे लोगों को गुरेज करना होगा। सोशल मीडिया का ठीक प्रयोग हो। जघन्य अपराध करने वाले अपराधियों को सख्त से सख्त सजा दी जानी चाहिए। महिला संरक्षण कानूनों को व्यावहारिक रूप से लागू कर जनचेतना को जगाने का अभियान पूरे प्रदेश में लागू किया जाए और उनके कानूनी अधिकारों की रक्षा के लिए पंचायत स्तर पर कमेटियां गठित की जाएं। ऐसा तभी संभव हो सकता है, यदि सरकार व समाज के शिक्षित लोग नारियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाएं और उचित अनुभव लेकर नारी के भविष्य को उज्ज्वल बनाने का भरसक प्रयास करें। ■

-तिलक सिंह

Ram Creations
Jewelry & Gifts
28974 Orchard Lake Rd, Farmington Hills | ramcreations.com | (248) 851-1400

WORLD PLAYER
WORLD PLAYER MENSWEAR
MEGABUY ₹149-499
SAVE ₹ 100
MENS 100% CORDUROY 16 WALE WASHED SHIRTS
MRP ₹ 599
MEGABUY ₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS 100% COTTON SEMI FORMAL SHIRTS
MRP ₹ 599
MEGABUY ₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS FORMAL TROUSERS
MRP ₹ 699
MEGABUY ₹ 599

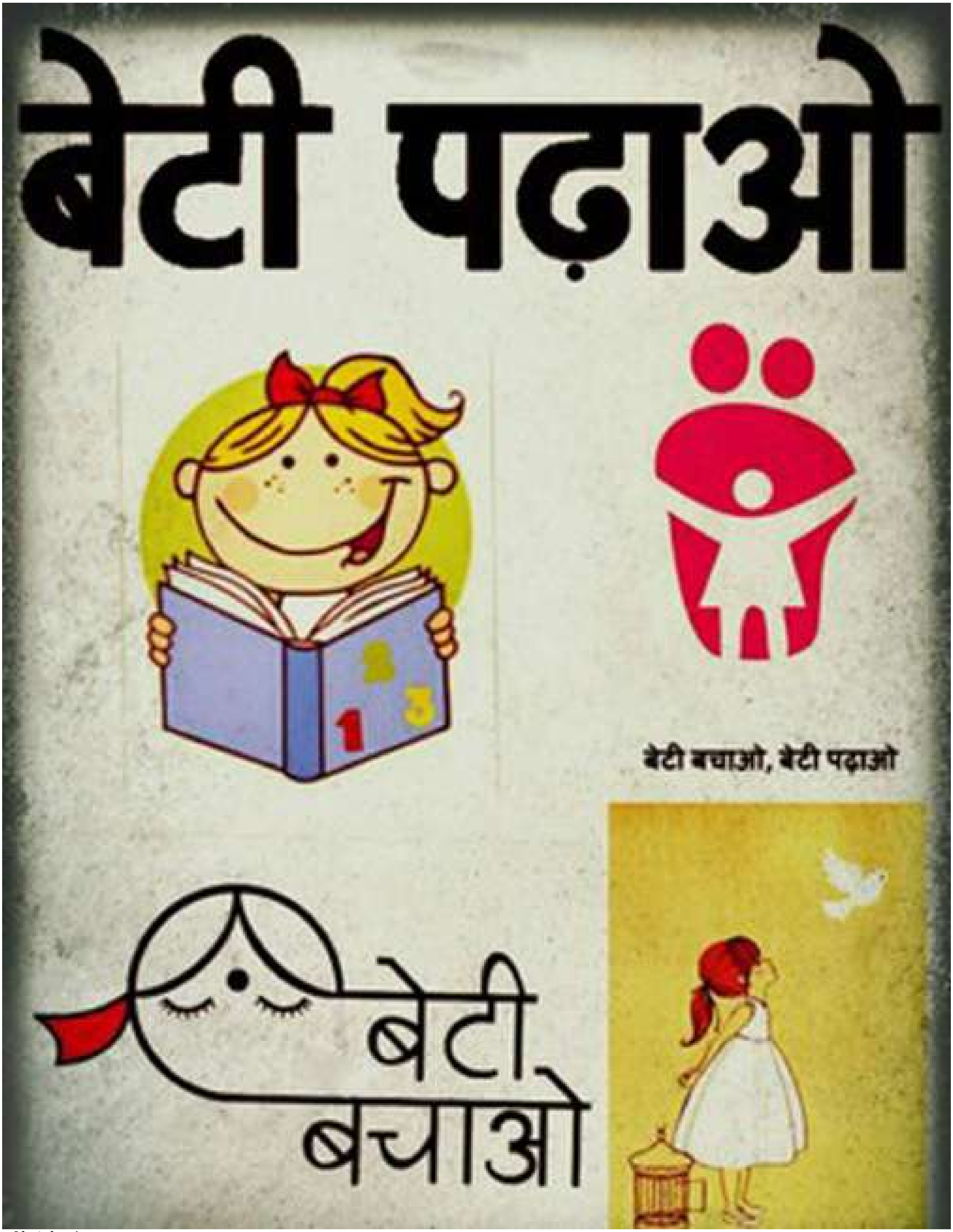
बेटी पढ़ाओ
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
बेटी
बचाओ

सिद्धेश्वरी उनकी जूठी थाली लेकर चौके की जमीन पर बैठ गई। बटलोई की दाल को कटोरे में उड़ेल दिया, पर वह पूरा भरा नहीं। छिपुली में थोड़ी-सी चने की तरकारी बची थी, उसे पास खींच लिया। रोटियों की थाली को भी उसने पास खींच लिया। उसमें केवल एक रोटी बची थी। मोटी-भद्दी और जली उस रोटी को वह जूठी थाली में रखने जा रही थी कि अचानक उसका ध्यान ओसारे में सोए प्रमोद की ओर आकर्षित हो गया। उसने लड़के को कुछ देर तक एकटक देखा, फिर रोटी को दो बराबर टुकड़ों में विभाजित कर दिया। एक टुकड़े को तो अलग रख दिया और दूसरे टुकड़े को अपनी जूठी थाली में रख लिया। तदुपरांत एक लोटा पानी लेकर खाने बैठ गई। उसने पहला ग्रास मुँह में रखा और तब न मालूम कहाँ से उसकी आँखों से टप-टप आँसू चूने लगे।

दोपहर का भोजन

सिद्धेश्वरी ने खाना बनाने के बाद चूल्हे को बुझा दिया और दोनों घुटनों के बीच सिर रखकर शायद पैर की उँगलियाँ या जमीन पर चलते चीटें-चीटियों को देखने लगी।

अचानक उसे मालूम हुआ कि बहुत देर से उसे प्यास नहीं लगी हैं। वह मतवाले की तरह उठी ओर गगरे से लोटा-भर पानी लेकर गट-गट चढ़ा गई। खाली पानी उसके कलेजे में लग गया और वह 'हाय राम' कहकर वहीं जमीन पर लेट गई।

आधे घंटे तक वहीं उसी तरह पड़ी रहने के बाद उसके जी में जी आया। वह बैठ गई, आँखों को मल-मलकर इधर-उधर देखा और फिर उसकी दृष्टि ओसारे में अध-टूटे खटोले पर सोए अपने छह वर्षीय लड़के प्रमोद पर जम गई।

लड़का नंग-धड़ंग पड़ा था। उसके गले तथा छाती की हड्डियाँ साफ दिखाई देती थीं। उसके हाथ-पैर बासी ककड़ियों की तरह सूखे तथा बेजान पड़े थे और उसका पेट हंडिया की तरह फूला हुआ था। उसका मुख खुला हुआ था और उस पर अनगिनत मक्खियाँ उड़ रही थीं।

वह उठी, बच्चे के मुँह पर अपना एक फटा, गंदा ब्लाउज डाल दिया और एक-आध मिनट सुन्न खड़ी रहने के बाद बाहर दरवाजे पर जाकर किवाड़ की आड़ से गली निहारने लगी। बारह बज चुके थे। धूप अत्यंत तेज थी और कभी एक-दो व्यक्ति सिर पर तौलिया या गमछा रखे हुए या मजबूती से छाता ताने हुए फुर्ती के साथ लपकते हुए-से गुजर जाते।

दस-पंद्रह मिनट तक वह उसी तरह खड़ी रही, फिर उसके चेहरे पर व्यग्रता फैल गई और उसने आसमान तथा कड़ी धूप की ओर चिंता से देखा। एक-दो क्षण बाद उसने सिर को किवाड़ से काफी आगे बढ़ाकर गली के छोर की तरफ निहारा, तो उसका बड़ा लड़का रामचंद्र धीरे-धीरे घर की ओर सरकता नजर आया।

उसने फुर्ती से एक लोटा पानी ओसारे की चौकी के पास नीचे रख दिया और चौके में जाकर खाने के स्थान को जल्दी-जल्दी पानी से लीपने-पोतने लगी। वहाँ पीढ़ा रखकर उसने सिर को दरवाजे की ओर घुमाया ही था कि रामचंद्र ने अंदर कदम रखा।

रामचंद्र आकर धम-से चौकी पर बैठ गया और फिर वहीं बेजान-सा लेट गया। उसका मुँह लाल तथा चढ़ा हुआ था, उसके बाल अस्त-व्यस्त थे और उसके फटे-पुराने जूतों पर गर्द जमी हुई थी।

सिद्धेश्वरी की पहले हिम्मत नहीं हुई कि उसके

पास आए और वहीं से वह भयभीत हिरनी की भाँति सिर उचका-घुमाकर बेटे को व्यग्रता से निहारती रही। किंतु, लगभग दस मिनट बीतने के पश्चार भी जब रामचंद्र नहीं उठा, तो वह घबरा गई। पास जाकर पुकारा - 'बड़कू, बड़कू!' लेकिन उसके कुछ उत्तर न देने पर डर गई और लड़के की नाक के पास हाथ रख दिया। सांस ठीक से चल रही थी। फिर सिर पर हाथ रखकर देखा, बुखार नहीं था। हाथ के स्पर्श से रामचंद्र ने आँखें खोलीं। पहले उसने मां की ओर सुस्त नजरों से देखा, फिर झट-से उठ बैठा। जूते निकालने और नीचे रखे लोटे के जल से हाथ-पैर धोने के बाद वह यंत्र की तरह चौकी पर आकर बैठ गया।

सिद्धेश्वरी ने डरते-डरते पूछा, "खाना तैयार है। यहीं लगाऊँ क्या?"

रामचंद्र ने उठते हुए प्रश्न किया, "बाबू जी खा चुके?"

सिद्धेश्वरी ने चौके की ओर भागते हुए उत्तर दिया, "आते ही होंगे।"

रामचंद्र पीढ़े पर बैठ गया। उसकी उम्र लगभग इक्कीस वर्ष की थी। लंबा, दुबला-पतला, गोरा रंग, बड़ी-बड़ी आँखें तथा होठों पर झुर्रियाँ।

वह एक स्थानीय दैनिक समचार पत्र के दफ्तर में अपनी तबीयत से प्रूफ रीडरी का काम सीखता था। पिछले साल ही उसने इंटर पास किया था।

सिद्धेश्वरी ने खाने की थाली सामने लाकर रख दी और पास ही बैठकर पंखा करने लगी। रामचंद्र ने खाने की ओर दार्शनिक की भाँति देखा। कुल दो रोटियाँ, भर-कटोरा पनियाई दाल और चने की तली तरकारी।

रामचंद्र ने रोटी के प्रथम टुकड़े को निगलते हुए पूछा, "मोहन कहाँ है? बड़ी कड़ी धूप हो रही है।"

मोहन सिद्धेश्वरी का मंझला लड़का था। उम्र अट्ठारह वर्ष थी और वह इस साल हाईस्कूल का प्राइवेट इम्तहान देने की तैयारी कर रहा था। वह न मालूम कब से घर से गायब था और सिद्धेश्वरी को स्वयं पता नहीं था कि वह कहाँ गया है।

किंतु सच बोलने की उसकी तबीयत नहीं हुई और झूठ-मूठ उसने कहा, "किसी लड़के के यहाँ पढ़ने गया है, आता ही होगा। दिमाग उसका बड़ा तेज है और उसकी तबीयत चौबीस घंटे पढ़ने में ही लगी रहती है। हमेशा उसी की बात करता रहता है।"

रामचंद्र ने कुछ नहीं कहा। एक टुकड़ा मुँह में रखकर भरा गिलास पानी पी गया, फिर खाने लग गया। वह काफी छोटे-छोटे टुकड़े तोड़कर उन्हें धीरे-धीरे चबा रहा था।

सिद्धेश्वरी भय तथा आतंक से अपने बेटे को एकटक निहार रही थी। कुछ क्षण बीतने के बाद डरते-डरते उसने पूछा, "वहाँ कुछ हुआ क्या?"

रामचंद्र ने अपनी बड़ी-बड़ी भावहीन आँखों से अपनी माँ को देखा, फिर नीचा सिर करके कुछ रूखाई से बोला, "समय आने पर सब ठीक हो जाएगा।"

सिद्धेश्वरी चुप रही। धूप और तेज होती जा रही थी। छोटे आँगन के ऊपर आसमान में बादल में एक-दो टुकड़े पाल की नावों की तरह तैर रहे थे। बाहर की गली से गुजरते हुए एक खड़खड़िया इक्के की आवाज आ रही थी। और खटोले पर सोए बालक की साँस का खर-खर शब्द सुनाई दे रहा था।

रामचंद्र ने अचानक चुप्पी को भंग करते हुए पूछा, "प्रमोद खा चुका?"

सिद्धेश्वरी ने प्रमोद की ओर देखते हुए उदास स्वर में उत्तर दिया, "हाँ, खा चुका।"

"रोया तो नहीं था?"

सिद्धेश्वरी फिर झूठ बोल गई, "आज तो सचमुच नहीं रोया। वह बड़ा ही होशियार हो गया है। कहता था, बड़का भैया के यहाँ जाऊँगा। ऐसा लड़का...'

पर वह आगे कुछ न बोल सकी, जैसे उसके गले में कुछ अटक गया। कल प्रमोद ने रेवड़ी खाने की जिद पकड़ ली थी और उसके लिए डेढ़ घंटे तक रोने के बाद सोया था।

रामचंद्र ने कुछ आश्चर्य के साथ अपनी माँ की ओर देखा और फिर सिर नीचा करके कुछ तेजी से खाने लगा।

थाली में जब रोटी का केवल एक टुकड़ा शेष रह गया, तो सिद्धेश्वरी ने उठने का उपक्रम करते हुए प्रश्न किया, "एक रोटी और लाती हूँ?"

रामचंद्र हाथ से मना करते हुए हड़बड़ाकर बोल पड़ा, "नहीं-नहीं, जरा भी नहीं। मेरा पेट पहले ही भर चुका है। मैं तो यह भी छोड़नेवाला हूँ। बस, अब नहीं।"

सिद्धेश्वरी ने जिद की, "अच्छा आधी ही सही।"

रामचंद्र बिगड़ उठा, "अधिक खिलाकर बीमार डालने की तबीयत है क्या? तुम लोग जरा भी नहीं सोचती हो। बस, अपनी जिद। भूख रहती तो क्या ले नहीं लेता?"

सिद्धेश्वरी जहाँ-की-तहाँ बैठी ही रह गई। रामचंद्र ने थाली में बचे टुकड़े से हाथ खींच लिया और लोटे की ओर देखते हुए कहा, "पानी लाओ।"

सिद्धेश्वरी लोटा लेकर पानी लेने चली गई। रामचंद्र ने कटोरे को उँगलियों से बजाया, फिर हाथ को थाली में रख दिया। एक-दो क्षण बाद रोटी के टुकड़े को धीरे-से हाथ से उठाकर आँख से निहारा और अंत में इधर-उधर देखने के बाद टुकड़े को मुँह में इस सरलता से रख लिया, जैसे वह भोजन का ग्रास न होकर पान का बीड़ा हो।

मंझला लड़का मोहन आते ही हाथ-पैर धोकर पीढ़े पर बैठ गया। वह कुछ साँवला था और उसकी आंखें छोटी थीं। उसके चेहरे पर चेचक के दाग थे। वह अपने भाई ही की तरह दुबला-पतला था, किंतु उतना लंबा न था। वह उम्र की अपेक्षा कहीं अधिक गंभीर और उदास दिखाई पड़ रहा था।

सिद्धेश्वरी ने उसके सामने थाली रखते हुए प्रश्न किया, "कहाँ रह गए थे बेटा? भैया पूछ रहा था।"

मोहन ने रोटी के एक बड़े ग्रास को निगलने की कोशिश करते हुए अस्वाभाविक मोटे स्वर में जवाब दिया, "कहीं तो नहीं गया था। यहीं पर था।"

सिद्धेश्वरी वहीं बैठकर पंखा डुलाती हुई इस तरह बोली, जैसे स्वप्न में बड़बड़ा रही हो, "बड़का तुम्हारी बड़ी तारीफ कर रहा था। कह रहा था, मोहन बड़ा दिमागी होगा, उसकी तबीयत चौबीसों घंटे पढ़ने में ही लगी रहती है।" यह कहकर उसने अपने मंझले लड़के की ओर इस तरह देखा, जैसे उसने कोई चोरी की हो।

मोहन अपनी माँ की ओर देखकर फीकी हँसी हँस पड़ा और फिर खाने में जुट गया। वह परोसी गई दो रोटियों में से एक रोटी कटोरे की तीन-चौथाई दाल तथा अधिकांश तरकारी साफ कर चुका था।

सिद्धेश्वरी की समझ में नहीं आया कि वह क्या करे। इन दोनों लड़कों से उसे बहुत डर लगता था। अचानक उसकी आँखें भर आईं। वह दूसरी ओर देखने लगी।

थोड़ी देर बाद उसने मोहन की ओर मुँह फेरा, तो लड़का लगभग खाना समाप्त कर चुका था।

सिद्धेश्वरी ने चौंकते हुए पूछा, "एक रोटी देती हूँ?"

मोहन ने रसोई की ओर रहस्यमय नेत्रों से देखा, फिर सुस्त स्वर में बोला, "नहीं।"

सिद्धेश्वरी ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, "नहीं बेटा, मेरी कसम, थोड़ी ही ले लो। तुम्हारे भैया ने एक रोटी ली थी।"

मोहन ने अपनी माँ को गौर से देखा, फिर धीरे-धीरे इस तरह उत्तर दिया, जैसे कोई शिक्षक अपने शिष्य को समझाता है, "नहीं रे, बस, अव्वल तो अब भूख नहीं। फिर रोटियाँ तूने ऐसी बनाई हैं कि खाई नहीं जातीं। न मालूम कैसी लग रही हैं। खैर, अगर तू चाहती ही है, तो कटोरे में थोड़ी दाल दे दे। दाल बड़ी अच्छी बनी है।"

सिद्धेश्वरी से कुछ कहते न बना और उसने कटोरे को दाल से भर दिया।

COMPLETE SOLUTION FOR KNEE PAIN BY
Dr. Ortho
M.R.P. :₹731
OFFER PRICE
₹449

FW16 PACK OF 3
MEN'S SANDAL
MRP ₹999/-
SHOP NOW
₹499/-
•COMFORTABLE •STYLISH •DURABLE •ANTI SKID & SLIP RESISTANT •LIGHT WEIGHT •COMFORTABLE

36 PCS
DESIGNER DINNER SET
MRP ₹2,600/-
SHOP NOW ₹999/-

NELCON
10 PCS STEEL
PUSH & LOCK BOWL SET
- Transparent Lid
SHOP NOW
MRP ₹1,500/- ₹499/-
•Air Tight Containers •Keeps Your Food Fresh
•Multipurpose food storage option
•100 % Food Grade Stainless Steel
•See through transparent Lid •Easy Grip
•Leak Proof •Carry As lunch Box •Fridge Friendly

मोहन कटोरे को मुँह लगाकर सुड़-सुड़ पी रहा था कि मुंशी चंद्रिका प्रसाद जूतों को खस-खस घसीटते हुए आए और राम का नाम लेकर चौकी पर बैठ गए। सिद्धेश्वरी ने माथे पर साड़ी को कुछ नीचे खिसका लिया और मोहन दाल को एक साँस में पीकर तथा पानी के लोटे को हाथ में लेकर तेजी से बाहर चला गया। दो रोटियाँ, कटोरा-भर दाल, चने की तली तरकारी। मुंशी चंद्रिका प्रसाद पीढ़े पर पालथी मारकर बैठे रोटी के एक-एक ग्रास को इस तरह चुभला-चबा रहे थे, जैसे बूढ़ी गाय जुगाली करती है। उनकी उम्र पैंतालीस वर्ष के लगभग थी, किंतु पचास-पचपन के लगत थे। शरीर का चमड़ा झूलने लगा था, गंजी खोपड़ी आईने की भाँति चमक रही थी। गंदी धोती के ऊपर अपेक्षाकृत कुछ साफ बनियान तार-तार लटक रही थी।

मुंशी जी ने कटोरे को हाथ में लेकर दाल को थोड़ा सुड़कते हुए पूछा, ''बड़का दिखाई नहीं दे रहा?''

सिद्धेश्वरी की समझ में नहीं आ रहा था कि उसके दिल में क्या हो गया है - जैसे कुछ काट रहा हो। पंखे को जरा और जोर से घुमाती हुई बोली, ''अभी-अभी खाकर काम पर गया है। कह रहा था, कुछ दिनों में नौकरी लग जाएगी। हमेशा, 'बाबू जी, बाबू जी' किए रहता है। बोला, बाबू जी देवता के समान हैं।''

मुंशी जी के चेहरे पर कुछ चमक आई। शरमाते हुए पूछा, ''ऐं, क्या कहता था कि बाबू जी देवता के समान हैं? बड़ा पागल है।''

सिद्धेश्वरी पर जैसे नशा चढ़ गया था। उन्माद की रोगिणी की भांति बड़बड़ाने लगी, ''पागल नहीं हैं, बड़ा होशियार है। उस जमाने का कोई महात्मा है। मोहन तो उसकी बड़ी इज्जत करता है। आज कह रहा था कि भैया की शहर में बड़ी इज्जत होती हैं, पढ़ने-लिखनेवालों में बड़ा आदर होता है और बड़का तो छोटे भाइयों पर जान देता हैं। दुनिया में वह सबकुछ सह सकता है, पर यह नहीं देख सकता कि उसके प्रमोद को कुछ हो जाए।''

मुंशी जी दाल-लगे हाथ को चाट रहे थे। उन्होंने सामने की ताक की ओर देखते हुए हंसकर कहा, ''बड़का का दिमाग तो खैर काफी तेज है, वैसे लड़कपन में नटखट भी था। हमेशा खेल-कूद में लगा रहता था, लेकिन यह भी बात थी कि जो सबक मैं उसे याद करने को देता था, उसे बर्राक रखता था। असल तो यह कि तीनों लड़के काफी होशियार हैं। प्रमोद को कम समझती हो?'' यह कहकर वह अचानक जोर से हँस पड़े।

मुंशी जी डेढ़ रोटी खा चुकने के बाद एक ग्रास से युद्ध कर रहे थे। कठिनाई होने पर एक गिलास पानी चढ़ा गए। फिर खर-खर खाँसकर खाने लगे।

फिर चुप्पी छा गई। दूर से किसी आटे की चक्की की पुक-पुक आवाज सुनाई दे रही थी और पास की नीम के पेड़ पर बैठा कोई पंडूक लगातार बोल रहा था। सिद्धेश्वरी की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहे। वह चाहती थी कि सभी चीजें ठीक से पूछ ले। सभी चीजें ठीक से जान ले और दुनिया की हर चीज पर पहले की तरह धडल्ले से बात करे। पर उसकी हिम्मत नहीं होती थी। उसके दिल में जाने कैसा भय समाया हुआ था।

अब मुंशी जी इस तरह चुपचाप दुबके हुए खा रहे थे, जैसे पिछले दो दिनों से मौन-व्रत धारण कर रखा हो और उसको कहीं जाकर आज शाम को तोड़ने वाले हों। सिद्धेश्वरी से जैसे नहीं रहा गया। बोली, ''मालूम होता है, अब बारिश नहीं होगी।''

मुंशी जी ने एक क्षण के लिए इधर-उधर देखा, फिर निर्विकार स्वर में राय दी, ''मक्खियाँ बहुत हो गई हैं।'' सिद्धेश्वरी ने उत्सुकता प्रकट की, ''फूफा जी बीमार हैं, कोई समाचार नहीं आया।

मुंशी जी ने चने के दानों की ओर इस दिलचस्पी से दृष्टिपात किया, जैसे उनसे बातचीत करनेवाले हों। फिर सूचना दी, ''गंगाशरण बाबू की लड़की की शादी तय हो गई। लड़का एम.ए. पास है।''

सिद्धेश्वरी हठात चुप हो गई। मुंशी जी भी आगे कुछ नहीं बोले। उनका खाना समाप्त हो गया था और वे थाली में बचे-खुचे दानों को बंदर की तरह बीन रहे थे। सिद्धेश्वरी ने पूछा, ''बड़का की कसम, एक रोटी देती हूँ। अभी बहुत-सी हैं।''

मुंशी जी ने पत्नी की ओर अपराधी के समान तथा रसोई की ओर कनखी से देखा, तत्पश्चात किसी छंटे उस्ताद की भांति बोले, ''रोटी? रहने दो, पेट काफी भर चुका है। अन्न और नमकीन चीजों से तबीयत ऊब भी गई है। तुमने व्यर्थ में कसम धरा दी। खैर, कसम रखने के लिए ले रहा हूँ। गुड़ होगा क्या?''

सिद्धेश्वरी ने बताया कि हंडिया में थोड़ा-सा गुड़ है। मुंशी जी ने उत्साह के साथ कहा, ''तो थोड़े गुड़ का ठंडा रस बनाओ, पीऊँगा। तुम्हारी कसम भी रह जाएगी, जायका भी बदल जाएगा, साथ-ही-साथ हाजमा भी दुरूस्त होगा। हाँ, रोटी खाते-खाते नाक में दम आ गया है।'' यह कहकर वे ठहाका मारकर हँस पड़े।

मुंशी जी के निबटने के पश्चात सिद्धेश्वरी उनकी जूठी थाली लेकर चौके की जमीन पर बैठ गई। बटलोई की दाल को कटोरे में उड़ेल दिया, पर वह पूरा भरा नहीं। छिपुली में थोड़ी-सी चने की तरकारी बची थी, उसे पास खींच लिया। रोटियों की थाली को भी उसने पास खींच लिया। उसमें केवल एक रोटी बची थी। मोटी-भद्दी और जली उस

लड़का नंग-धड़ंग पड़ा था। उसके गले तथा छाती की हड्डियाँ साफ दिखाई देती थीं। उसके हाथ-पैर बासी ककड़ियों की तरह सूखे तथा बेजान पड़े थे और उसका पेट हंडिया की तरह फूला हुआ था। उसका मुख खुला हुआ था और उस पर अनगिनत मक्खियाँ उड़ रही थीं। वह उठी, बच्चे के मुँह पर अपना एक फटा, गंदा ब्लाउज डाल दिया और एक-आध मिनट सुन्न खड़ी रहने के बाद बाहर दरवाजे पर जाकर किवाड़ की आड़ से गली निहारने लगी। बारह बज चुके थे। धूप अत्यंत तेज थी...

रोटी को वह जूठी थाली में रखने जा रही थी कि अचानक उसका ध्यान ओसारे में सोए प्रमोद की ओर आकर्षित हो गया। उसने लड़के को कुछ देर तक एकटक देखा, फिर रोटी को दो बराबर टुकड़ों में विभाजित कर दिया। एक टुकड़े को तो अलग रख दिया और दूसरे टुकड़े को अपनी जूठी थाल ी में रख लिया। तदुपरांत एक लोटा पानी लेकर खाने बैठ गई। उसने पहला ग्रास मुँह में रखा और तब न मालूम कहाँ से उसकी आँखों से टप-टप आँसू चूने लगे। सारा घर मक्खियों से भनभन कर रहा था। आँगन की अलगनी पर एक गंदी साड़ी टंगी थी, जिसमें पैबंद लगे हुए थे। दोनों बड़े ल ड़कों का कहीं पता नहीं था। बाहर की कोठरी में मुंशी जी औंधे मुँह होकर निश्चिंतता के साथ सो रहे थे, जैसे डेढ़ महीने पूर्व मकान-किराया-नियंत्रण विभाग की कर्ल्की से उनकी छँटनी न हुई हो और शाम को उनको काम की तलाश में कहीं जाना न हो। ■

– अमरकांत

पेड़ लगाओ, जीवन बचाओ

होली का मज़ाक

''अम्मा जी, यह क्या?'' मंटू माँ के बायें हाथ की ओर संकेत कर झल्ला उठी, ''फिर वही डंडे जैसी खाली कलाइयाँ! कड़ा फिर उतार दिया! तुम्हें तो सोना घिस जाने की चिंता खाए जाती है।'' ''नहीं मंटू. . .'' माँ ने समझाना चाहा। ''तुम ज़रा खयाल नहीं करतीं,'' मंटू बोल ती गई, ''इतने लोग घर में आए हुए हैं। त्योहार का दिन है। यही तो समय होता है कि कुछ पहनने का और तुम उतार कर रख देती हो. . .।'' मंटू झुँझला ही रही थी कि उसकी चाची, मालकिन की देवरानी लीला नाश्ते में सहायता देने के लिए ऊपर आ गई। उसने भी मंटू का साथ दिया, ''हाँ भाभी जी, त्योहार का दिन है, घर में बहू आई है, जमाई आया है, ऐसे समय भी कुछ नहीं पहना! कलाई नंगी रहे तो असगुन लगता है। सुबह तो चूड़ियाँ भी थीं, कड़ा भी था।'' मालकिन ने नाश्ता बाँटने से हाथ रोककर मंटू से कहा, ''जा नन्हीं, दौड़कर जा, बीचवाले गुसलखाने में देख! सिर धोने ल गी थी तो बालों में उलझ रहा था, वहीं उतार कर रख दिया था। जहाँ मंजन-वंजन पड़ा रहता है,

यशपाल

''बीबी जी, आप आवेंगी कि हम चाय बना दें!'' किलसिया ने ऊपर की मंज़िल की रसोई से पुकारा।

''नहीं, तू पानी तैयार कर- तीनों सेट मेज़ पर लगा दे, मैं आ रही हूँ। बाज़ आए तेरी बनाई चाय से। सुबह तीन-तीन बार पानी डाला तो भी इनकी काली और ज़हर की तरह कड़वी. . .। तुम्हारे हाथ डिब्बा लग जाए तो पत्ती तीन दिन नहीं चलती। सात रुपए में डिब्बा आ रहा है। मरी चाय को भी आग लग गई है।'' मालकिन ने किलसिया को उत्तर दिया। आलस्य अभी टूटा नहीं था। ज़रा और लेट लेने के लिए बोलती गईं, ''बेटा मंटू, तू ज़रा चली जा ऊपर। तीनों पॉट बनवा दे। बेटा, ज़रा देखकर पत्ती डालना, मैं अभी आ रही हूँ।''

''अम्मा जी, ज़रा तुम आ जाओ! हमारी समझ में नहीं आता। बर्तन सब लगा दिए हैं।'' सत्रह वर्ष की मंटू ने ऊपर से उत्तर दिया। ठीक ही कह रही है लड़की, मालकिन ने सोचा। घर मेहमानों से भरा था, जैसे शादी-ब्याह के समय का जमाव हो। चीफ़ इंजीनियर खोसला साहब के रिटायर होने में चार महीने ही शेष थे। तीन वर्ष की एक्सटेंशन भी समाप्त हो रही थी। पिछले वर्ष बड़े लड़के और लड़की के ब्याह कर दिए थे। रिटायर होकर तो पेंशन पर ही निर्वाह करना था। जो काम अब हज़ार में हो जाता, रिटायर होने पर उस पर तीन हज़ार लगते। रिटायर होकर इतनी बड़ी, तेरह कमरे की हवेली भी नहीं रख सकते थे।

पहली होली पर लड़की जमाई के साथ आई थी। बड़ा लड़का आनंद सात दिन की छुट्टी लेकर आया था इसलिए बहू को भी बुला लिया था। आनंद की छोटी साली भी बहन के साथ लखनऊ की सैर के लिए आ गई थी। इंजीनियर साहब के छोटे भाई गोंडा जिले में किसी शुगर मिल में इंजीनियर थे। मई में उनकी लड़की का ब्याह था। वे पत्नी, साली और लड़की के साथ दहेज खरीदने के लिए लखनऊ आए हुए थे। खूब जमाव था। मालकिन ऊपर पहुँची। प्लेटों में अंदाज़ से नमकीन और मिठाई रखी। जमाई ज्ञान बाबू के लिए बिस्कुट और संतरे रखे। साहब इस समय कुछ नहीं खाते थे। उनके लिए थोड़ी किशमिश रखी। किलसिया और सित्तो के हाथ नीचे भेजने के लिए ट्रे में चाय ल गाने लगीं। ''अम्मा जी, यह क्या?'' मंटू माँ के बायें हाथ की ओर संकेत कर झल्ला उठी, ''फिर वही डंडे जैसी खाली कलाइयाँ! कड़ा फिर उतार दिया! तुम्हें तो सोना घिस जाने की चिंता खाए जाती है।''

''नहीं मंटू. . .'' माँ ने समझाना चाहा।

''तुम ज़रा खयाल नहीं करतीं,'' मंटू बोलती गई, ''इतने लोग घर में आए हुए हैं। त्योहार का दिन है। यही तो समय होता है कि कुछ पहनने का और तुम उतार कर रख देती हो. . .।''

मंटू झुँझला ही रही थी कि उसकी चाची, मालकिन की देवरानी लीला नाश्ते में सहायता देने के लिए ऊपर आ गई। उसने भी मंटू का साथ दिया, ''हाँ भाभी जी, त्योहार का दिन है, घर में बहू आई है, जमाई आया है, ऐसे समय भी कुछ नहीं पहना! कलाई नंगी रहे तो असगुन लगता है। सुबह तो चूड़ियाँ भी थीं, कड़ा भी था।'' मालकिन ने नाश्ता बाँटने से हाथ रोककर मंटू से कहा, ''जा नन्हीं, दौड़कर जा, बीचवाले गुसलखाने में देख! सिर धोने लगी थी तो बालों में उलझ रहा था, वहीं उतार कर रख दिया था। जहाँ मंजन-वंजन पड़ा रहता है, वहीं रखा था। लाकर पहना दे!''

''मंटू जी ने धड़धड़ाती हुई नीचे गई। गुसलखाने में देखकर उसने वहीं से पुकारा, ''अम्मा जी, यहाँ कुछ नहीं है।''

मालकिन ने मंटू की बात सुनी तो चेहरे पर चिंता झलक आई। देवरानी से बोलीं, ''लीला, मेरे बाद तुम नहाई थी न। तुमने नहीं देखा! आलमारी में रख दिया था।'' और फिर वहीं बैठे-बैठे मंटू को उत्तर दिया, ''अच्छा बेटी, ज़रा अपने कमरे में तो देख ले! ड्रेसिंग टेबल की दराज़ में देख लेना, कपड़े वहीं पहने थे!''

लीला की बहन कैलाश भी आ गई थी। उसने भी पूछ लिया, ''क्या है, क्या नहीं मिल रहा?''

लीला को भाभी की बात अच्छी नहीं लगी। चेहरा गंभीर हो गया। उसने तुरंत अपनी बहन को संबोधन किया, ''काशो, हम दोनों तो नीचे के गुसलखाने में नहाने गई थीं. . .।''

मालकिन ने देवरानी के बुरा मान जाने की आशंका में तुरंत बात बदली, ''मैं तो कह रही हूँ कि तू वहाँ नहाई होती तो उठाकर सँभाल लिया होता।''

भाभी की बात से लीला को संतोष नहीं हुआ। उसने फिर कैलाश को याद दिलाया, ''काशो, मैं बीच के गुसलखाने में जा रही थी तो किलसिया ने नहीं कहा था कि बहू का साबुन-तौलिया और उसके लि ए गरम पानी रख दिया है। आपके बाद तो कुसुम ही नहाई थी। सँभाल कर रखा होगा तो उसी के पास होगा।''

बीच की मंज़िल से फिर मंटू की पुकार सुनाई दी, ''अम्मा जी, यहाँ भी नहीं है, मैंने सब देख लिया है।''

मालकिन ने कैलाश से कहा, ''काशो बहन, तू जा नीचे, मंटू से कह कि ज़रा कुसुम से पूछ ले। उसने सँभाल लिया होगा। मुझे तो यही याद है कि गुसल खाने की आलमारी में रखा था।''

कैलाश नीचे जा रही थी तो लीला ने मालकिन को सुझाया, ''भाभी जी, आपके बाद. . .।''

किलसिया कमरे में आ गई थी। बोली, ''गोल कमरे में चाय दे दी है। बड़े साहब, जमाई बाबू और बड़े भैया तीनों वहीं पी रहें हैं। पकौड़ी लौटा दी है, कोई नहीं खाएगा। बहू जी, उनकी बहन और बड़ी बिटिया भी चाय नीचे मँगा रही हैं।''

''सित्तो क्या कर रही है?'' मालकिन ने किलसिया से पूछा। ''नीचे के गुसलखाने में कपड़े धो रही है।''

किलसिया बहू, उनकी बहन और बड़ी बिटिया के लिए चाय लेकर चली तो बोली, ''आपके बाद कुसुम से पहले किलसिया भी तो गुसलखाने में गई थी। उसी ने तो आपके कपड़े उठाकर कुसुम के लिए साबुन-तौलिया रखा था।'' लीला ने स्वर दबा कर कहा।

''भाभी जी, मैंने आपसे कहा नहीं पर किलसिया की आदत अच्छी नहीं है। पहले भी देखा, इस बार भी दो बार पैसे उठ चुके हैं। परसों मैंने मेज़ की दराज में एक रुपया तेरह आना रख दिए थे, चार आने चले गए। 'इनके' कोट की जेब में रुपए-रुपए के सत्ताइस नोट थे, एक रुपया उड़ गया। कमरे किलसिया ही साफ़ करती है। मैंने सोचा, इतनी-सी बात के लिए मैं क्या कहूँ?''

मालकिन ने समझाया, ''तू भी क्या कहती है लीला! आठ आने, रुपए की बात मैं मानती हूँ, मरी उठा लेती होगी पर पाँच तोले का कड़ा उठा ले, ऐसी हिम्मत कहाँ? मरी बेचने जाएगी तो पकड़ी नहीं जाएगी?'' मंटू और कैलाश ने आकर बताया, ''कुसुम भाभी कहती हैं कि उन्होंने तो कड़ा देखा नहीं।''

सित्तो ने कपड़े धोकर सामने की छत पर लगे तारों पर फैला दिए थे। उसने वहीं से मालकिन को पुकारा, ''बीबी जी, सब काम हो गया, अब हम जाएँ!''

किलसिया फिर ऊपर आ गई थी। वह भी बोली, ''हमें भी छुट्टी दीजिए, त्योहार का दिन है, ज़रा घर की भी सुध लें।''

''जाना बाद में,'' मालकिन बोलीं, ''देखो, हमने सिर धोया था तो कड़ा उतार की गुसलखाने की अलमारी में रख दिया था। पहले ढूंढ़ कर लाओ, तब कोई घर जाएगा।'' किलसिया ने तुरंत विरोध किया, ''हम क्या जाने, हमें तो जिसने जो कपड़ा दिया गुसल खाने में रख दिया। रंग से खऱाब कपड़े उठा कर धोबी वाली पिटारी में डाल दिए। हमने छुआ हो तो हमारे हाथ टूटें।''

सित्तो ने दुहाई दी, ''हाय बीबी जी, हम तो बीच के गुसलखाने में गई ही नहीं। हम तो सुबह से महाराज के साथ बर्तन-भांडे में लगी रहीं और तब से नीचे कपड़े धो रही थीं।'' ''खाम़ख्वाह क्यों बकती हो!'' मालकिन ने दोनों को डाँट दिया, ''मैं किसी को कुछ कह रही हूँ? कड़ा गुस्लखाऩे में रखा था, पाँच तोले का है, कोई मज़ाक तो है नहीं! किसकी हिम्मत है जो पचा लेगा!''

घर भर में चिंता फैल गई। सब ओर खुसुर-फुसुर होने लगी। बात मर्दों में भी पहुँच गई। जमाई ज्ञान बाबू ने पुकारा, ''क्यों मंटा बहन जी, क्या बात है? माँ जी, मंटा ने छिपा लिया है। कहती है पाँच चाकलेट दोगी तो ढूंढ देगी।'' मंटा ने विरोध किया, ''हाय जीजा जी, कितना झूठ! मैंने कब कहा? मैं तो खुद सब जगह ढूँढ़ती फिर रही हूँ।'' बड़ा लड़का आनंद भी बोल उठा, ''अम्मा जी, याद भी है कि कड़ा पहना था। कहीं स्टील वाली अलमारी में ही तो नहीं पड़ा है। तुम घर भर ढूँढ़वा रही हो। तुम भूल भी तो जाती हो। चाभियाँ रखती हो ड्रेसिंग टेबल की दराज में छिपाकर और ढूँढ़ती हो रसोई में।''

मालकिन ने जीना उतरते हुए बेटे को उत्तर दिया, ''तुम भी क्या कह रहे हो? कल शाम लीला के साथ दाल धो रही तो बायें हाथ से घड़ी खोल कर रख दी थी। मंटू ने शोर मचाया, खाली कलाई अच्छी नहीं लगती। वही घड़ी नीचे रखकर कड़ा ले आई थी।''

बड़ी लड़की ने माँ का समर्थन किया, ''क्या कह रहे हो भैया, सुबह भी कड़ा अम्मा जी के हाथ में था। हमने खुद देखा है।''

कैलाश ने भी वीणा का समर्थन किया, ''सुबह मिश्रानी जी के यहाँ गई थीं, तब भी कड़ा हाथ में था। मिश्रानी जी ने नहीं कहा था कि बहुत दिनों बाद पहना है!''

सित्तो ने दोनों गुसलखाने अच्छी तरह देखे। फिर महाराज के साथ रसोई में सब जगह देख रही थी। किलसिया सब कमरों में जा-जाकर ढूंढ़ रही थी। न देखने लायक जगह में भी देख रही थी और बड़बड़ाती जा रही थी, ''बीबी जी चीज़-बस्त खुद रख कर भूल जाती हैं और हम पर बिगड़ा करती हैं।''

बात घर में फैल गई थी। बड़े साहब और छोटे साहब ने भी सुन लिया था। दोनों ही इस विषय में जिज्ञासा कर चुके थे। छोटे साहब भाभी से अंग्रेज़ी में पूछ रहे थे, ''आपके नहाने के बाद नौकरों में से कोई घर के बाहर गया था या नहीं?'' सभी सहमे हुए थे। स्त्रियाँ, लड़कियाँ सब आँगन में इकट्ठी हो गई थीं। दबे-दबे स्वर में नौकरों के चोरी लगने के उदाहरण बता रही थीं। अब मालकिन भी घबरा गईं थीं। देवरानी ने उनके समीप आकर फिर कहा, ''देखा नहीं भाभी, किलसिया क़समें तो बहुत खा रही थी पर चेहरा उतर गया है।''

''यहाँ आकर तो देखिए!'' किलसिया ने बड़े साहब के कमरे से चिक उठाकर पुकारा।

''क्यों, क्या है?'' मंटा और वीणा ने एक साथ पूछ लिया।

''हम कह रहे हैं, यहाँ तो आइए!'' किलसिया ने कुछ झुँझलाहट दिखाई। वीणा और मंटा उधर चली गईं। दोनों बहनें कमरे से बाहर निकलीं तो मुँह छिपाए दोहरी हुई जा रही थीं। हँसी रोकने के लिए दोनों ने मुँह पर आँचल दबा लिए थे।

किलसिया कमरे से निकली तो भवें चढ़ाकर ऊँचे स्वर में बोल उठीं, ''रात साहब के तकिये के नीचे छोड़ आईं। घर भर में ढुँढ़ाई करा रही हैं।''

''पापा के तकिये के नीचे।'' मंटा ने हँसी से बल खाते हुए कह ही दिया। लीला, कुसुम, कैलाश, नीता सबके चेहरे लाज से लाल हो गए। सब मुँह छिपा कर फिस-फिस करती इधर से उधर भाग गईं।

मालकिन का चेहरा खिसियाहट से गंभीर हो गया। अवाक निश्चल रह गईं। वीणा से ज्ञान बाबू ने अर्थपूर्ण ढंग से खाँस कर कहा, ''कड़ा मिलने की तो डबल मिठाई मिलनी चाहिए।''

छोटे बाबू से भी रहा नहीं गया, बोल उठे, ''भाभी, क्या है?''

गोल कमरे से बड़े साहब की भी पुकार सुनाई दी, ''मिल गया, मंटू कहाँ से मिला है?''

मंटू मुँह में आँचल ठूँसे थी, कैसे उत्तर देती?

छोटे साहब फिर बोले, ''भाभी, भैया क्या पूछ रहे हैं?''

मालकिन खिसियाहट से बफरी हुई थीं, क्या बोलतीं? लीला ने हँसी दबाकर भाभी के काम न में कहा, ''देखा चालाक को, कहाँ जाकर रख दिया। तभी ढूँढ़ती फिर रही थी।''

ज़ेवर चोरी की बात पड़ोसी मिश्रा जी के यहाँ भी पहुँच गई थी। मिश्राइन जी ने आकर पूछ लिया, ''मंटू की माँ, क्या बात है, क्या हुआ?''

''कुछ नहीं, कुछ नहीं।'' मालकिन को बोलना पड़ा, ''खाम़ख्व़ाह शोर मचा दिया।''

कुसुम से रहा नहीं गया। अपने कमरे से झाँक कर बोली, ''ताई जी, किलसिया ने अम्मा जी के साथ होली का मज़ाक किया है।''

ठंडी दीवारें

ईश्वर दास ने एक घुटन सी महसूस की। मई का महीना, बेहद तेज गर्मी और लू। उसका दिल घबरा गया। उसने बाँयें हाथ के अँगूठे से माथे पर बहता हुआ पसीना पोंछा। फिर हाथ से पीठ खुजलाने लगा। जब इस तरह भी चैन न मिला तो बनियान उतारकर उससे पीठ रगड़ने लगा। पर उसको अन्दर की घबराहट बाहर की घबराहट से अधिक तंग कर रही थी। वह अपने मन में कई निर्णय कर रहा था। साथ-साथ ही वह उस सौदे को, लाभ-हानि को भी आँक रहा था। उसका दिमाग इस घटना के हर पक्ष पर विचार कर रहा था। उसका सिर भारी होने लगा।

तब पाकिस्तान बने मुश्किल से आठ साल ही हुए थे। कूचा नबी करीम में उनके पड़ोसी मोहनलाल के घर से हर समय आहें सुनाई देती रहती थी। मोहनलाल के घर से मायावन्ती की आहें कभी-कभी ऊँचे-ऊँचे रोने में बदल जाती थीं। पाकिस्तान बनने पर मुसीबत तो सब पर ही आयी थी, पर उनकी मुसीबत कुछ अलग और अधिक ही थी। पिंडी भटियाँ में सब कुछ खोकर वे सुक्खे की मंडी से गाड़ी पर चढ़ने लगे थे। उनके प्राण डर से सिकुड़े हुए थे और चेहरे रुई जैसे सफेद दिखाई देते थे। सुक्खे की मंडी का प्लेटफार्म वही था जहाँ से वे कई बार गाड़ी पर चढ़कर हांफिजाबाद, साँगला हिल या जड़ाँवाले गये थे। मोहनलाल हमेशा प्लेटफार्म पर लगे पीपल के नीचे बेंच पर बैठना पसन्द करता था। इस प्लेटफार्म के चप्पे-चप्पे को वह अच्छी तरह पहचानता था। पर उस दिन तो ऐसा लगता था मानो यह किसी अंधेरी घाटी का फिसलने वाला द्वार है। उनके मन पर डर का कुछ ऐसा ही दबदबा था।

और आखिर वह बात होकर ही रही। शाम का अंधेरा घिरने लगा। मोहनलाल और मायावन्ती का परिवार और भी सिकुड़ गया। शेष अनेक परिवार अपनी गठरियाँ आदि सम्भाल कर उन पर बैठ गये। उनके दिल धकधक कर रहे थे। गाड़ी आ गयी। वे सब उसमें किसी तरह घुस गये। बैठने का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता था। बस जरा पैर टिकने की जगह चाहिए थी। पर गाड़ी जैसे वहीं जम गयी हो, चलने का नाम ही नहीं लेती थी। डब्बों में बैठे पुरुष, औरतें और बच्चे घबराने लगे। कुलबुलाहट का मानो पहला स्वर उठा हो। इतने में स्टेशन से थोड़ी दूर पर ढोल बजने जैसी आवाज पास आती गयी और उसमें कई दूसरी भयानक व डरावनी चीखे मिलती गयीं।

गाड़ी में बैठे लोगों में खलबली मच गयी। माताओं ने अपने पुत्र छातियों से लगा लिये। पुरुषों ने अपना सामान और पास खींच लिया। हर तरफ चीख-पुकार होने लगी। प्लेटफार्म पर अब भाले और बल्लम भी दिखाई देने लगे। मशालें इधर-उधर दैड़ने लगीं। सर्वत्र एक बेचैनी-सी फैल गयी।

जाटों ने सारी गाड़ी लूट ली। जो उनके सामने आया उसे काटकर फेंक दिया। डब्बे लाशों से भर गये। लहू बह-बहकर फर्श पर जम गया। किसी को कुछ पता नहीं कौन मरा और बचा। जो कोई बच भी गया, उसने खुद को मृतकों में गिन लिया और साँस रोककर चुपचाप लेटा रहा।

जब अगले दिन गाड़ी अमृतसर पहुँची, स्टेशन पर कई सोसायटियों के सेवक रोटी-पानी लेकर पहुँच गये। जब उन्होंने गाड़ी पर हुए कत्लेआम को देखा तो एक कोहराम मच गया। मोहनलाल भी घायल हो गया था, पर होश में था। मायावन्ती एक कोने में घबराई बैठी थी। उन्होंने पहली बार एक-दूसरे को देखा। रो-रोकर उनके आँसू आँखों में ही सूख गये थे। बच्चों को सम्भाला। छोटे कृष्ण का सिर अलग पड़ा था और धड़ अलग। सोहनलाल बेंच के नीचे दुबककर लेटा हुआ था। मायावन्ती ने उसे छाती से लगा लिया। अब कान्ता की खोज शुरू हुई। सोहनलाल के पैर फर्श पर जमे रक्त से भर गये। उन्होंने एक-एक लाश को ध्यान से देखा। वह कहीं दिखाई न दी।

मायावन्ती मानो जिन्दा ही मर गयी। जाहिर था कि कान्ता को जालिम उठाकर ले गये थे। उस समय वह केवल बारह-तेरह वर्ष की थी। जिन्दगी का इतना बड़ा घाव वह कैसे भरेगी? मोहनलाल ने कृष्ण के सिर को उठाकर चूम लिया। मायावन्ती ने आँखों में बराबर मुक्के मारे, पर उनमें से एक आँसू भी न निकला। कितना बड़ा आघात था!

अंधेरे में उड़ते तिनकों की तरह वे दिल्ली पहुँच गये। धीरे-धीरे जीवन के स्वर थिरकने लगे। मोहनलाल ने चाँदनी चौक में घड़ियों की दुकान खोल ली। उसका काम अच्छा चलने लगा। सोहनलाल अब बी.ए. कर चुका था और कुछ समय से डिप्टी कमिश्नर के दफ्तर में अच्छे पद पर था। पर आठ वर्षों में भी चन्द्रकाता वाले घाव पर पपड़ी न जम सकी। उसमें से गन्दा खून रिसता रहा और मायावन्ती को गश आते रहे। कोई ऐसा साधन न था जिसका सहारा मोहनलाल ने अपनी चन्द्रकान्ता को ढूँढ़ने के लिए न लिया हो। वह होम मिनिस्टर से मिला। उससे पाकिस्तान के होम मिनिस्टर को विशेष पत्र लिखवाया कि वह अपने रिकवरी स्टाफ की सहायता से कान्ता को ढूँढ़ें। फिर सोहनलाल ने डिप्टी कमिश्नर की सहायता से पाकिस्तान के हाई कमिश्नर को कहलवाया कि उसकी बहन को ढूँढ़ने के हर सम्भव यत्न किये जाएँ। हाई कमिश्नर ने अपनी सरकार से कहकर पाकिस्तान के अखबारों में इनाम के इश्तहार भी दिये। इन आठ वर्षों में उनके जिले की उठायी हुई लड़कियाँ बरामद हो गयी थीं। एक-दो से मायावन्ती को चन्द्रकान्ता के बारे में यह भी पता लगा कि उसे एक चौधरी ने घर बैठाया हुआ है। यह सुनकर उन्होंने प्रयत्न और तेज कर दिये पर कोई सफलता न मिली। मायावन्ती अपना सिर पीट-पीटकर रोयी, "इससे तो अच्छा था कि कान्ता मर ही जाती, गाड़ी में ही काट दी जाती।" फिर ईश्वर के आगे मनौती करती, "भगवान, मुझे उसके मरने की खबर सुना! उसकी बहलोलपुर के चौधरी निसार अहमद के घर बैठने की खबर बिलकुल निर्मूल हो।" पर वह दिल का क्या करती जो हर समय चन्द्रकाता का नाम जपता रहता। चन्द्रकान्ता उसे अपने दोनों पुत्रों से भी अधिक प्यारी थी। कान्ता को उसने हथेली पर हुए छाले के समान पाला था और उसे गरम हवा लगने की बात वह कभी सपने में भी सोच नहीं सकती थी। "कान्ता की बच्ची! इससे तो अच्छा था कि तू पैदा होते ही मर जाती या मैं ही तुझे जन्म देकर मार देती। यह दुःख न देखती।" यह कहकर वह फिर सिसकने लगी। उसका लड़का सोहनलाल जो अभी दफ्तर से लौटा ही था, उसको धैर्य देने लगा।

जैसे किसी मच्छर ने ईश्वरदास को काट खाया हो, वह अनजाने ही चैतन्य हो गया। उसे पता ही न लगा कि कब उसकी आँख लग गयी थी। जागकर वह फिर पसीना पोंछने लगा और एक बार फिर उस पर नींद की मस्ती छाने लगी। "चाचाजी, आपको पिताजी बुलाते हैं," अभी वह कचहरी से लौटा ही था कि मोहनलाल का लड़का उसे बुलाने आया, "जरा जल्दी आओ, माताजी बेहोश हो गयी हैं।"

आगे जो कुछ उसने देखा, वह उसकी आशा के पूरी तरह से विपरीत तो नहीं था पर उसे एक धक्का-सा जरूर लगा था। मायावन्ती काफी देर से बेहोश पड़ी थी। मोहनलाल उसके दाँतों में चम्मच से पानी डाल ने का यत्न कर रहा था, पर उसके दाँत खुल ही नहीं रहे थे।

आज सुबह से ही मायावन्ती चन्द्रकान्ता को याद करके आहें भर रही थीं। डाक्टर आया, उसने मायावन्ती को टीका लगाया। अभी वह टीके का प्रभाव देख ही रहा था कि बाहर एक लॉरी आकर रुकी। ईश्वरदास जल्दी-जल्दी उठकर बाहर गया। उसने देखा, लॉरी पुलिस की थी और इसमें से एक थानेदार ने बाहर निकलकर उससे पूछा, ''मोहनलाल जी का घर यही है?''

ईश्वरदास ने उत्तर में केवल सिर हिला दिया।

इसके बाद उसने किसी को बाहर आने का इशारा किया। लॉरी में से एक युवती बाहर निकली और ईश्वरदास के मुँह की तरफ देखने लगी। इतने में मोहनलाल भी बाहर निकल आया। उसने जब इस युवती के रूप में चन्द्रकान्ता को अपने सामने देखा तो उसे अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ। फिर उसने आगे बढ़कर बेटी को गले लगा लिया और उसका मुँह व सिर चूमने लगा।

उधर चन्द्रकान्ता के उदास चेहरे पर कोई भाव परिवर्तन न हुआ। वह वैसे ही बौखलायी-सी वातावरण को पहचानने का प्रयत्न कर रही थी। मोहनलाल उसे अन्दर ले गया। मायावन्ती थोड़ा-थोड़ा होश में आने लगी थी। जब मोहनलाल ने कहा, ''देख माया, कान्ता आ गयी है,'' तो उसे अपने कानों पर विश्वास न हुआ। उसने पलकें झपकाकर आँखें खोलीं। सामने सच ही चन्द्रकान्ता खड़ी थी। वही कान्ता जिसे वह स्वयं से भी अधिक प्यार करती थी, वही कान्ता जिसके वियोग में पिछले आठ वर्षों में वह अपनी सेहत खो बैठी थी। हाँ, यह वही चन्द्रकान्ता थी जिसके दुःख को उसकी माँ नहीं भूल सकी, चाहे वह अपने पुत्र कृष्ण के विछोह को किस्मत की बात मान चुकी थी।

चन्द्रकान्ता माँ की तरफ खाली आँखों से देखने लगी। आखिर माँ ने उठकर उसे छाती से लगा लिया। आज कई वर्षों के बाद उसी आँखों में आँसुओं की बाढ़ आयी थी। मायावन्ती की आँखों के स्रोत, जो बिलकुल सूख चुके थे, अब फिर भरने लगे और उनमें से आँसुओं की दो नहरें बहने लगीं। पर कान्ता तो ठंडी राख थी, जैसे उसने घर के किसी व्यक्ति को न पहचाना हो। अपने भाई सोहनलाल से भी वह अच्छी तरह न मिली। माँ ने उसे प्यार से अपने पास बैठा लिया।

इतने में किसी को ध्यान आया कि थानेदार अभी खड़ा है। मोहनलाल ने उसे और उसके साथ के तीन आदमियों को आदर से बैठाया। रोशन कपूर रिकवरी स्टाफ में था और उसने खुद चन्द्रकान्ता बरामद करने के लिए छापा मारा था। वह धीरे-धीरे सारी बात सुनाने लगा। इतने में चाय बन गयी और सबने खुशी-खुशी उनको चाय पिलायी। बातों का सिलसिला काफी देर तक चलता रहा। इस बीच चन्द्रकान्ता गुमसुम बैठी रही, जैसे वह अपने घर आकर कहीं और आयी हो। न उसके चेहरे पर प्रसन्नता की कोई किरण आयी और न ही उसकी आँखों में पानी छलका। जितनी देर थानेदार बातें करता रहा, वह सिर नीचा किये बैठी रही। बीच-बीच में मायावन्ती उसके सिर को थपथपा देती। बरामदे में किसी के कदमों की आवाज आयी तो ईश्वरदास का स्वप्नजाल टूट गया। गरमी उसे अभी बेहाल कर रही थी। वह बनियान का पंखा बनाकर मुँह पर हवा करने लगा। ढलती दोपहर के तीखे ताप से उसे ऊँघ महसूस होने लगी।

कुछ दिनों में ही मायावन्ती का उत्साह धीमा पड़ गया। अब वह चन्द्रकान्ता को बुलाकर उससे बोलने की बजाय कुछ खिची-खिची-सी रहने लगी। कान्ता ने वर्षों की दुःख-भरी गाथा पलों में सुना दी थी पर अपना दिल नहीं खोला था।।।

''जब वे डब्बे में भाले चमकाते और 'अल्लाह हो अकबर' कहते चढ़े तो मेरी चीखें निकल गयीं। कृष्ण मेरे पास बैठा था। एक दैत्य ने उसे हाथ से अपनी तरफ घसीटा और गँड़ासे से उसका सिर अलग कर दिया। मैं चीख पड़ी। किसी ने मुझे पकड़कर डब्बे से बाहर घसीटना शुरू कर दिया। मैं चीखती-चिल्लाती बेहोश हो गयी।''

और जब मुझे होश आया, मैंने स्वयं को एक घर में चारपाई पर लेटी पाया। मेरे पास एक और स्त्री बैठी थी। उसने मुझे पानी पीने के लिए दिया। उसे देखकर मैं फिर चीख पड़ी और मैंने फिर आँखें बन्द कर लीं, जैसे उसके अस्तित्व और अपने आसपास के वातावरण को स्वीकार करने में असमर्थ होऊँ। वह औरत मुझे पंखा करती रही। कुछ दिन इसी तरह अनमने, बिना खाये-पीये से बीत गये। कभी-कभी कोई युवक-सा लड़का भी मेरी तरफ निगाह मार जाता। मैं घुटनों में सिर छिपा लेती। मेरे आँसू पता नहीं किस वीराने में खो गये थे। मैं धीरे-धीरे पिघलती गयी और अन्त में मुझे स्वयं से समझौता करना पड़ा। मुझे पता लग चुका था कि सुक्खे की मंडी से उठाकर मुझे बहलोलपुर लाया गया था और मैं वहाँ के जैलदार चौधरी गुलाम कादिर के घर हूँ। चौधरी साहिब की बेगम ही इतने दिन मेरे पास बैठी रही थी। उसकी आँखों में सहानुभूति झाँकती थी। पर मैं तो अपने परिवार, विगत और संस्कारों से तोड़ी गयी थी। इस पर खुद मुझे सहज ही विश्वास नहीं हो रहा था।

धीरे-धीरे मुझ पर सारा रहस्य प्रकट हुआ और यह भी पता लगा कि मैं कभी बचकर अपने माँ-बाप के पास नहीं जा सकती। मेरी फड़फड़ाहट में से जोश और शक्ति कम होती गयी। रहमत बीबी ने मेरे साथ प्यार-भरा सलूक किया और मेरे दुःख को भुलाने का यत्न किया। बड़े चौधरी साहब ने भी मेरे सिर पर शफक्त-भरा हाथ रखा और इस तरह साल-पर-साल बीतते गये। हवा का एक तीखा झोंका आया और खिड़की के पट एक-दूसरे से टकराये। जलती लकड़ी-सा लू का झोंका ईश्वरदास के शरीर को जला-सा गया और वह 'हाय राम' कहता, पसीना पोंछता फिर ऊँघने लगा।

ईश्वरदास की लड़की सन्तोष ने उसे कई बार बताया था कि कान्ता हर समय बड़ी उदास-सी रहती है और किसी से बातचीत तक नहीं करती। उसकी आँखें हर समय पथरायी रहती हैं और उसके चेहरे पर बेबसी की एक मोटी तह जमी होती है। एक दिन सन्तोष ने कान्ता को घेर लिया, ''अरी कान्ता, तू तो कभी बाहर ही नहीं निकलती। इस तरह कब तक चलेगा?''

आगे एक सूनी चुप्पी और सन्तोष के फिर पूछने पर यह नपा-तुला-सा उत्तर, ''क्या करूँ! दिल नहीं मानता। इस दिल का क्या करूँ? फिर लोग मेरी तरफ देखकर दबी जबान में खुसर-फुसर करने लग जाते हैं। उस समय मेरा मन करता है मैं फौरन मर जाऊँ।''

सन्तोष ने उसे धैर्य देते हुए कहा, ''कभी हमारे घर आ जाया कर, दिल लग जाएगा।''

इस तरह वे दोनों लड़कियाँ एक-दूसरे के निकट आ गयीं। एक दिन सन्तोष ने कान्ता से उदासी का कारण पूछ ही लिया। वह मूड में थी, कहने लगी, ''केवल एक शर्त पर, तोषी, कि किसी को न बताना। दो-तीन साल मैं चौधरी गुलाम कादिर के घर आराम से ही रही। उन्होंने मुझे कभी तंग नहीं किया। मेरा नाम बदलकर उन्होंने सईदा खातून रख लिया। इस बात की मुझे पूरी सूझ आ गयी थी कि मुझे अब यहाँ की मिट्टी में ही मिलना है। रहमत बीबी मेरे साथ प्यार-भरा व्यवहार करती थीं। उनका लड़का चौधरी निसार अहमद लाहौर में पढ़ता था। वह जब कभी बहलोलपुर आता, मेरे साथ बड़ी मीठी-मीठी बातें करता और औरतों पर किये गये जुल्म आदि की निन्दा करता। मेरे दिल के किसी कोने में उसकी बातें सुनने की इच्छा जाग उठी। कभी-कभी वह मुझे शाम को चिनाब के किनारे सैर के लिए ले जाता जो कि हमारे गाँव से केवल कोस भर दूर था।''

स्पेशल
ऑफर के
साथ

क़ाजल फुट वेयर

हमारे यहां सभी प्रकार के
फुटवेयर उपलब्ध है

कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)

आशापुरा ज्वैलर्स

सोने-चांदी के गहनों के व्यापारी

शिवाजी रोड, शहाड़ फाटक, उल्हासनहर-४
फोनः ०२५१-२७०९९६२

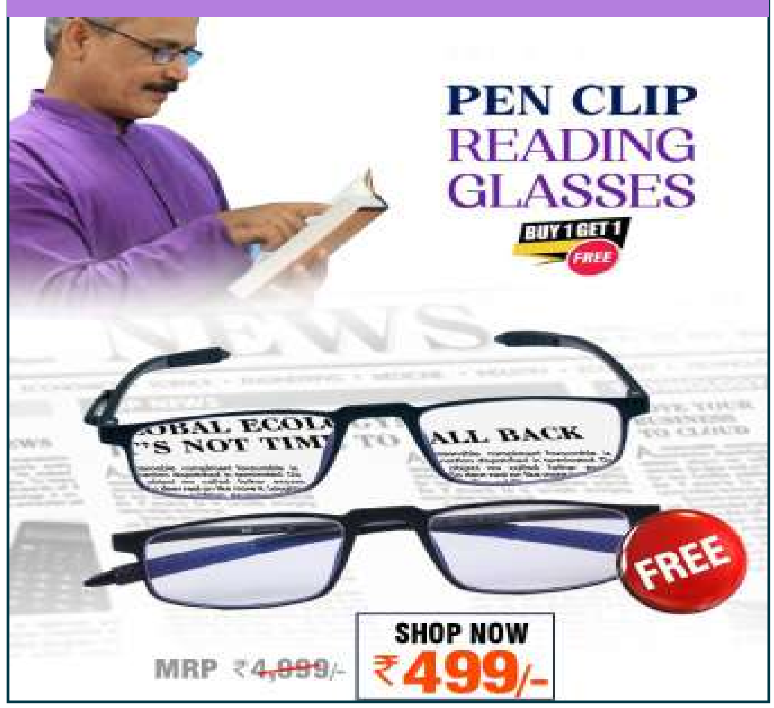

आकर्षण है। हम दोनों शाम के ताँबा रंगे सूर्य को उसमें डूबते हुए देखते और फिर जब चाँद की टुकड़ी दूसरी तरफ से उसकी लहरों में नाचने लगती, ''हमारी बातें समाप्त हो जातीं और हम उसकी ओर देखते ही रहते। चिनाब के किनारे चाँदनी रात के जादू का मैं बयान नहीं कर सकती।'' और यह कहकर कान्ता ने एक लम्बी आह भरी, जैसे उसके अन्दर से कुछ धुआँ-सा बाहर निकला हो। उसने अपने होंठों को जीभ से तर किया। सन्तोष की आँखें कान्ता के चेहरे पर गड़ गयीं जिसमें उसने पहली बार खुशी की थोड़ी-सी चमक देखी थी। वह अवाक् बैठी कान्ता की बात सुनती रही।

''चिनाब को तो वर्षा में देखना चाहिए जब उसका दूसरा किनारा ही नहीं दिखाई पड़ता। गढ़गढ़ करती, मटियाले पानी की फुँफकारती लहरें और उन पर तैरते झाग के गोले... इस दृश्य का केवल देखने वाला आनन्द उठा सकता है। छोटी होते हुए भी मैं पर्वी और बैशाखी को चिनाब पर जाया करती थी पर तब मेरी सूझ बच्चों जैसी थी। अब चिनाब की लहरों के साथ मेरी छाती में भी भाव-उछाल उठते और मैं उन पर मोहित हुई, उनमें बँधी हुई कई बार यहाँ पहुँच जाती। फिर जब निसार अहमद मेरे साथ होता, उन पलों का तो कहना ही क्या!''

कान्ता ने चुन्नी से पलकें पोंछ लीं, उनके कोनों में नमी-सी उभर आयी थी। सन्तोष के लिए यह भी आश्चर्यजनक था कि कान्ता का पथरीला चेहरा रो सकने की सामर्थ्य भी रखता है। ''एक दिन रहमत बीबी ने जिसे मैं भी अम्मा कहने लगी थी, मुझे अपने पास बैठाकर बड़े प्यार से कहा, ''अब मैं ही तेरी अम्मा हूँ। पहली माँ की तू समझ, वफात (मौत) हो चुकी है। तेरे लिए मेरा भी कुछ फर्ज है। अब मैं तुझे इस तरह और नहीं रख सकती।'' मैं क्या कहती! चुप रही। अम्मा इस बीच मेरी तरफ ध्यान से देखती रही। मेरी आँखों के आगे कई पुरानी और नई फिल्में चल रही थीं। अम्मा ने ही मेरी चुप्पी को तोड़ा, ''अगर तुझे एतराज न हो...'' उसने प्रश्नवाचक नजरें मुझ पर फेंकी। मेरी छाती धकधक करती रही। ''मैं तुझे अपने से अलग नहीं कर सकती। यह खुदा ने मोह भी क्या चींज बनायी है? तेरा निकाह मैं निसार अहमद के साथ करना चाहती हूँ। तुझे कबूल है?''

''मैं खुदा से और क्या माँग सकती थी! चुप रही। परन्तु मेरी आँखों से अम्मा को जवाब मिल गया। और, सन्तोष, तूने यह भी कभी नहीं देखा होगा कि एक ही औरत एक समय माँ भी हो सकती है और सास भी, एक ही आदमी अब्बा भी हो सकता है और ससुर भी। मेरा निकाह जिस धूमधाम से उन्होंने किया, वह मैं तुझे क्या बताऊँ। शायद ही बयान कर सकूँ।''

सन्तोष को कान्ता के चेहरे पर एक रोशनी-सी बिखरी दिखाई दी। ईश्वरदास एकदम चौंककर उठा। बाहर दरवाजे को किसी ने जोर से खटखटाया था। पर उसे कोई भी दिखाई न दिया। साये गहरे होने लगे पर ताप अभी भी कम न हुआ था। उसकी आँखों से नींद भी नहीं गयी थी। मोहनलाल एक दिन उससे कहने लगा, ''भाई साहब, आपसे एक सलाह लेनी है। कान्ता का क्या करें? वह हर समय उदास रहती है, किसी से बोलती नहीं। उसकी माँ हर समय खीझती रहती है।''

ईश्वरदास उनके घर जाकर बैठा ही था कि पास खड़ी मायावन्ती बिलख पड़ी, ''भाई साहब, परमात्मा से हमने माँगा तो यही कुछ था पर उसे हमारी माँग ही ठीक समझ नहीं आयी। हे भगवान! कहीं यह लड़की मर ही जाती। नहीं तो यह बरामद ही न होती और हमें बता देते कि कान्ता फसादों में ही मर गयी है!'' इतना कहकर वह फिर रोने लगी। उसे धैर्य देते हुए ईश्वरदास ने कहा, ''बहन, भगवान के काम के आगे किस का जोर है? इसमें ही भला होगा। हाँ आप कहें, भाई साहब, क्या पूछने लगे थे?'' उसने मोहनलाल की ओर मुड़ते हुए कहा।

''मैंने सोचा था कि इसको कहीं ब्याह कर इसका जीवन नए सिरे से शुरू किया जाऐ पर कोई इससे विवाह करने को तैयार ही नहीं होता। जिसको एक बार पता लगता है कि इसे पाकिस्तान से आठ साल बाद बरामद किया है, वह दोबारा इस तरफ कान भी नहीं करता। किसी को इस बात पर जरा भी लिहाज नहीं आता कि इसके विवाह पर हम बहुत-कुछ देने को तैयार हैं। आप ही कोई घर बताएँ।'' मोहनलाल ने निराश स्वर में कहा।

''आप सही कहते हैं। मैं आपके दुख को समझता हूँ,'' ईश्वरदास ने बात बदलते हुए कहा, ''किया क्या जाए! हमारा सारा समाज बेशक दागी पड़ा हो पर किसी अबला की चुन्नी पर निशान भी हो तो कोई उसे स्वीकार करने को तैयार नहीं। आप कहेंगे तो सही कि ईश्वरदास कैसी पागलों जैसी बातें करता है पर मैं कहँगा कि अगर हमें उन्हें स्वीकार ही नहीं करना था, तो किस मुँह से हम सरकार को उधर रही स्त्रियों और लड़कियों को बरामद करने को कहते है हमने इनको वहाँ-वहाँ से तो उखाड़ लिया जहाँ वे कई वर्षों में जैसे-तैसे अपनी जड़ें जमाने में सफल हो पायी थीं पर हम इनको इधर लगाने को तैयार नहीं।''

मोहनलाल ने ईश्वरदास की बात की हामी भरी और उसके मुँह से एक ठण्डी साँस निकल गयी।

मायावन्ती की आँखों से आँसू बहने लगे और वह उन्हें दुपट्टे से सुखाकर कहने लगी, ''पर अगर यह कहीं अब मर ही जाए तो मैं सुखी हो जाऊँ। हे भगवान, मैं तो जल गयी हूँ। मेरा कलेजा कोयला हो गया है। पैदा ही ना होती कान्ता की बच्ची। किस जनम का बदला लिया है हमसे?''

ईश्वरदास उनको धैर्य देता हुआ उठ खड़ा हुआ और चलते-चलते कहने लगा, ''पर, बहन, यह बात भूलकर भी कान्ता के सामने न कहना। बता, इसमें उसका क्या अपराध है? मैं भी कोई लड़का ढूढूँगा, आप भी ढूँढ़ो, मिल-जुलकर कोई-न-कोई तो मिल ही जाएगा पर भगवान के नाम पर चन्द्रकान्ता का दिल न तोड़ना। आपको क्या पता, उस पर क्या बीत रही है! कभी उसके दिल की गहराइयों में भी झाँककर देखा है?'' और वह जब कमरे से बाहर निकलने लगा, कान्ता उसे सामने से आती हुई मिली। उसे उसके पथराये हुए चेहरे पर तरस आ गया और उसने सहानुभूति से पूछा, ''क्या बात है, बेटी? क्या कर रही हो?'' कान्ता का चेहरा और रूखा हो गया। वह कुछ न बोली। ईश्वरदास को उसकी आँखों में कई सूखे हुए आँसू लटकते नजर आये जैसे कि उसने उनकी सारी बातचीत सुन ली हो।

जब ईश्वरदास की आँख खुली, शाम के साये गहरे होने लगे थे और गरमी का ताप घट गया था। उसने उठकर कमरे का एक चक्कर लगाया और फिर अपनी जगह आकर बैठ गया। आज उसका दिमाग कुछ और नहीं सोच पा रहा था। वह फिर वहीं बहाव में बह गया। चन्द्रकान्ता की जीभ से तभी ताला खुलता जब वह सन्तोष के पास आती। ईश्वरदास की हमदर्दी ने उसका मन जीत लिया था। वह अपने दुःख उनके सामने कह देती और जो बात उससे न कर सकती, वह सन्तोष से कर लेती। एक दिन वह सन्तोष के पास बैठी अपने घावों से पपड़ी उखाड़ बैठी और उनका असली रूप उसे दिखाने लगी।

''पिछले दो साल में जबसे मैं यहाँ आयी हूँ, एक रात भी मैं आराम से नहीं सो सकी। दिन में हर समय उदासी के इस्पाती परदे की ओट में निसार अहमद खड़ा मुझसे बातें करता रहता है, जिसे केवल मैं ही सुन सकती हूँ। रात को सपनों में वह मेरी बाँहें पकड़कर मुझे अपने साथ ले जाता है और चिनाब के किनारे की याद दिलाता है। इससे भी बढ़कर मेरे नईम और सलमा रो-रोकर मुझे आवाजें देते रहते हैं। उनके उतरे हुए चेहरों को मैं देख नहीं सकती। मैं माँ हूँ, चाहे चन्द्रकान्ता होऊँ या सईदा ख़ातून। इससे मुझे कोई अन्तर नहीं पड़ता। ममता मेरी छाती में खींचातानी करती है, ममता मेरी आँखों को नम कर देती है, पर उसे किसी ने तोड़कर रख दिया है। बता तू मेरे लिए

कुछ नहीं कर सकती?''

सन्तोष ने चुन्नी मुँह में डाल ली और ठंडी साँस को अन्दर रोककर उसकी बात सुनती रही।

''यह बात आज मैं तुझे बताने लगी हूँ, यह मानकर कि दुनिया में तुझे छोड़कर इसका कभी किसी को पता नहीं लगेगा। मेरे खाविन्द निसार अहमद ने जो प्यार मुझे दिया, उसे इस जिन्दगी में तो मैं कभी भूल ही नहीं सकती। हमारी शादी के एक साल बाद हमारे घर नईम की पैदाइश हुई और उसके डेढ़ साल बाद सलमा मेरी बेटी की। हाय, अगर कभी मैं तुझे अपना जोड़ा दिखा सकती! फिर तू कहती, ''सईदा, जालिम! तू ऐसे खूबसूरत और प्यारे बच्चे छोड़ इधर कैसे आ गयी?'' वैसे तो उस सवाल का जवाब मेरे पास भी नहीं पर मैं तुझे बताने का यत्न जरूर करूँगी।

सलमा होने के बाद मेरे अब्बा की, खुदा उनकी रूह को जन्नत नसीब करे, वफात हो गयी थी। इसलिए निसार अहमद जैलदार बन गया। हमारी जमीन काफी थी। हमारे सारे इलाके में बड़ा रसूख था और चौधरी निसार अहमद का नाम हर तरफ इज्जत से लिया जाता था। सहज में कोई बड़े-से-बड़ा अफसर भी उन्हें नाराज नहीं कर सकता था। अपने इलाके की वह इज्जत-आबरू थे। यही कारण है कि जब कभी पाकिस्तान की पुलिस लड़कियाँ बरामद करने के लिए छापे मारती, वह हमारे घर की ओर मुँह करने का साहस भी न करती। उन्होंने मुझे स्वयं कई बार बताया कि 'सिविल एंड मिलिटरी गजट' और 'नाए वक्त' में मेरी बरामदी में मदद करने वाले को पाकिस्तान गवर्नमेंट ने एक हजार रुपया इनाम देने का एलान किया है। उन्होंने मुझे कई बार बड़े प्यार से भी पूछा कि क्या मैं हिन्दुस्तान में अपने माँ-बाप के पास जाना चाहती हूँ? अगर मैं चाहती तो वह खुद ही सरहद तक मुझे छोड़ जाते। जब कभी वह ऐसी बात कहने लगते, मैं उनके मुँह के आगे हाथ रखकर बिलखने लगती और कहती, ''अब शायद मैं आप पर भार हो गयी हूँ। आप मुझे रखने को राजी नहीं। क्या आप मुझे नईम और सलमा की खातिर भी नहीं रख सकते?'' वह मुझे सीने से लगा लेते और हम एक लम्बे बोसे में यह सारी बात भूल जाते।

पर एक दिन साफ आसमान में एक काली स्याह अँधेरी आयी। गाँव में शोर मच गया कि पुलिस की बहुत-सी गारद आयी है और साथ में पुलिस कप्तान भी है। उसके साथ हिंदुस्तानी पुलिस अफसर भी हैं। यह पार्टी हमारे घर के आगे पहुँची। उन्होंने पूछा, ''चौधरी साहब कहाँ हैं? यह बात अभी उनके मुँह में ही थी कि निसार अहमद भी बाहर से आ गया। बस, सन्तोष, बाकी की बात तो बताना भी मेरे लिए नामुमकिन है। मेरे खाबिन्द की एक बात न मानी गयी। मैंने मिन्नत की कि 'मैं नहीं जाना चाहती, मुझे न ले जाओ।' मैंने कहा, ''मेरे तो माँ-बाप मर चुके हैं। यह मेरे दो बच्चे हैं। इनकी तरफ देखो।'' मैंने इल्तजा की, ''मैं चौधरी साहब की बीवी हूँ और अपनी मरजी से इनसे निकाह करवाया है।'' मैं रोयी, ''चन्द्रकान्ता मर चुकी है और उसमें से मैंने, सईदा ख़ातून ने, जन्म लिया है। आप भूलते हैं।'' मैंने नईम को आगे किया, ''आप इसकी शक्ल को मेरे से मिलाकर देखो। क्या यह आपको मेरा लख्तेजिगर नहीं लगता?'' पर वहाँ तो केवल एक जवाब था, ''हम कानून के हाथों मजबूर हैं। हमें पाकिस्तान गवर्नमेंट की सख्त हिदायत है कि आपको वापस हिन्दुस्तान पहुँचाया जाए।''

उस समय सूरज डूब नहीं रहा था, मैं सच कहती हूँ, सन्तोष, उसका इनसानियत के कातिल खून कर रहे थे। वही लाल-काला खून सारे माहौल में बिखर गया था। जिस समय निसार अहमद ने मजबूर होकर मुझे जीप पर चढ़ने में मदद की, वह आप बेहोश होकर गिर पड़ा। रहमत अम्मा ने मेरी बलइयाँ लीं। नईम और सलमा रो रहे थे। उन्हें पुलिस के सिपाही पीछे हटा रहे थे और अम्मा उन्हें तसल्ली दे रही थी कि उनकी वालिदा कहीं बाहर जा रही है और शीघ्र ही वापस आ जाएगी। पर उन मासूमों के दिल को सच्चाई का अनुभव हो चुका था। मैं खुद उड़-उड़कर बाहर गिर रही थी। अचानक जीप चली और मेरे आगे कयामत का अँधेरा छा गया। उसके बाद मुझे कुछ याद नहीं।

इतने में ईश्वरदास की रोटी आ गयी थी। वह चुपचाप खाने लगा। पर एक कौर भी उसके मुँह में नहीं जा पा रही थी। उसका हाथ वहीं रुक गया और वह विचारों के सागर में बह चला। ''पिताजी!'' एक दिन सन्तोष ने उससे कहा, ''क्या आप अपने हाथ से मेरा गला दबाकर मुझे मार सकोगे?'' वह कहने लगा, ''पागल तो नहीं हो गयी बेटी! भला ऐसा कौन पिता कर सकता है! साफ-साफ कह, क्या कहना चाहती है?'' ''ऐसे माँ-बाप भी हैं जिनके अप्रत्यक्ष हाथ अपनी औलादों के गले घोंट देते हैं। कान्ता के दुःख के हर पक्ष से आप जानकार हैं, मैं उसके लिए आपसे एक दया माँगती हूँ। मेरी विनती है, इनकार न करना। वह मर तो पहले ही रही है, अब आपसे 'न' कराकर मरेगी।'' ''कुछ बताएगी भी, तोषी?''

''आपसे एक आदमी मिलना चाहता है, मिलाऊँगी मैं।''

''कौन?'' ''निसार अहमद! नहीं, नहीं, अब्दुल हमीद।'' ''निसार अहमद...वह किस तरह यहाँ आ गया? उसे कान्ता का सन्देश किसने भेजा?'' एक ही साँस में कई प्रश्न पूछ लिए ईश्वरदास ने। ''इन सारे प्रश्नों की कोई आवश्यकता नहीं। मैं उसकी बहन हूँ, समझ लो, मैं ही इसके लिए जिम्मेदार हूँ।'' अचानक ईश्वरदास का हाथ घुटने से फिसलकर सामने थाली से जा टकराया और उसका किनारा उसे चुभ गया। उसने धीरे-से हाथ को मला और सिर को झटककर फिर खाना खाने लगा। आज वह कैसे इन विचारों में घिरा हुआ था, वह स्वयं पर हैरान हो गया।

ईश्वरदास को मजिस्ट्रेट की कचहरी में पेश किया गया। उसे हथकड़ी लगी हुई थी और पुलिस ने उस पर फौजदारी का मुकदमा दायर किया था। उसे उसका अपराध बढ़कर सुनाया गया, जिसका सार यह था कि उसने कूचा नबीकरीम की चन्द्रकान्ता नाम की एक लड़की को वकील होने की हैसियत से जिला गुजरात की सईदा खातून होने की पुष्टि की है और इस तरह उसे धोखे से परमिट दिलवाया है। इस प्रकार चन्द्रकान्ता के पाकिस्तान भाग जाने की साजिश में उसका हाथ है। उसने देखा कि सामने मोहनलाल, मायावन्ती और सोहनलाल खड़े थे। और भी बहुत-से लोग मुकदमा सुनने आये हुए थे। मोहनलाल कह रहा था, ''देखो यारो, इस तरह का पड़ोसी तो भगवान दुश्मन को भी न दे। हमारी लड़की को इसने पाकिस्तान भगा दिया है। यह हिंदुस्तानी है या देशद्रोही?'' मायावन्ती मुँह ढक कर सुबक रही थी। उसकी आँखों से आँसुओं की धार रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। मोहनलाल चुप था और उसके चेहरे पर चिन्ता के निशान उभरे हुए थे।

सन्तोष बड़े धैर्य से खड़ी सारी कार्यवाही सुन रही थी। ईश्वरदास ने अपने हक में कुछ भी न कहा। मजिस्ट्रेट ने उसको दो वर्ष की कैद की सजा सुना दी।

और अब ईश्वरदास की आँख तब ही खुली जब वार्डन रोटी के बरतन उठाने आया। उसके मन में कोई चिन्ता न थी, कोई अफसोस न था। जेल की कोठरी की गरमी, यह बेस्वाद रोटी, यह सलाखों वाली खिड़की जिसके पीछे वह बन्द था। सब कहीं पीछे रह गये थे। उसे फिर निसार अहमद का खिला हुआ चेहरा दिखाई दिया जिसके प्यार के आँगन में सईदा खातून की खुशी का पौधा फिर से लग गया था। वार्डन को बरतन पकड़ाते हुए वह उठ खड़ा हुआ और उसने सन्तोष से एक डकार ली।

-गुरमुख सिंह जीत

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

Good Vibes Onion Hairfall Control Oil I Strengthening I Hair Growth I No Parabens, No Sulphates, No Mineral Oil, No Animal Testing (100 ml)

Good Vibes Argan Oil Hairfall Control Vitalizing Serum I Frizz Control, Shine, Stregthening I No Parabens, No Sulphates, No Animal Testing (50 ml)

3 Austrian Diamond
Jewellery Sets
(3AUD2)
M.R.P. : ₹1,999
Only At
₹499

SCOTTISH CLUB
PACK OF 5 V NECK T-SHIRT
M.R.P. : ₹2,495/-
OFFER PRICE ₹599

10 BEDSHEET SETS
+ 15 PILLOW COVERS
MEGA COMBO
SHOP NOW
₹1,999/-

NIRLON
12 CAVITY
NON- STICK APPAM PATRA
WITH LONG HANDLE & LID
MRP ₹999/-
SHOP NOW
₹399/-

Easy Go Stylish
LEATHERITE TROLLY BAG
SHOP NOW
₹1,499/-

सिंघाड़ा की खेती...

सिंघाड़ा तालाबों में पैदा होने वाली एक नगदी फसल है। मध्यप्रदेश में सिंघाड़े की खेती लगभग ६००० हेक्टेयर में किया जाता है। सिंघाड़े के कच्चे व ताजे फलों का ही उपयोग मुख्यतः किया जाता है इसके अलावा पके फलों को सुखाकर उसकी गोटी से आटा बनाया जाता है जिससे बने व्यंजनों का उपयोग उपवास में किया जाता है। सिंघाड़े में मुख्य पोषक तत्व प्रोटीन ४.७ प्रतिशत एवं शर्करा २३.३ प्रतिशत होते हैं इसके अलावा इसमें कैल्शियम, फास्फोरस, लोहा, पोटेशियम, तांबा, मैगनीज, जिंक एवं विटामिन सी भी सूक्ष्म मात्रा में उपलब्ध होते हैं।

सामान्यतः तालाबों में होने वाले सिंघाड़े की फसल की खेती उन्नत कृषि तकनीक अपनाकर निचले खेतों जिनमें पानी का भराव जुलाई से नवम्बर - दिसम्बर माह तक लगभग एक से दो फीट तक होता है आसानी से की जा सकती है। इस तकनीक को अपनाकर खासकर धान के क्षेत्र जैसे बालाघाट, सिवनी आदि के कृषक निचले खेतों में अपनी उपज में प्रति एकड़ डेढ़ गुना वृद्धि कर सकते हैं।

सिंघाड़ा तालाबों में पैदा होने वाली एक नगदी फसल है। मध्यप्रदेश में सिंघाड़े की खेती लगभग ६००० हेक्टेयर में किया जाता है। सिंघाड़े के कच्चे व ताजे फलों का ही उपयोग मुख्यतः किया जाता है इसके अलावा पके फलों को सुखाकर उसकी गोटी से आटा बनाया जाता है जिससे बने व्यंजनों का उपयोग उपवास में किया जाता है। सिंघाड़े में मुख्य पोषक तत्व प्रोटीन ४.७ प्रतिशत एवं शर्करा २३.३ प्रतिशत होते हैं इसके अलावा इसमें कैल्शियम, फास्फोरस, लोहा, पोटेशियम, तांबा, मैगनीज, जिंक एवं विटामिन सी भी सूक्ष्म मात्रा में उपलब्ध होते हैं। सामान्यतः तालाबों में होने वाले सिंघाड़े की फसल की खेती उन्नत कृषि तकनीक अपनाकर निचले खेतों जिनमें पानी का भराव जुलाई से नवम्बर - दिसम्बर माह तक लगभग एक से दो फीट तक होता है आसानी से की जा सकती है।

भूमि एवं जलवायुः

सिंघाड़े की खेती उष्ण कटिबन्धीय जलवायु वाल ` क्षेत्रों में की जाती है। इसकी खेती के लिए खेत में एक से दो फीट पानी की आवश्यकता होती है। इसकी खेती स्थिर जल वाले खेतों में की जाती है साथ ही साथ खेतों में ह्युमस की मात्रा अच्छी होनी चाहिये। सिंघाड़ा उत्पादन हेतु दोमट या बलुई दोमट मिट्टी जिसका पी. एच. ६.० से ७.५ तक होता है अधिक उपयुक्त होती है।

सिंघाड़ा किस्मेंः

सिंघाड़े में कोई उन्नत जाति विकसित नहीं की गई हैं परन्तु जो किस्म प्रचलित है उनमें जल्द पकने वाल ी जातियां हरीरा गठुआ, लाल गठुआ, कटीला, ल ाल चिकनी गुलरी, किस्मों की पहली तुड़ाई रोपाई के १२० - १३० दिन में होती है। इसी प्रकार देर से पकने वाली किस्में - करिया हरीरा, गुलरा हरीरा, गपाचा में पहली तुड़ाई १५० से १६० दिनों में होती है।

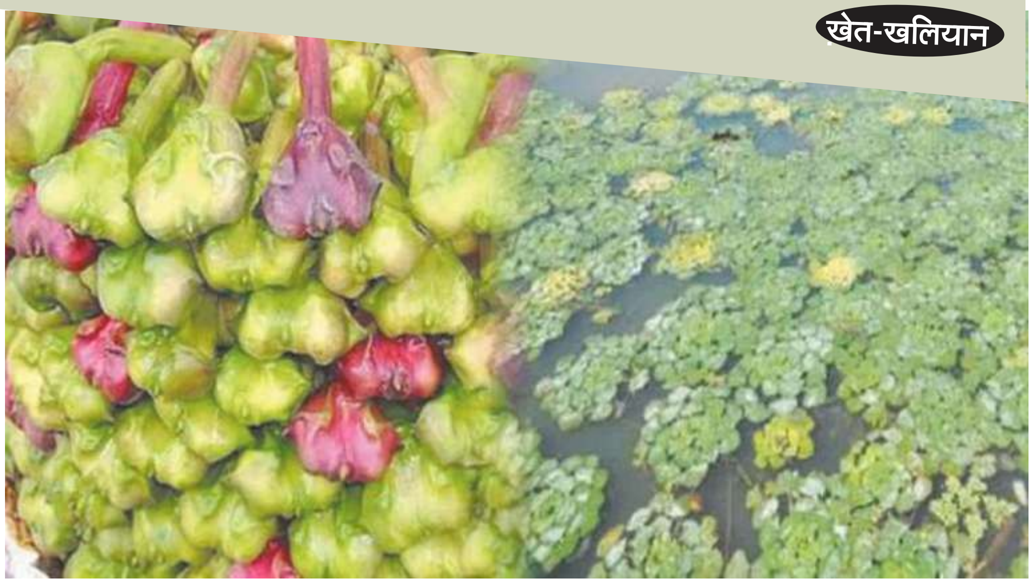

नर्सरीः

सिंघाड़े की नर्सरी तैयार करने हेतु दूसरी तुड़ाई के स्वस्थ पके फलों का बीज हेतु चयन करके उन्हे जनवरी माह तक पानी में डुबाकर रखा जाता है।

अंकुरण के पहले फरवरी के द्वितीय सप्ताह में इन फलों को सुरक्षित स्थान में गहरे पानी में तालाब या टांकें में डाल दिये जाते है। मार्च माह में फलों से बेल निकलने लगती है व लगभग एक माह में १.५ से २ मीटर तक लम्बी हो जाती है। इन बेलों से एक मीटर लंबी बेलों को तोड़कर अप्रैल से जून तक रोपणी का फैलाव खरपतवार रहित तालाब में किया जाता है। रोपणी लगाने हेतु प्रति हेक्टेयर ३०० किलोग्राम सुपर फॉ

स्फेट, ६० किलोग्राम पोटाश व २० किलोग्राम यूरिया तालाब में उपयोग की जाती है साथ ही साथ रोपणी को कीट एवं रोगों से सुरक्षित रखना अति आवश्यक है। कीट एवं रोगों की रोकथाम हेतु आवश्यकता पड़ने पर उचित कीटनाशी एवं कवकनाशी का उपयोग करें।

फसल रोपाईः

फलों की तुडाईः जल्द पकने वाली प्रजातियों की पहली तुड़ाई अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में एवं अंतिम तुड़ाई २० से ३० दिसम्बर की जाती है। इसी प्रकार देर पकने वाली प्रजातियों की प्रथम तुड़ाई नवम्बर के प्रथम सप्ताह में एवं अंतिम तुड़ाई जनवरी के अंतिम सप्ताह तक की जाती हैं। सिंघाड़ा फसल में कुल ४ तुड़ाई की जाती है।

तुड़ाई पूर्ण रूप से विकसित पके फलों की ही करना चाहिए, कच्चे फलों की तुड़ाई करने पर गोटी छोटी बनती है एवं उपज भी कम प्राप्त है।

फलों की छिलाईः

जिस खेत में रोपाई करनी हो उसमें जुलाई के प्रथम सप्ताह में कीचड़ मचा लिया जाता है।

रोपाई के पूर्व या एक सप्ताह के अंदर ३०० किलोग्राम सुपर फॉस्फेट ६० किलोग्राम पोटाश व २० किलोग्राम यूरिया प्रति हेक्टेयर मिलाएं साथ ही गोबर की सड़ी खाद का उपयोग अवश्य करें।

इसके उपरांत रोपाई के पूर्व रोपणी को इमीडाक्लोप्रिड १७.८ प्रतिशत एस. एल. के घोल में १५ मिनट तक डुबोकर उपचारित किया जाता है।

उपचारित बेल एक मीटर लंबी २-३ बेलों की गठान लगाकर १३१ मीटर के अन्तराल पर अंगूठे की सहायता से कीचड़ में गड़ाकर किया जाता है।

रोपाई का कार्य जुलाई के प्रथम सप्ताह से १५ अगस्त के पहले तक किया जा सकता है।

खरपतवार नियंत्रण रोपाई पूर्व व मुख्य फसल में समय - समय पर करते रहना चाहिये।

कीट एवं रोगों पर सतत निगरानी रखें, प्रारंभिक अवस्था में प्रकोपित पत्तियों को तोड़कर नष्ट करें ताकि कीट एवं रोग नाशियों का उपयोग न करना पड़े। यदि आवश्यकता हो तो उचित दवा का उपयोग करें।

सिंघाड़ा फल जो अच्छी तरह से सूखे हो उनको सरोते या सिंघाड़ा छिलाई मशीन द्वारा छिला जाता है। इसके उपरांत एक से दो दिनों तक सूर्य की रोशनी में सुखाकर मोटी पॉलीथिन बैग में रखकर पैक कर दिया जाता है।

उपजः

हरे फल ८० से १०० क्विंटल/ हेक्टेयर,

सूखी गोटी - १७ से २० क्विंटल/ हेक्टेयर

कुल लागत - लगभग ४५००० रू./ हे.

कुल प्राप्ति लगभग - १५०००० रू./ हे.

शुद्ध लाभ - १०५००० रू./ हेक्टेयर।

फलों को सुखानाः

पूर्ण रूप से पके फलों की गोटी बनाने हेतु सुखाया जाता है। फलों को पक्के खलिहान या पॉलीथिन में सुखाना चाहिए। फलों को लगभग १५ दिन सुखाया जाता है एवं २ सें ४ दिन के अंतराल पर फलों की उलट पलट की जाती है ताकि फल पूर्ण रूप से सूख सकें। कांटे वाली सिंघाड़े की जगह बिना कांटे वाली किस्मों का चुनाव खेती के लिए करें, ये किस्में अधिक उत्पादन देती है साथ ही इनकी गोटियों का आकार भी बड़ा होता है। एवं खेतों में इसकी तुड़ाई आसानी से की जा सकती है।

सिंघाड़े के कीटः

सिंघाड़े में मुख्यतः सिंघाड़ा भृंग एवं लाल खजूरा नामक कीट का प्रकोप होता है जिससे फसल में २५ - ४० प्रतिशत तक उत्पादन कम हो जाता है। इसके अल वा नीला भृंग, माहू एवं घुन कीट का प्रकोप भी पाया गया है।

सिंघाड़े के रोगः

सिंघाड़ा फसल में मुख्यतः लोहिया व दहिया रोग का प्रकोप होता है। इन रोगों के कारण फसल कमजोर होती है साथ ही साथ फल छोटे व कम सख्या में आतें हैं।

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।
सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं।
प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें, साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।
आप अपनी रचना ई-मेल एवं वॉटसअप *(whatsup)* द्वारा भेज सकते हैं।
स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा।
किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके। रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: (W) 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
www.swarnimumbai.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	50,000/-
2.	Back inside full page	Colour	40,000/-
3.	Inside full page	Colour	25,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount

1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532